हिंदी

बालभारती

चौथी कक्षा

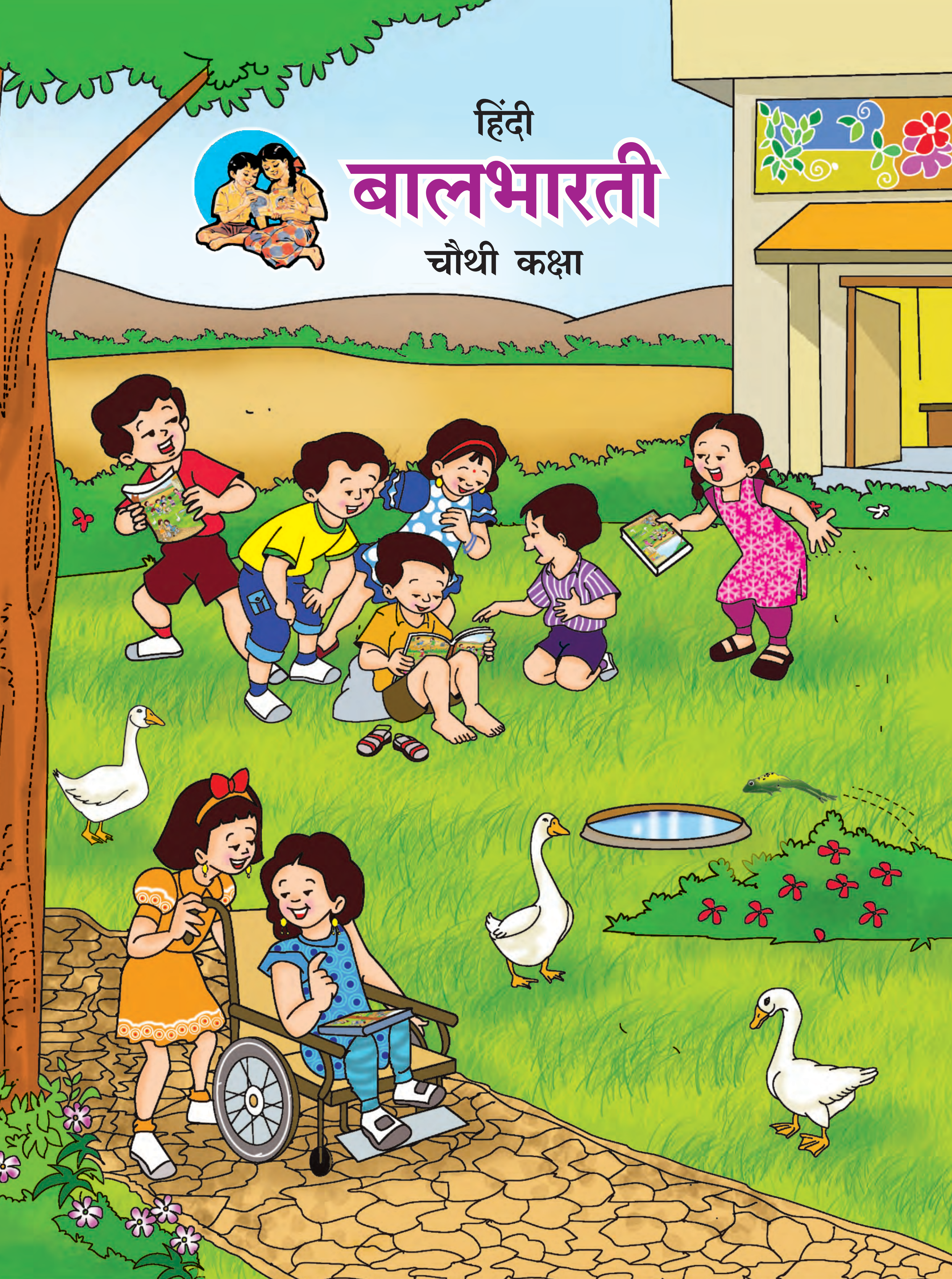

शिक्षा विभाग का स्वीकृति क्रमांक : प्राशिसं /२०१४-१५/६४५७/ मंजूरी/ ड-५०५/ २४४१ दिनांक :- २४/०४/२०१४

हिंदी
बालभारती
चौथी कक्षा

मेरा नाम ------------ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

प्रथमावृत्ति : २०१४
तीसरा पुनर्मुद्रण : २०१७

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है । इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

हिंदी भाषा समिति

डॉ. चंद्रदेव कवडे, अध्यक्ष
डॉ. हेमचंद्र वैद्‌य, सदस्य
डॉ. साधना शाह, सदस्य
प्रा. मुल्ला मैनोद्‌दीन, सदस्य
श्री रामहित यादव, सदस्य
श्री कौशल पांडेय, सदस्य
श्री रामनयन दुबे, सदस्य
डॉ. अलका पोतदार, सदस्य-सचिव

हिंदी भाषा कार्यगट

डॉ. रामजी तिवारी
डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
श्री संजय भारद्‌वाज
प्रा. अनुया दळवी
डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र
डॉ. दयानंद तिवारी
श्री अनुराग त्रिपाठी
श्री राजेंद्रप्रसाद तिवारी
श्री उमाकांत त्रिपाठी
प्रा. निशा बाहेकर
डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर
डॉ. आशा मिश्रा
श्रीमती मंगला पवार
श्री नरसिंह तिवारी

प्रकाशक

विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक, पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी,
मुंबई - ४०००२५

संयोजन डॉ. सौ. अलका पोतदार, विशेषाधिकारी, हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक, हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : सुहास जगताप
चित्रांकन : राजेश लवळेकर, लीना माणकीकर, प्राजक्ता मोरे

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री सचिन मेहता, निर्मिति अधिकारी
श्री नितीन वाणी, निर्मिति सहायक

अक्षरांकन : भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम क्रीमवोव्ह
मुद्रणादेश : N/PB/2017-18/30,000
मुद्रक : M/S. GANESH PRINTERS, KOLHAPUR

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है। सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं।

मुझे अपने देश से प्यार है। अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी। उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

प्रस्तावना

'बच्चों का निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षाधिकार अधिनियम २००९' और 'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप -२००५' को दृष्टिगत रखते हुए राज्य की 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या-२०१२' तैयार की गई है । पाठ्यपुस्तक मंडळ शैक्षणिक वर्ष २०१३-१४ से शासनमान्य पाठ्यचर्या पर आधारित हिंदी की पहली से आठवीं कक्षा तक हिंदी बालभारती पाठ्यपुस्तक की नवीन शृंखला क्रमशः प्रकाशित कर रहा है । इस शृखंला में चौथी कक्षा की यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें विशेष हर्ष हो रहा है ।

आकलन, निरीक्षण, भाषण-संभाषण के रूप में बच्चों की भाषाशिक्षा का अनौपचारिक शुभारंभ उनके परिसर और प्रसार माध्यमों द्‌वारा होता है । पाठशाला में आने के उपरांत उनकी औपचारिक शिक्षा का प्रारंभ होता है । चौथी कक्षा के विद्‌यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया सहज-सरल बनाने के लिए पाठ्यपुस्तक का आकार बड़ा और स्वरूप चित्रमय बनाया गया है । पुस्तक की संरचना करते समय इस बात पर विशेष ध्यान रखा गया है कि यह पुस्तक चित्ताकर्षक, चित्रमय, कृतिप्रधान और बालस्नेही हो ।

विद्‌यार्थियों की आयु, स्वाभाविक अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए उनकी भाषाशिक्षा मनोरंजक एवं आनंददायी हो इस हेतु पाठ्यपुस्तक में सहज गुनगुनाने योग्य गीतों, कविताओं का समावेश किया गया है । इसी प्रकार हास्य, चित्रकथा, चित्रवाचन और रंगीन चित्रों का सजगता से उपयोग किया गया है । पाठ्यपुस्तक में आए विषयों को खेल, कृति के रूप में समाविष्ट किया गया है । इन घटकों का अध्ययन-अध्यापन करते हुए शिक्षक इस तरह के अध्ययन-अनुभव को समाहित करें जिससे शाला-बाह्य जगत एवं दैनिक व्यवहार में सामंजस्य स्थापित हो सके ।

शिक्षक एवं अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए 'दो शब्द' में पाठ्यपुस्तक की संरचना की पार्श्वभूमि पर विस्तृत चर्चा करते हुए पाठों के संदर्भ में आवश्यक सूचनाएँ प्रत्येक पृष्ठ पर दी गई हैं । अध्ययन-अध्यापन की प्रकिया में ये सूचनाएँ निश्चित ही उपयोगी होंगी ।

हिंदी भाषा समिति, कार्यगट और चित्रकारों के निष्ठापूर्ण परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है । पुस्तक को दोषरहित एवं स्तरीय बनाने के लिए राज्य के विविध विभागों से आमंत्रित प्राथमिक शिक्षकों, विशेषज्ञों द्‌वारा पुस्तक का समीक्षण कराया गया है । समीक्षकों की सूचनाओं और अभिप्रायों को दृष्टि में रखकर हिंदी भाषा समिति ने पुस्तक को अंतिम रूप दिया है ।

'मंडळ' हिंदी भाषा समिति, कार्यगट, समीक्षकों, विशेषज्ञों, चित्रकारों, भाषाविशेषज्ञ डॉ. प्रमोद शुक्ल के प्रति हृदय से आभारी है । आशा है कि विद्‌यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

(चं. रा. बोरकर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

पुणे
दिनांक :- २२ अप्रैल २०१४
चैत्र, कृष्ण अष्टमी, शके १९३६

दो शब्द

यह पाठ्यपुस्तक विद्‌यार्थियों के पूर्व ज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है । पाठ्यपुस्तक को स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु इसे चार विभागों में विभाजित करते हुए इसका 'सरल से कठिन' क्रम रखा गया है । यहाँ विद्‌यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर श्रवण, भाषण- संभाषण, वाचन, लेखन के भाषाई मूल कौशलों के साथ व्यावहारिक सृजन पर विशेष बल दिया गया है । इसमें स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करने वाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

पाठ्यपुस्तक में क्रमिक एवं श्रेणीबद्‌ध कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, स्वाध्याय और उपक्रम भी दिए गए हैं । विद्‌यार्थियों के लिए लयात्मक गीत, बालगीत, कहानी, संवाद आदि विषयों के साथ-साथ चित्रवाचन, सुनो और गाओ, दोहराओ और बोलो, अनुवाचन, पढ़ो, करो, पढ़ो और लिखो, बताओ और कृति करो, आकलन, मौन-मुखर वाचन, अनुलेखन, सुलेखन, श्रुतलेखन आदि कृतियाँ भी दी गई हैं । सूचनानुसार इनका सतत अभ्यास अनिवार्य है ।

शिक्षकों एवं अभिभावकों से यह अपेक्षा है कि अध्ययन-अनुभव देने के पहले पाठ्यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेत एवं दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्‌यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो','पढ़ो' की पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराएँ । आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक में दिए गए शब्दार्थ का उपयोग करें । । लयात्मक, ध्वन्यात्मक शब्दों का अपेक्षित उच्चारण एवं दृढ़ीकरण करना आवश्यक है । इस पाठ्यपुस्तक में लोक प्रचलित तद्‌भव शब्दों का प्रयोग किया गया है । विद्‌यार्थी इनसे सहज रूप में परिचित और अभ्यस्त होते हैं । इनके माध्यम से मानक शब्दावली का अभ्यास करना सरल हो जाता है । अतः मानक हिंदी का विशेष अभ्यास आवश्यक है ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक के माध्यम से मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास का अवसर विद्‌यार्थियों को प्रदान करें । पाठ्यसामग्री का मूल्यमापन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है । अतः विद्‌यार्थी परीक्षा के तनाव से मुक्त रहेंगे । पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं-श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन और व्यावहारिक सृजन का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' अपेक्षित है ।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में पाठ्यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करेंगे और हिंदी विषय के प्रति विद्‌यार्थियों में अभिरुचि और आत्मीयता की भावना जागृत करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग देंगे ।

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

क्र.	पाठ	पृष्ठ क्र.
✻	पौधघर	१
१.	पाठशाला	२,३
२.	प्रार्थना	४
३.	संगठन	६
४.	जायकवाड़ी बाँध	८
५.	आईना	१०
६.	चाँद और धरती	१२
७.	असम की बेटी	१४
८.	व्यायाम	१५
९.	समझदारी	१६
१०.	समानता	१८
✻	पुनरावर्तन	२०

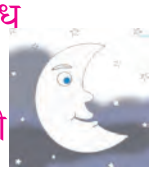

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ	पृष्ठ क्र.
१.	नृत्य	२२, २३
२.	सीख	२४
३.	घंटाकरण	२६
४.	ऐसे-ऐसे	२८
५.	पेटूराम	३०
६.	मिठाइयों का सम्मेलन	३२
७.	मेरे अपने	३४
८.	पतंग	३५
९.	मैं दीपक हूँ	३६
१०.	नकल	३८
✻	पुनरावर्तन	४०

तीसरी इकाई

क्र.	पाठ	पृष्ठ क्र.
१.	बाजार	४२, ४३
२.	नींद हमें तब आती है	४४
३.	पुरखों की निशानी	४६
४.	स्वस्थ तन-स्वस्थ मन	४८
५.	मिलकर बनें	५०
६.	नई अंत्याक्षरी	५२
७.	क्या तुम जानते हो ?	५४
८.	नन्हीं जादूगरनी	५५
९.	सच्चा साथी नीम	५६
१०.	समुच्चित चित्रकला (कोलाज)	५८
११.	मीठे बोल	६०
✻	पुनरावर्तन	६२

चौथी इकाई

क्र.	पाठ	पृष्ठ क्र.
१.	संचार के साधन	६४, ६५
२.	प्यारा भारत देश हमारा	६६
३.	तीन मूर्तियाँ	६८
४.	बचत	७०
५.	कठपुतली	७२
६.	आदमी और मशीन	७४
७.	बूझो तो जानें !	७६
८.	ज्ञान-विज्ञान	७७
९.	पृथ्वी	७८
१०.	छोटा परिवार	८०
११.	मार्ग	८२
✻	पुनरावर्तन	८४
✻	शब्दार्थ	८५

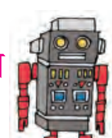

● पूर्वानुभव – पहचानो और बताओ :

❋ पौधघर

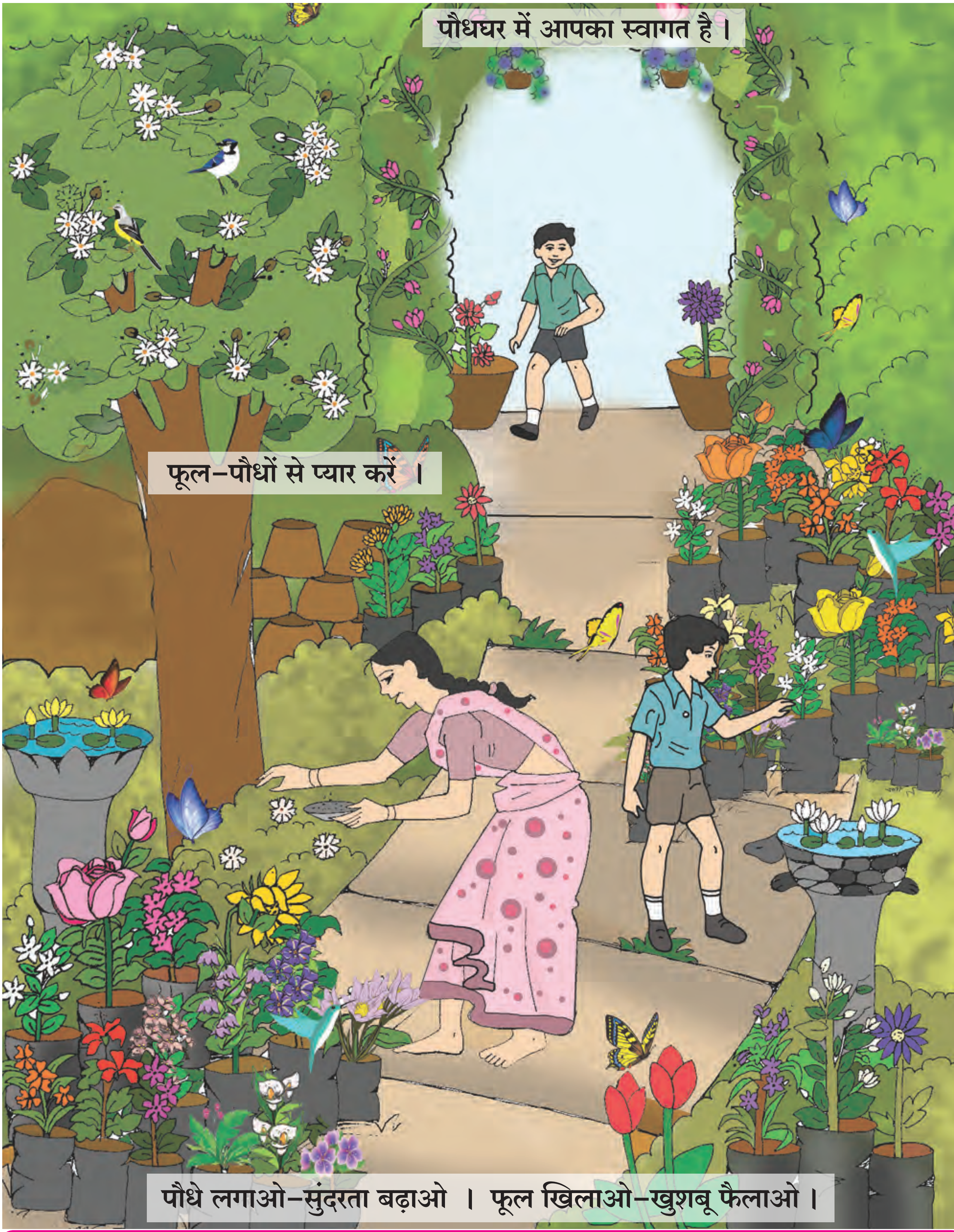

❑ चित्रों का निरीक्षण कराएँ और उनपर चर्चा करें । विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें और ऊपर आए वाक्यों पर प्रश्न पूछें । उन्हें किसी पौधघर में जाने और वहाँ के अपने अनुभव सुनाने के लिए कहें । फूलों के नामों और उनके रंगों की सूची बनवाएँ ।

● चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :

१. पाठशाला

जहाँ चलते उपक्रम, वही पाठशाला सर्वोत्तम।

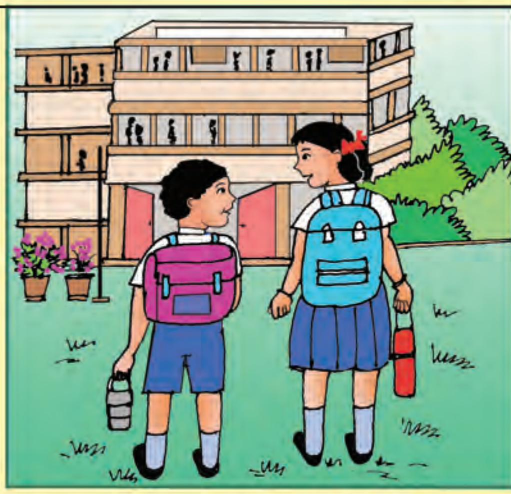

पाठशाला ज्ञान का मंदिर है ।

आदर्श पाठशाला, उत्तम पाठशाला ।

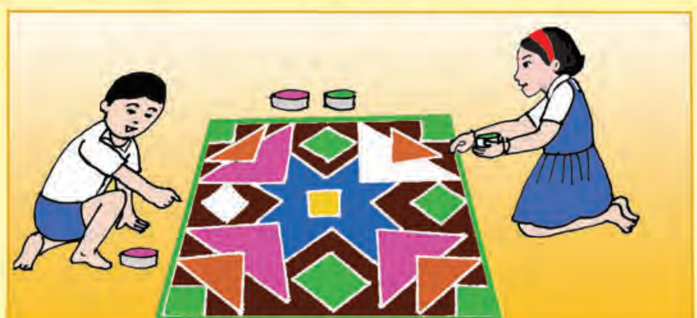

पाठशाला हमेशा स्वच्छ रखें ।

पाठशाला में सजावट की उजास ।
तन, मन, बुद्‌धि का हो विकास ।

❑ पाठशाला में क्या-क्या होना चाहिए, विद्‌यार्थियों से पूछें । विद्‌यार्थियों से उनकी पाठशाला के संबंध में दो-दो वाक्य कहलवाएँ । चित्र के वाक्यों को समझाएँ और उनपर चर्चा करें । उन्हें घर के किसी कार्यक्रम के बारे में पाठशाला में बोलने हेतु प्रेरित करें ।

पहली इकाई

जहाँ स्वच्छता का वास, वहाँ स्वास्थ्य का निवास ।

पुस्तकालय

उत्तम पाठ
पढ़ाती पाठशाला ।
उन्नति की राह
दिखाती शाला ।

प्रयोगशाला

कतार में चलें ।
अनुशासित रहें ।

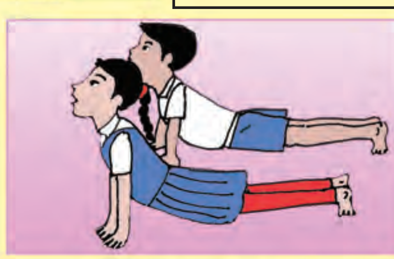

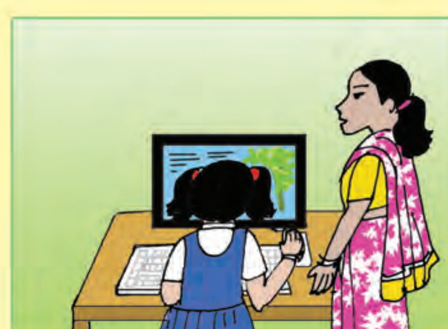

ना कहो तेरी–मेरी या इसकी–उसकी ।
पाठशाला है हमारी, कहो हम सबकी ।

❑ विद्‌यार्थियों से चित्रों के वाक्यों पर चर्चा करने के लिए कहें । अन्य वाक्य सुनाएँ और दोहरवाएँ । पाठशाला में होने वाले कार्यक्रमों के बारे में कहलवाएँ । उन्हें इनमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें । घर और परिसर की स्वच्छता पर चर्चा कराएँ ।

● श्रवण – सुनो और गाओ :

२. प्रार्थना

सब सुखी हों, सब निरोगी
दुख मिटे संसार से,
सब भला देखें, यही है
प्रार्थना हर द्‌वार से ।

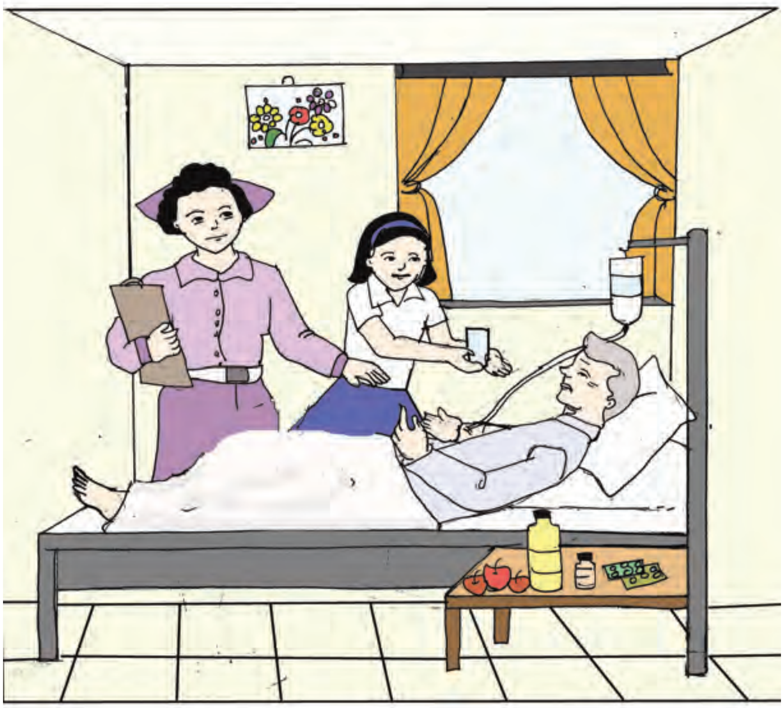

दूसरों का कष्ट हमको
हर समय अपना लगे,
हर दुखी को दें सहारा
भावना ऐसी जगे ।
धर्म सेवा हो हमारा
सुख मिले उपकार से,
सब भला देखें, यही है
प्रार्थना हर द्‌वार से ।

काम आएँ हम किसी के
रोज यह अवसर मिले,
बुराई से बचते रहें हम
स्नेह जीवन भर मिले,
एक भी चेहरा न भीगे
आँसुओं की धार से,
सब भला देखें, यही है
प्रार्थना हर द्‌वार से ।

– *शंभुप्रसाद श्रीवास्तव*

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें । विद्‌यार्थियों से सामूहिक तथा गुट में सस्वर, साभिनय पाठ कराएँ । कविता में किन बातों के लिए प्रार्थना की गई है, चर्चा कराएँ । विद्‌यार्थियों द्‌वारा किया गया भलाई का कोई काम बताने के लिए कहें ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – प्रत्येक इकाई के स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्‌यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्‌यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।

स्वाध्याय

१. सुने हुए दोहे/प्रार्थनाएँ सुनाओ ।

२. दिए हुए शब्दों को वर्णमाला के क्रम से लगाओ :
औटाना, एकाग्रता, अलि, ऑक्टोपस, ईमान, आँख, आचार्य, इल्ली, उत्तम, अंक, ऊर्जा, ऋतु, ऐहिक, ओला, अतः ।

३. इस कविता से अपनी पसंद की पाँच पंक्तियाँ पढ़ो ।

४. एक शब्द में उत्तर लिखो :
(क) सब कैसे हों ?
(ख) दूसरों का कष्ट हमको हर समय कैसा लगे ?
(ग) हमारा धर्म क्या होना चाहिए ?
(घ) हम किससे बचते रहें ?
(ङ) सबको जीवन भर क्या मिलता रहे ?

५. चित्र देखकर पोशाकें पहचानो और उनके नाम बताओ :

६. तुम्हारा सहपाठी खेल-कूद प्रतियोगिता में प्रथम आया है जबकि तुम्हें कोई पुरस्कार नहीं मिला । ऐसे समय तुम्हारे मन में क्या विचार आते हैं, बताओ ।

● श्रवण – सुनो और दोहराओ :

३. संगठन

पता नहीं क्यों, एक बार चिड़िया के घोंसले को इस बात का घमंड हो गया कि वह चिड़िया और उसके अंडों को शरण देता है । गरमी–सरदी–बरसात में उनकी रक्षा करता है, उसी के कारण चिड़िया और उसके बच्चे तीनों मौसम में आराम से रहते हैं । शाम को जब चिड़िया लौटी तो घोंसले ने बहुत अकड़कर कहा, "तू और तेरे बच्चे मेरे ही दम पर यहाँ मजे से रहते हैं । अगर मैं अपने तिनके इधर–उधर बिखेर दूँ तो तुम सब बेघर हो जाओगे । दर–दर की ठोकरें खाते फिरोगे । तुम्हें सिर छिपाने के लिए जगह भी न मिलेगी ।"

चिड़िया मुसकाने लगी और समझाती हुई बोली, "भाई घोंसले, बात तो तू ठीक कहता है लेकिन एक बात तू भूल गया । तू अगर अपने तिनके इधर–उधर बिखेर देगा तो स्वयं मिट जाएगा । जिन तिनकों से तू बना है, ये तो इधर–उधर ही बिखरे हुए पड़े थे । मैंने ही तो एक–एक तिनका बड़े जतन से चुना और तुझे बनाया । मेरे ही कारण तेरा अस्तित्व इस पेड़ पर है । अगर मैं तुझे न बनाती तो तेरा यह रूप न होता । तू इस समय तिनकों के रूप में बिखरा होता । देख भाई, घमंड न कर । शक्ति बिखरने में नहीं, इकट्ठा होने में है ।"

घोंसले का सिर शर्म से झुक गया । उस दिन से उसने कोई विरोध नहीं किया । वे सब फिर मजे से रहने लगे–'संगठन की भावना' से ।

– डॉ. सत्येंद्र शरत

❑ उचित आरोह–अवरोह, उच्चारण के साथ कहानी सुनाएँ और अनुवाचन कराएँ । विद्यार्थियों को मिलकर रहने और दूसरों की भावना का आदर करने के लिए प्रेरित करें । विद्यार्थियों को उपरोक्त कहानी उनके शब्दों में सुनाने हेतु प्रोत्साहित करें ।

स्वाध्याय

**१.	कोई हास्य कहानी सुनाओ ।**

**२.	उत्तर दो :**

(क) चिड़िया के घोंसले को किस बात का घमंड हो गया ?

(ख) घोंसले ने अकड़कर क्या कहा ?

(ग) चिड़िया ने घोंसले को कैसे समझाया ?

(घ) शक्ति किसमें है ?

(ङ) मजे से रहने के लिए किस भावना का होना आवश्यक है ?

**३.	कोई एक विज्ञान कथा पढ़ो ।**

**४.	सही (✓) या गलत (✕) चिह्न लगाओ :**

(च) घोंसला चिड़िया और उसके बच्चों को शरण देता है ।	(　　)

(छ) चिड़िया गुस्से में जोर से बोली ।	(　　)

(ज) अगर मैं तुझे न बनाती तो तेरा यह रूप होता ।	(　　)

(झ) उस दिन से उसने कोई विरोध नहीं किया ।	(　　)

(ञ) वे सब फिर दुखी होकर रहने लगे ।	(　　)

**५.	चित्र देखकर पक्षियों को पहचानो और उनके नाम बताओ :**

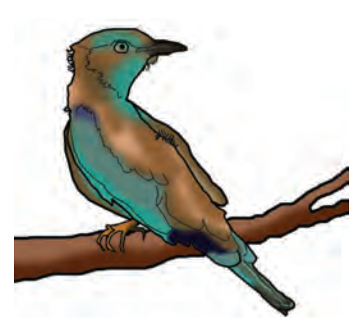

**६.	कोई पाठ तुम बार-बार पढ़ते हो फिर भी भूल जाते हो, सोचो और इसका कारण बताओ ।**

● श्रवण – सुनो और बोलो :

४. जायकवाड़ी बाँध

उस दिन पाठशाला के अंतिम कालांश में कक्षा में शिक्षक ने विद्‌यार्थियों से कहा, "विद्‌यार्थियो ! पिछले सप्ताह हम सैर के लिए गए थे । उस सैर का हमने आनंद उठाया । कुछ विद्‌यार्थियों ने इसपर सुंदर निबंध भी लिखे हैं । मनीष का निबंध सबसे अच्छा है । मनीष, तुम अपना निबंध सबको सुनाओ ।" मनीष पढ़ने लगा –

हमने 'जायकवाड़ी बाँध' की सैर की । हम पचपन विद्‌यार्थी अध्यापकों के साथ नांदेड़ से रेल द्‌वारा औरंगाबाद गए । रेलगाड़ी की यात्रा बड़ी ही आनंददायी रही । खिड़की से बाहर सुहावने दृश्य देखकर हम सभी प्रसन्न हुए । जायकवाड़ी बाँध का निर्माण पैठण में किया गया है । वहाँ जाने के लिए रेलमार्ग नहीं है । हम औरंगाबाद से पैठण तक बस से गए ।

हमने जायकवाड़ी का भव्य बाँध देखा । यह महाराष्ट्र की सबसे बड़ी जल परियोजना है । इसे गोदावरी नदी पर बनाया गया है । मिट्‌टी से बना यह एक मजबूत बाँध है । इसमें २७ दरवाजे हैं । इस बाँध के विशाल जलाशय को 'नाथसागर' कहते हैं । जायकवाड़ी परियोजना से विपुल मात्रा में बिजली का उत्पादन किया जाता है । इस बाँध के कारण मराठवाड़ा के कई जिलों को खेती के लिए जल, पेयजल, बिजली की सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं ।

जलाशय के समीप ज्ञानेश्वर उद्‌यान है । यह मैसूर के वृंदावन उद्‌यान के समान सुंदर है । संध्या के समय ध्वनि एवं प्रकाश के साथ फव्वारों का आकर्षक दृश्य बस देखते ही बनता है । यहाँ से कुछ दूरी पर अजंता-एलोरा की गुफाएँ, दौलताबाद का किला जैसे अनेक दर्शनीय स्थान भी हैं । पैठण की साड़ियाँ देश भर में 'पैठणी' नाम से प्रसिद्‌ध हैं । रात की गाड़ी से हम लौटकर सुबह नांदेड़ वापस आ गए । निबंध सुनकर सभी ने तालियाँ बजाईं ।

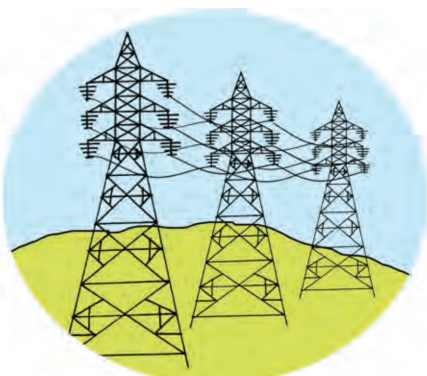

❑ विद्‌यार्थियों से पाठ का मौन और मुखर वाचन करवाएँ । पाठ पर प्रश्न पूछें और उन्हें आपस में प्रश्न पूछने के लिए कहें । किसी अन्य बाँध की जानकारी प्राप्त करके उसपर निबंध लिखने हेतु प्रेरित करें । बाँध से होने वाले लाभ के बारे में चर्चा करें ।

स्वाध्याय

१. **सुनी हुई पहेलियाँ सुनाओ ।**

२. **पाठशाला में गणतंत्र दिवस कैसे मनाते हैं, बताओ ।**

३. **किसी महिला खिलाड़ी की जीवनी पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) सबसे अच्छा निबंध किसका है ?

(ख) विद्‌यार्थी रेल द्‌वारा कहाँ गए ?

(ग) जायकवाड़ी बाँध के कारण किसे और कौन-सी सुविधाएँ प्राप्त हुईं हैं ?

(घ) ज्ञानेश्वर उद्‌यान की क्या विशेषता है ?

(ङ) जायकवाड़ी के आस-पास अन्य दर्शनीय स्थान कौन-से हैं ?

५. **चित्र देखकर पुल कौन-से प्रकार का है, बताओ :**

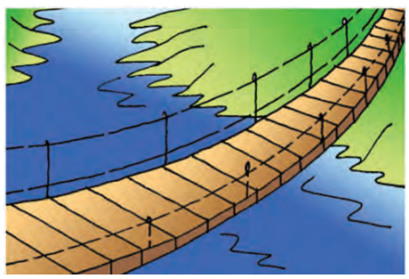
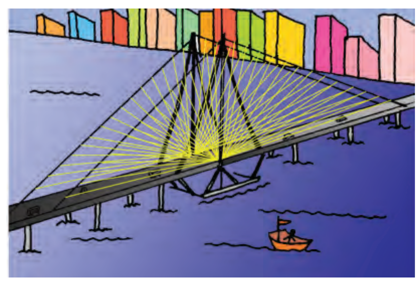

६. **ध्वनि प्रदूषण न हो; इसके लिए तुम क्या करोगे, क्या नहीं करोगे बताओ :**

(च) दूरदर्शन की आवाज धीमी रखोगे ।

(छ) रेडियो की आवाज जोर से रखोगे ।

(ज) लाऊडस्पीकर देर रात तक जोर से बजाओगे ।

(झ) गाड़ी के हॉर्न का उपयोग आवश्यकतानुसार करोगे ।

(ञ) चिल्ला-चिल्लाकर बातें करोगे ।

● वर्णमाला – अनुवाचन और अनुलेखन करो :

५. आईना

❑ विद्‌यार्थियों को वर्ण दिखाकर उचित क्रम से बताने के लिए कहें । इनको पहचानने के लिए आईने का उपयोग करें क्योंकि ये वर्ण उलटे दिए गए हैं । वर्णों का अनुलेखन कराएँ । प्रत्येक वर्ण प्रारंभ, बीच और अंत में आता है, ऐसे पाँच-पाँच शब्दों की सूची बनवाएँ ।

- ध्यान दें कि प्रत्येक विद्यार्थी को पूरी वर्णमाला कंठस्थ हो । वर्णमाला एक-दूसरे को सुनाने के लिए कहें । उचित उच्चारण का अभ्यास करवाएँ । आवश्यकतानुसार त्रुटियों में सुधार करें । विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करवाएँ ।

● भाषा प्रयोग – पढ़ो, समझो और लिखो :

६. चाँद और धरती

एक दिन बोला चाँद धरा से,
“तुम हो मेरी मात ।
दूर भले रहता हूँ तुमसे,
किंतु तुम्हारा तात ।
किया कौन अपराध है मैंने,
जो मुझसे तुम दूर ।
करूँ प्रदक्षिणा माता फिर भी,
मिलने से मजबूर ।”
पूनम से चलते–चलते
आई मावस की रात ।
विविध ‘कला’ से छनते–छनते
थकित हो गया गात ।

❑ कविता का सस्वर वाचन कर विद्यार्थियों से दोहरवाएँ । उन्हें मौन वाचन के लिए समय देकर कविता में आए विरामचिह्न बताने के लिए प्रेरित करें । चंद्रमा के मानवीकरण को समझाएँ । ‘मेला देखने के प्रसंग’ पर विद्यार्थियों से माँ–बेटे के बीच संवाद कराएँ । चंद्रमा की विविध कलाओं के निरीक्षण हेतु प्रेरित करें । प्रतिप्रदा से पूर्णिमा/अमावस्या तक की तिथियों के नाम कहलवाएँ ।

बोली धरा, “पुत्र तुम सुंदर,
मेरे प्यारे चाँद ।
तुम-सा नहीं प्रिय कोई मुझको,
जग से न्यारे चाँद ।
तुम्हें देख मुसकाती हूँ मैं,
खिल जाता मुख मेरा ।
फिर उदास हो जाती हूँ जब,
दूर तुम्हारा डेरा ।
परोपकार के लिए जगत में,
निभा रहे हम धर्म ।
दूर रहें या पास दुलारे
सदा करें सत्कर्म ।”

– डॉ. रमेश गुप्त ‘मिलन’

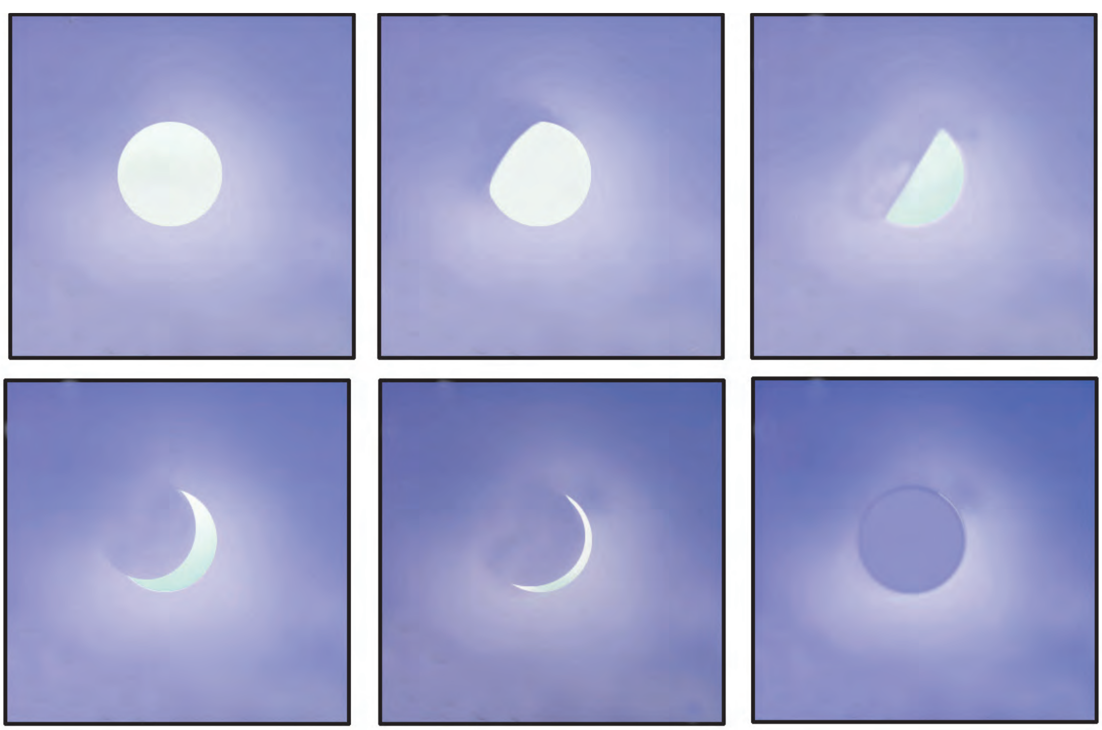

❑ विरामचिह्नों के अनुसार वाचन, लेखन करवाएँ । नए पढ़े हुए विरामचिह्नों (‘ ’ शब्दचिह्न, “ ” उद्धरण चिह्न) के प्रयोग को समझाएँ । विरामचिह्नरहित परिच्छेद देकर इन चिह्नों को लगाने का अभ्यास कराएँ । विरामचिह्नों के नाम कहलवाएँ ।

● आकलन – अंतर बताओ :

७. असम की बेटी

❑ ऊपर बने चित्रों का ध्यान से निरीक्षण करने के लिए कहें । चित्रों में १० अंतर दिए गए हैं, विद्‌यार्थियों से उन्हें ढूँढ़ने के लिए कहें ।

● शारीरिक शिक्षण – सुनो, समझो और करो :

८. व्यायाम

अपने दोनों पैरों के अँगूठे छुओ ।

दोनों हाथ ऊपर करके पैरों के पंजों पर खड़े हो जाओ ।

बायाँ हाथ सामने रखकर उसे बाईं ओर ले जाते हुए अँगूठे का नाखून देखो ।

दायाँ हाथ सामने रखकर उसे दाईं ओर ले जाते हुए अँगूठे का नाखून देखो ।

हाथ घुटनों पर सीधे रखकर वज्रासन में बैठो ।

बैठकर पैर सीधे करो । दोनों हाथों से पैर की उँगलियों को पकड़ो ।

❑ दिए गए चित्रों की स्थितियों पर चर्चा कराएँ । विद्यार्थियों को चित्रानुसार व्यायाम करने हेतु प्रेरित करें । व्यायाम की आवश्यकता और लाभ को समझाएँ । व्यायाम, योगासन, एरोबिक्स आदि प्रकारों पर चर्चा करें । प्रतिदिन व्यायाम करने के लिए प्रोत्साहित करें ।

चित्रकथा – देखो, समझो और लिखो :

९. समझदारी

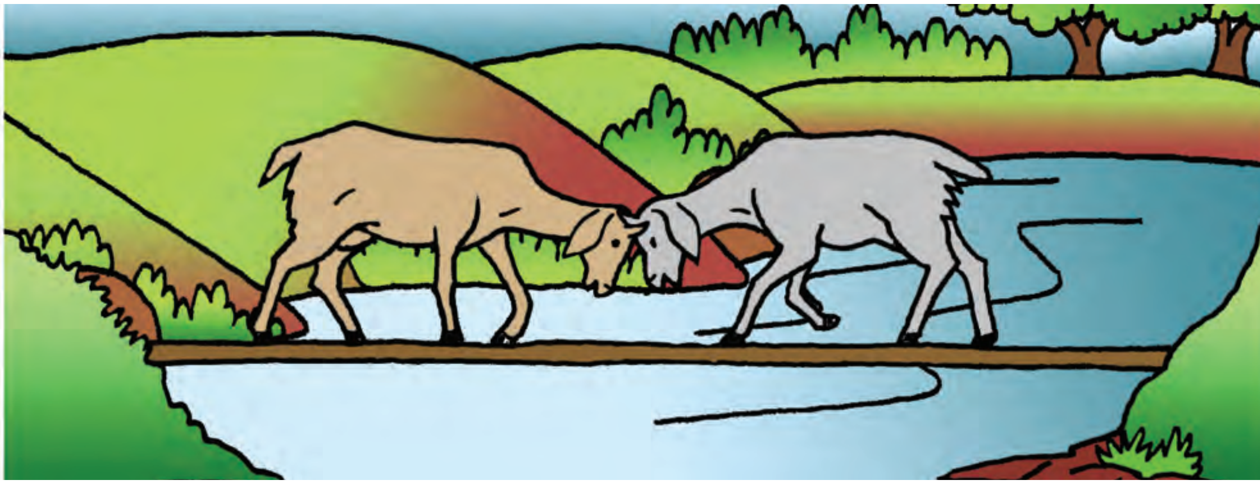

पतले पटरे का पुल पार करने के लिए दो बकरियों का आमने-सामने आना । दोनों में संघर्ष होना ।

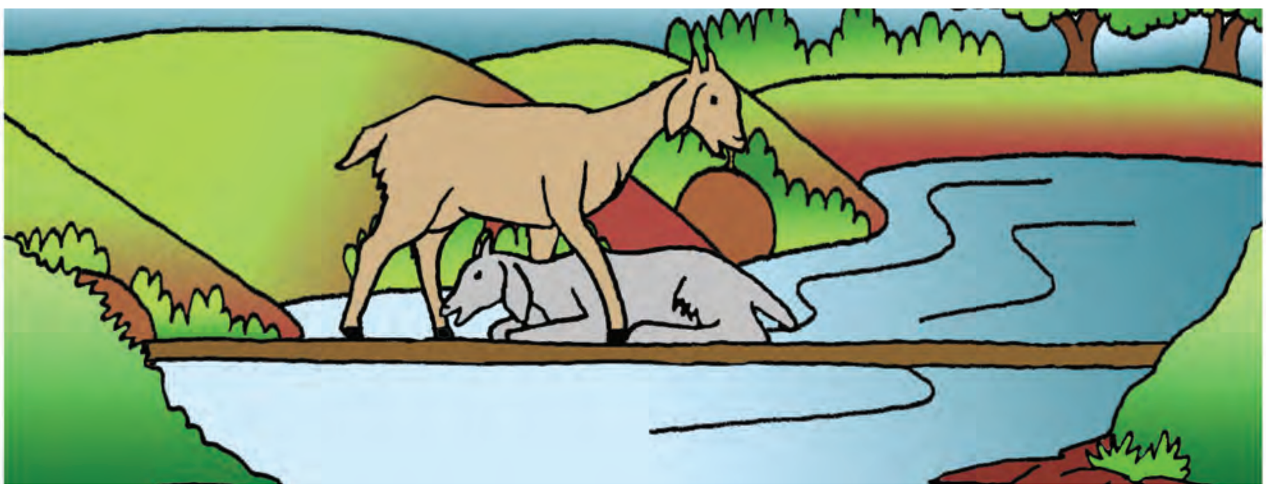

दोनों की समझ में आना कि इस तरह से पुल पार नहीं किया जा सकता । हल ढूँढ़ने के लिए दोनों का आपस में चर्चा करना । एक बकरी का बैठ जाना । दूसरी का उसपर से आगे बढ़ जाना ।

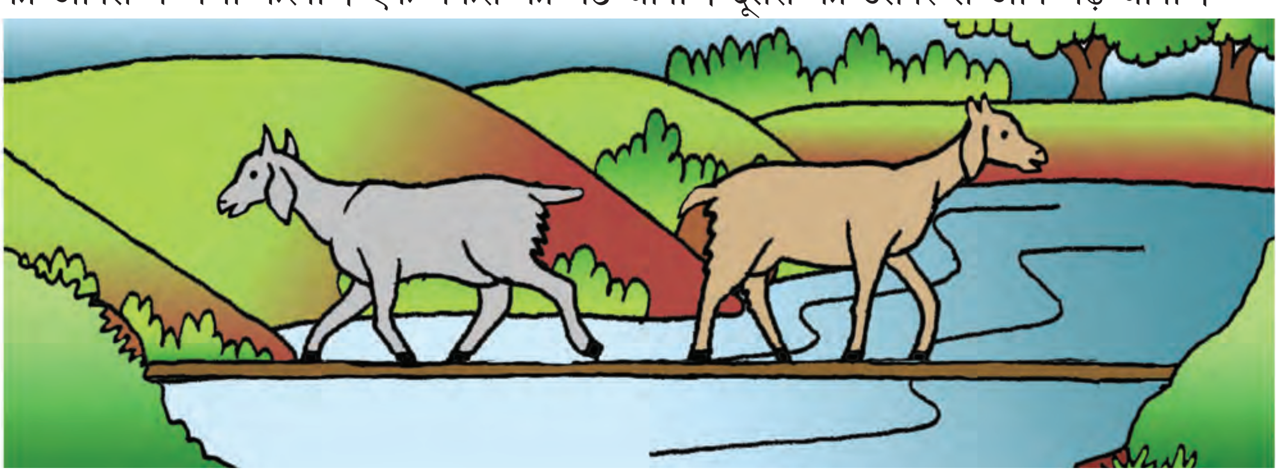

दोनों बकरियों की समझ में आना कि समस्या का हल संघर्ष से नहीं बल्कि सहयोग से निकलता है ।

❑ विद्‌यार्थियों से ऊपर दिए गए चित्रों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण कराएँ । चित्रों का क्रमशः वाचन कराएँ और चित्रों पर चर्चा करें । मुद्‌दों के आधार पर कहानी लिखने हेतु प्रेरित करें । कहानी के संवादों के आधार पर कक्षा में विद्‌यार्थियों से नाट्‌यीकरण कराएँ ।

स्वाध्याय

१. **भारत के प्रसिद्ध पर्वतों के बारे में सुनो ।**

२. **निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द बताओ :**

सिंह, वृक्ष, प्रातः, बलशाली, मित्र, निरीक्षण, विनम्र, उपकार, गुफा, हाथ, पुस्तक, चंद्रमा, महिला, नेत्र ।

३. **उचित विरामचिह्न लगाकर वाक्यों को पढ़ो :**

खंभे पर बहुत ऊँचे एक छोटी-सी तख्ती पर कुछ लिखा था बच्चू ने मन ही मन कहा अच्छा बच्चू की पहुँच से दूर है तू अभी पढ़ता हूँ तुझे...... बच्चू खंभे पर चढ़ गया अरेरे यह क्या तख्ती पर लिखा था खंभे पर लगाया हुआ पेंट गीला है कृपया इससे दूर रहें

४. **उत्तर लिखो :**

(क) चित्र में कितनी बकरियाँ हैं ?

(ख) बकरियाँ किस पर होते हुए नदी पार कर रहीं हैं ?

(ग) उनमें संघर्ष क्यों हुआ ?

(घ) बकरियों ने अपनी समस्या का क्या हल निकाला ?

(ङ) इस कहानी से कौन-सी सीख मिलती है ?

५. **चित्र देखकर प्राणियों को पहचानो और उनके नाम बताओ :**

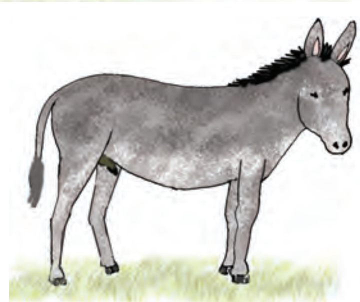

६. **तुम कहीं जा रहे हो । रास्ते में कोई वस्तु पड़ी हुई दिखाई दे तो तुम क्या करोगे, बताओ ।**

● **व्यावहारिक सृजन – सुनो, समझो और करो :**

१०. समानता

रविवार का दिन था । आस-पास के लड़के-लड़कियाँ बाग में खेलने के लिए इकट्ठे हुए थे । मंजुला बोली,"यह बाग कितना सुंदर है । चारों तरफ हरियाली-ही-हरियाली है । तरह-तरह के फूल-पौधे लहलहा रहे हैं ।" शाम को घूमने आए बुजुर्ग श्री परमानंद जी बच्चों की बातें सुनकर उनके पास आए । उन्होंने कहा, "बेटी, यह बाग भी अपने भारत जैसा ही है । इस बाग की तरह अपने भारत देश में अनेक धर्म, जाति, भाषा, प्रदेश के लोग मिल-जुलकर रहते हैं । इनके अपने-अपने अनेक त्योहार हैं । सबके मनाने के ढंग अलग-अलग हैं ।" सभी बच्चे शांत होकर सुन रहे थे । परमानंद जी ने देखा कि बच्चे तो एकदम गंभीर हो गए हैं । उन्होंने विषयांतर करते हुए पूछा, "अच्छा बताओ, इन अलग-अलग फूलों में कौन-सी एक चीज है जो सबमें एक समान है ।" सभी सोचने लगे । प्रियंका ने कहा, "सुगंध ।"

परमानंद जी बोले, "बिलकुल सही । अब तुम सब यह बताओ कि वे कौन-सी कृतियाँ हैं जो सभी त्योहारों में समान रूप से की जाती हैं ।" बच्चे बारी-बारी बोल उठे –

१. साफ-सफाई करते हैं । २. घरों की सजावट करते हैं । ३. आँगन में रंगोली बनाते हैं । ४. खरीदारी करते हैं । ५. उपहार लेते-देते हैं । ६. रोशनाई करते हैं । ७. पकवान बनाते हैं । ८. पास-पड़ोस में पकवान बाँटते हैं । ९. बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं । १०. प्रेम से गले मिलते हैं ।

परमानंद जी इन होनहार बच्चों की विविधता में एकता का भाव को देखकर बहुत प्रसन्न हुए । सभी को शुभ आशीष देते हुए घूमने के लिए चल पड़े ।

❑ पाठ का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । चित्र की कृतियों के आधार पर वाक्य कहलवाएँ । त्योहारों पर माँ-पिता जी द्वारा की जाने वाली विविध कृतियों की सामूहिक, गुट में और एकल नकल कराएँ । राष्ट्रीय त्योहारों की कृतियों का अभिनय कराएँ ।

स्वाध्याय

१. **महाद्‌वीपों के बारे में सुनो ।**

२. **बस स्थानक के बारे में बताओ ।**

३. **सुविचार पढ़ो और उनका संकलन करो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) लड़के-लड़कियाँ बाग में किसलिए इकट्‌ठे हुए थे ?
(ख) मंजुला ने बाग के बारे में क्या कहा ?
(ग) भारत में कौन-कौन-से लोग मिल-जुलकर रहते हैं ?
(घ) अलग-अलग फूलों में कौन-सी एक चीज समान है ?
(ङ) परमानंद जी होनहार बच्चों के किस भाव को देखकर बहुत प्रसन्न हुए ?

५. **चित्र देखकर वाद्‌यों के नाम बताओ और उनकी ध्वनियों की नकल करो :**

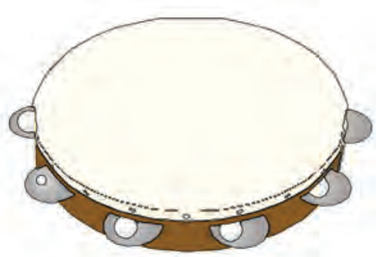

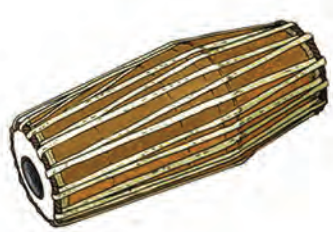

६. **तुम घर के किन कामों में हाथ बँटा सकते हो, बताओ :**

(च) साफ-सफाई करना ।
(छ) कपड़े धोना ।
(ज) वस्तुएँ उचित जगह पर रखना ।
(झ) खाना पकाना ।
(ञ) बरतन धोना ।

✻ पुनरावर्तन ✻

✻ नीचे दी गई चौखट में बिखरे हुए अक्षरों से फल, फूल, रंग, साग–सब्जियों के नाम ढूँढ़कर लिखो :

नी									सं
	के	ज	मु	का	ती	त्थ	कु	बी	
	त	स	म	मे	वं	सिं	ई	ही	
	बे	ट	फू	बैं	रि	प्या	न	ल	
	भी	से	चं	मो	ला	रू	अं	दा	
	गु	पी	द	फे	मा	ची	त	ता	
	गा	सु	बू	रा	अ	गू	क	ह	
	या	जा	गें	गो	लू	ब	ना	चौ	
	थी	ली	य	जू	पा	च	घ	आ	
	ह	से	द	सो	वा	र	प	रा	
ना									ग

✻ पुनरावर्तन ✻

१. पंचतंत्र की सुनी हुई कोई एक कहानी सुनाओ ।
२. देखे हुए मेले का वर्णन करो ।
३. वीर सैनिकों की गाथाएँ पढ़ो ।
४. पालतू एवं वन्य प्राणियों के दस-दस नाम लिखो ।
५. नीचे दी गई वर्ग पहेली में मात्रारहित शब्द भरो :

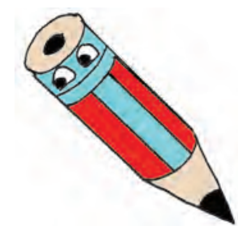

१				२	३
			४		
५	६	७		८	
	९				
१०				११	१२
१३			१४		

बाएँ से दाएँ

१. एक फूल का नाम
२. रुपया, पैसा
४. हवा
५. राशि
८. दल का उलटा
९. हवा का स्वर
१०. पैर
११. झुका हुआ
१३. बुरी आदत
१४. जल में जन्मा हुआ

ऊपर से नीचे

१. शरीर का एक अंग
२. उज्ज्वल
३. पति की बहन
६. व्यायाम
७. गहन विचार
१०. चलने का भाव
११. घरों तक पानी पहुँचाने वाला एक साधन
१२. तजने का भाव

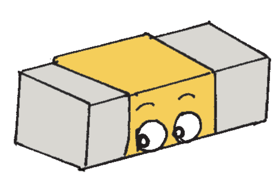

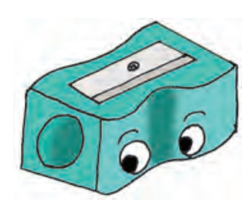

उपक्रम

माता-पिता से आदर्श ऐतिहासिक कथाएँ सुनो ।

तुम्हें कौन-सा ऐतिहासिक पात्र सबसे अच्छा लगता है, उसके बारे में बताओ ।

अपने परिसर की दुकानों के नामपट्ट पढ़ो ।

अपने परिवार के सदस्यों के नाम लिखो ।

● चित्रवाचन – देखो और बताओ :

१. नृत्य

भारत के लोकनृत्य । हैं विश्व के श्रेष्ठ नृत्य ।

❑ चित्रों का निरीक्षण कराएँ और उनपर चर्चा कराएँ । विद्‌यार्थियों से प्रश्न पूछें कि ये नृत्य किन प्रदेशों से संबंधित हैं । विभिन्न प्रकार के नृत्यों के चित्रों का संग्रह कराएँ । नृत्यकला के प्रति रुचि जागृत करें । विद्‌यार्थियों को नृत्य सीखने के लिए प्रेरित करें ।

तन को देता शक्ति, मन में भरे उल्लास ।
शरीर संतुलित रखे, नृत्य का अभ्यास ।

दूसरी इकाई

- चित्र में आए सुविचार/सुवचनों का वाचन कराके उनपर चर्चा कराएँ । नृत्य से क्या-क्या लाभ होते हैं, पूछें । भारतीय विरासत में लोकनृत्य का महत्त्व बताएँ । विद्‍यार्थियों से नृत्य करने वाले कलाकारों के नामों की सूची बनवाएँ ।

● **वाचन – पढ़ो और अभिनय के साथ गाओ :**

२. सीख

सीखो फूलों से तुम बच्चो !
काँटों में भी मुसकाना ।
सीखो कोयल से जाकर यह,
मधुर गान निसदिन गाना ।।

सीखो नदियों औ झरनों-से,
तुम आगे बढ़ते जाना ।
ऊपर आफत आने पर भी,
कभी न मन में घबराना ।।

सीखो पय-पानी से जाकर,
कैसे मित्रों को पाना ।
औ कैसे उनकी रक्षा में,
स्वयं जूझना मर जाना ।।

सीखो धरती से तुम जाकर,
कष्टों को जग के सहना ।
सीखो वृक्षों से भी जा यह,
दुख सारे चुप ही सहना ।।

– डॉ. वेदप्रकाश शास्त्री

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से साभिनय गवाएँ । कविता में आई सीखों पर चर्चा कराएँ । प्रकृति में और किनसे सीख मिलती है, पूछें और मार्गदर्शन करें । कविता में आए तुकांत शब्दों को लिखवाएँ ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' के प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी नियमित रूप से स्वाध्याय कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।

स्वाध्याय

१. सुना हुआ कोई संस्कारगीत सुनाओ ।

२. दिए हुए शब्दों को वर्णमाला के क्रम में लगाओ :

गिरि, खड़िया, चावल, छत्र, घटाव, झपकना, ठोकर, ढाका, टट्टू, जग, कढ़ाई, डलिया ।

३. किसी समाजसेवी के बारे में पढ़ो ।

४. एक वाक्य में उत्तर लिखो :

(क) कोयल से क्या सीखना है ?
(ख) मित्रों को पाना किससे सीखना है ?
(ग) मित्रों के लिए कवि क्या करने के लिए कहता है ?
(घ) धरती से हमें कौन-सी सीख मिलती है ?
(ङ) कवि हमें किनसे सीखने के लिए कह रहा है ?

५. चित्र देखकर साधनों के नाम और कार्य बताओ :

६. किसी अतिथि के घर आने पर तुम क्या करते हो, क्रमशः बताओ :

(च) नाश्ता कराते हो ।
(छ) पानी देते हो ।
(ज) चाय पूछते हो ।
(झ) स्वागत करते हो ।
(ञ) नमस्ते कहते हो ।

● भाषण – संभाषण – सुनो और दोहराओ :

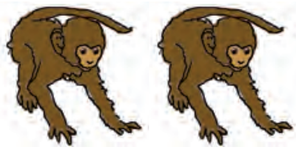

३. घंटाकरण

नगर में यह अफवाह फैल गई कि जंगल में भूत रहता है । उसका नाम घंटाकरण है; वह घंटा बजाता है । अफवाह से लोग बहुत भयभीत हुए । जंगल की ओर भूलकर भी कोई न जाता था । जंगल से लकड़हारे लकड़ियाँ न बीनते, घसियारे घास न काटते, चरवाहे जंगल में पशुओं को न ले जाते थे ।

सारा का सारा जंगल घंटाकरण भूत की राजधानी बन गया । अब तो उस नगर के राजा को भी बड़ी चिंता हुई । उसने सयानों और जादूगरों को इकट्ठा कर कहा, "भाई, इस भूत को इस जंगल से निकालो वरना सारा जंगल वीरान हो जाएगा और जंगल से मंगल गायब हो जाएगा ।"

लोगों ने अपने-अपने तरीके आरंभ किए परंतु घंटाकरण किसी के काबू में न आया । तभी एक बुद्‌धिमान मनुष्य उधर कहीं से आ निकला । वह भूतों में विश्वास नहीं करता था । वह अनुमान लगाने लगा कि सच्चाई क्या हो सकती है । वह साधु का वेश बनाकर जंगल में घुसा । वहाँ जाकर जो देखा तो सारा सच उसकी समझ में आ गया । लौटकर उसने राजा और नगरवासियों से कहा, "आप मुझे एक बोरा भुने हुए चने दें तो मैं कल ही भूत को पकड़ लाता हूँ ।"

लोगों ने उसका कहा माना । बुद्‌धिमान मनुष्य चने लेकर जंगल में पहुँचा । उसने वह चने एक पेड़ के नीचे डाल दिए । उसने देखा कि पेड़ से कई बंदर नीचे उतरे और चने खाने लगे । उनमें से एक बंदर के हाथ में घंटा था । उस बंदर ने घंटा फेंक दिया और चने खाने लगा । बुद्‌धिमान आदमी ने घंटा उठाकर नगर की राह ली ।

दरबार में पहुँचने पर बुद्‌धिमान मनुष्य ने राजा से कहा, "महाराज यह घंटा बंदरों के हाथ पड़ गया था । जब उनकी मौज होती; वे घंटा बजाते । इस तरह जंगल में भूत होने की अफवाह फैल गई थी ।" सारे नगर और राजसभा में उस विद्‌वान को बड़ा आदर मिला । उस बुद्‌धिमान ने लोगों को सच्चाई परखे बिना किसी भी बात पर विश्वास न करने की अमूल्य सलाह दी ।

– जगतराम आर्य

❑ उचित आरोह- अवरोह के साथ कहानी सुनाएँ । विद्‌यार्थियों से सामूहिक, मुखर वाचन कराएँ । उन्हें उनके शब्दों में कहानी कहने के लिए प्रेरित करें । पढ़ी हुई कहानियों के नाम बताने के लिए कहें । अंधविश्वास दूर कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर चर्चा करें ।

स्वाध्याय

१. **कोई एक साहस कथा सुनाओ ।**

२. **उत्तर दो :**

(क) अफवाह का क्या परिणाम हुआ ?

(ख) बुद्‌धिमान मनुष्य किसमें विश्वास नहीं करता था ?

(ग) साधु का वेश बनाकर जंगल में कौन घुसा ?

(घ) बंदर घंटा कब बजाते थे ?

(ङ) बुद्‌धिमान मनुष्य ने लोगों को कौन-सी सलाह दी ?

३. **'समय का महत्त्व' पर निबंध पढ़ो ।**

४. **जोड़ी मिलाकर पूरा वाक्य लिखो :**

(च) उस नगर के राजा को	उधर कहीं से आ निकला ।
(छ) जब उनकी मौज होती	बड़ा आदर मिला ।
(ज) तभी एक बुद्‌धिमान मनुष्य	वे घंटा बजाते ।
(झ) उस विद्‌वान को	मंगल गायब हो जाएगा ।
(ञ) जंगल से	बड़ी चिंता हुई ।

५. **चित्र देखकर अंधविश्वासों को पहचानो और इनपर कभी विश्वास मत करो :**

६. **छोटे से बड़े आकार के आधार पर इनका क्रम बताओ :**

विश्व, गाँव, राज्य, तहसील, देश, जिला ।

● **वाचन – अनुवाचन करो :**
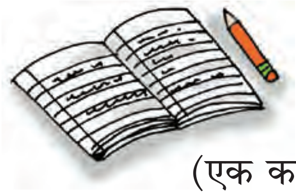
४. ऐसे-ऐसे

(एक कमरे का दृश्य, चादर ओढ़े अरुण सोया है ।)

माता जी – (पुचकारकर) न-न, ऐसे मत कर ! इसने कहीं कुछ उल्टा-सीधा तो नहीं खा लिया ?

पिता जी – अरे, यह तो अभी तक खेलता-कूदता फिर रहा था ।

अरुण – (जोर से कराहकर) माँ ! ओ माँ ! उफ......... उफ......... !

माता जी – न-न मेरे लाल ! ज्यादा ही तकलीफ जान पड़ती है । वैद्‌य जी को बुलाया है ।

अरुण – (रुआँसा-सा) बड़े जोर से 'ऐसे-ऐसे' होता है ।'ऐसे-ऐसे' !

(वैद्‌य जी का प्रवेश)

वैद्‌य जी – कैसे हो अरुण ? बेटा, खेलने से जी भर गया क्या ?

पिता जी – अभी तक तो ठीक था । एकदम बोला – मेरे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होता है ।

वैद्‌य जी – पेट दर्द के लक्षण तो नहीं दिखते । शायद कुछ गलत खा लिया हो । मैं पेट साफ करने की दवा दे देता हूँ ।

(वैद्‌य जी जाते हैं । मास्टर जी घर आते हैं ।)

मास्टर जी – बहन जी, अरुण जैसे लड़कों को अक्सर यह बीमारी हो जाती है ।

माता जी – सच !..... क्या बीमारी है यह ?

मास्टर जी – अरुण ! पाठशाला का गृहकार्य पूरा कर लिया है ? डरो मत, सच बताओ ।

अरुण – जी... जी पूरा नहीं हुआ है । (अरुण मुँह छिपा लेता है ।)

मास्टर जी – (हँसकर) अरुण का पाठशाला का काम अधूरा रह गया । बस ! डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा – 'ऐसे-ऐसे' !

(सभी हँसने लगते हैं ।)

– विष्णु प्रभाकर

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ संवाद का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से अनुवाचन एवं मुखर वाचन करवाएँ । जीवन में जल के महत्व पर चर्चा कराएँ । पानी किन स्रोतों से मिलता है, पूछें । इन स्रोतों में पानी कहाँ से आता होगा, यह बताने के लिए कहें ।

स्वाध्याय

१. **मौसम संबंधी सुना हुआ समाचार सुनाओ ।**

२. **पाठशाला में कौन-कौन-से उपक्रम होते हैं, बताओ ।**

३. **अपने प्रिय कवि/ लेखक की जानकारी पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) अरुण कहाँ सोया हुआ था ?

(ख) वैद्‍य जी ने कौन-सी दवा दी ?

(ग) 'ऐसे-ऐसे' बीमारी किन्हें होती है ?

(घ) मास्टर जी ने अरुण से क्या पूछा ?

(ङ) अरुण के पेट में 'ऐसे-ऐसे' क्यों होने लगा ?

५. **चित्र देखकर जल शुद्‍धीकरण प्रक्रिया को समझो और नाम बताओ :**

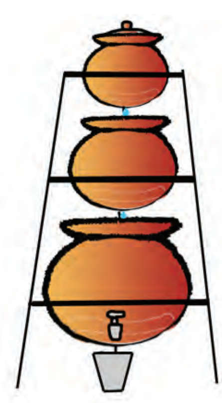

६. **जल प्रदूषण न हो इसलिए तुम क्या करोगे, क्या नहीं करोगे बताओ :**

(च) नल के आस-पास कचरा नहीं फेंकोगे ।

(छ) नदी में साइकिल, स्कूटर धोओगे ।

(ज) पीने के पानी में हाथ नहीं डुबाओगे ।

(झ) तालाब में कपड़े धोओगे ।

(ञ) तालाब में प्लास्टिक की थैली, बोतल नहीं डालोगे ।

● हास्य – सुनो और दोहराओ :

५. पेटूराम

पेटूराम पौटनपुर के रहने वाले थे । वे बहुत ही सीधे-सादे भोले-भाले थे । वे कभी किसी से लड़ते-झगड़ते नहीं थे । पेटूराम तन से थोड़े मोटे थे । होते क्यों न ? खाते-पीते घर के जो थे । उन्हें पॉपकार्न, वेफर्स बहुत पसंद थे । तेलवाले पदार्थ खाने के कारण उनका शरीर थुलथुल हो गया था । वे छोटे-मोटे कुरते में समाते भी नहीं थे । गाँव के लोग सज्जन थे । इसलिए कोई उन पर हँसता नहीं था । एक बार पौटनपुर में विवाह समारोह था । पेटूराम जी को निमंत्रणपत्र मिला । ऑटोरिक्शा में किसी तरह घुसकर वे समारोह में पहुँच गए । तरह-तरह के पकवान बने थे । पेटूराम जी भोजन की तरफ लपके ही थे कि उन्हें एकाएक याद आया कि आज तो उनका उपवास है । वे मन मसोसकर लौट पड़े । उन्हें लौटते देखकर मेजबान लल्लूलाल पास आकर बोले –

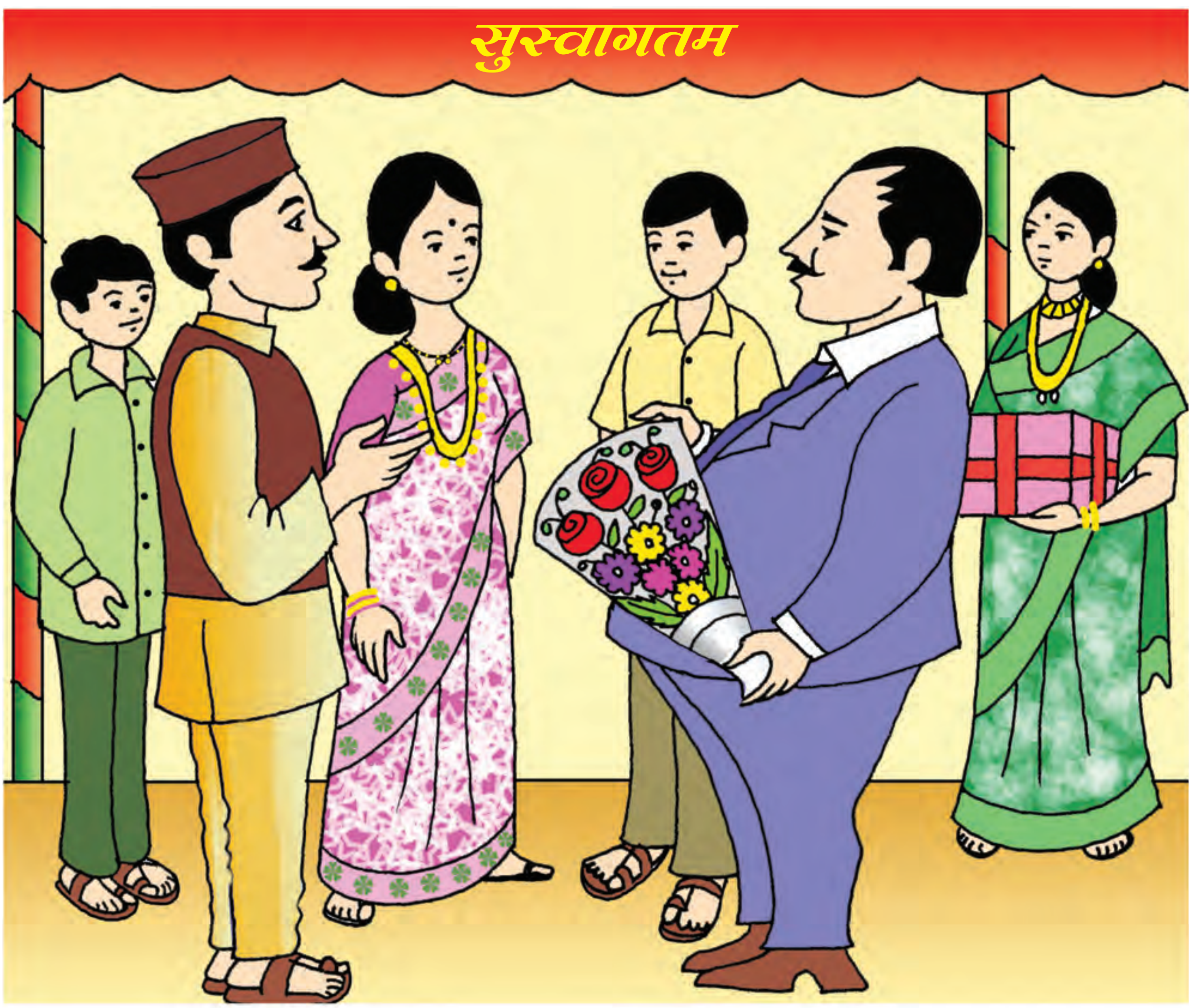

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का मुखर वाचन कराएँ । मात्रायुक्त शब्दों का सुलेखन, श्रुतलेखन कराएँ । पाठ में आए शब्दयुग्मों का लेखन करवाएँ । इसी तरह के अन्य शब्दयुग्म बताने के लिए कहें । विद्यार्थियों से किसी विवाह समारोह का अनुभव पूछें ।

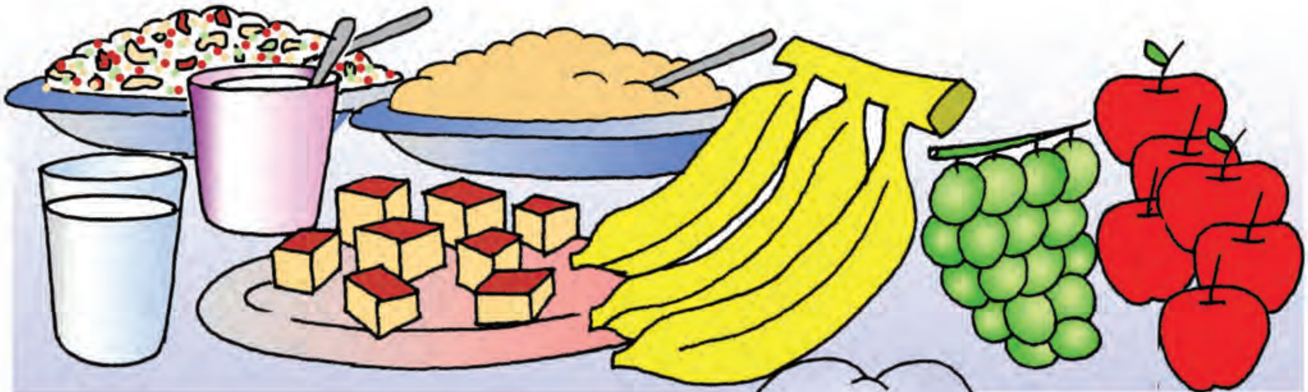

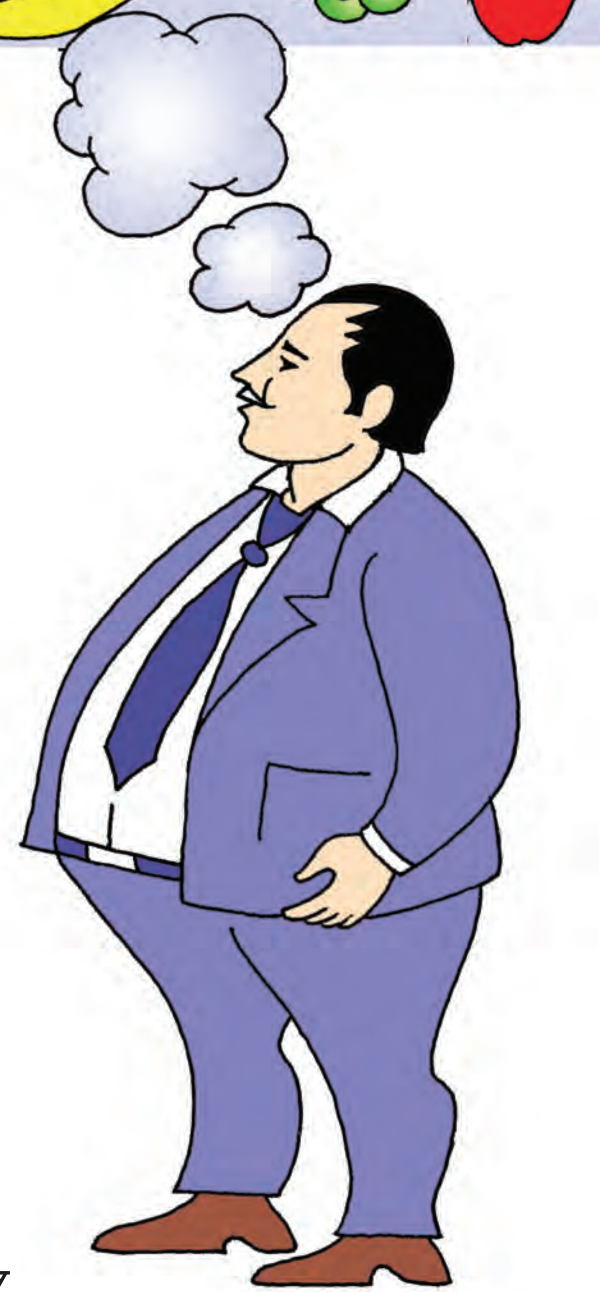

‘‘चलिए, भोजन तैयार है ।’’
‘‘मैं............!’’
‘‘क्या आप भोजन नहीं करेंगे ?’’
‘‘आज मेरा उपवास है ।’’
‘‘उपवास में कुछ तो लेते होंगे ?’’
‘‘हाँ, थोड़ा बहुत खा लेता हूँ ।’’
‘‘फिर संकोच कैसा ? कृपया बताइए ।’’
‘‘अंगूर मिलते हैं ?’’
‘‘हाँ, बहुत मिलते हैं ।’’
‘‘केवल आधा किलो मँगवा लें ।’’
‘‘और ?’’
‘‘आधा दर्जन केले, एक किलो सेब ।’’
‘‘और ?’’
‘‘एक पाव मेवा, सवा पाव मिठाई ।’’
‘‘बस या कुछ और ?’’
‘‘आधा लीटर दूध और रबड़ी, बस ।’’
‘‘ठीक और कोई आज्ञा ?’’
‘‘नहीं – नहीं, आज मेरा उपवास है ।
मैं अधिक नहीं खाता ।’’

– डॉ. त्रिलोकीनाथ ब्रजवाल

❑ पाठ में आए ‘आ’ से लेकर ‘ऑ’ तक के मात्रा चिह्नों के शब्द ढूँढ़कर लिखवाएँ । विद्यार्थियों से उनकी पसंद के एक ही वर्ण के बारहखड़ीवाले शब्द (कमल, कागज......) बनाकर लिखने के लिए कहें और इन्हीं शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करवाएँ ।

● **भाषा-प्रयोग - पढ़ो, समझो और लिखो :**

६. मिठाइयों का सम्मेलन

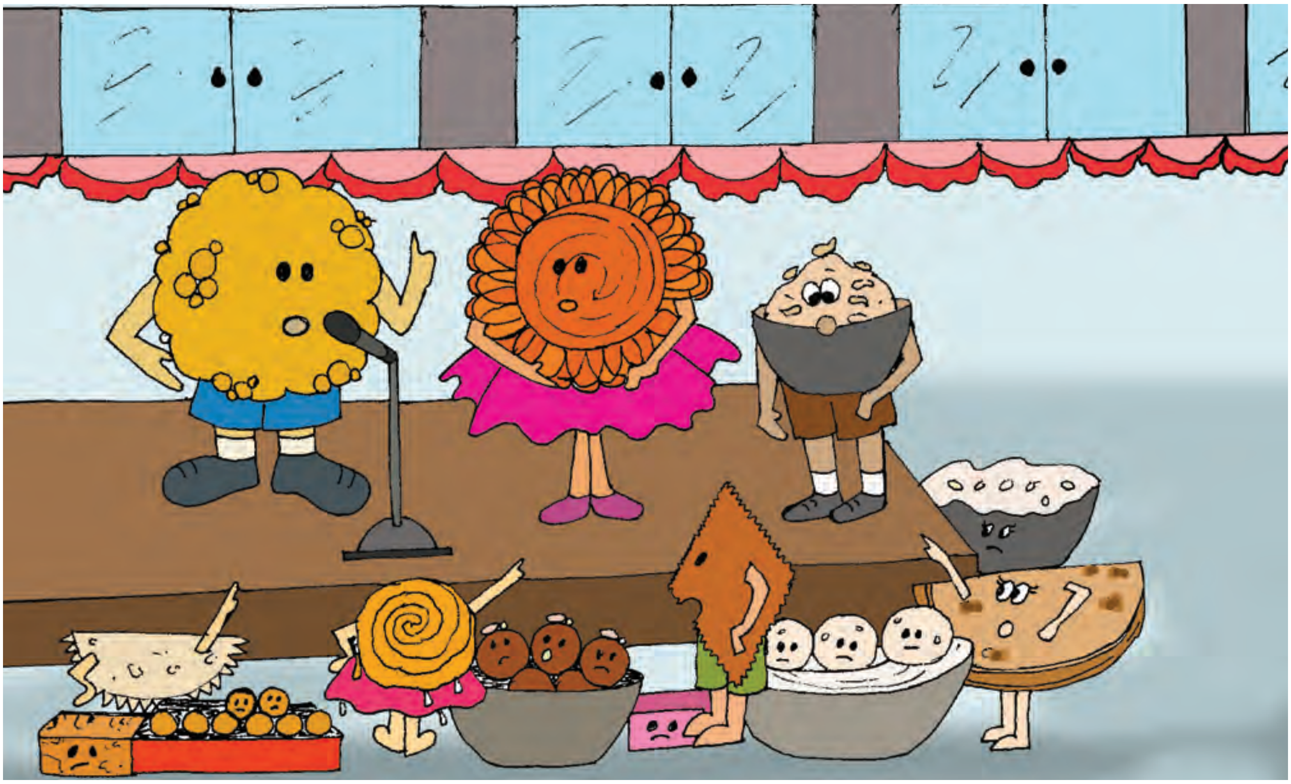

छगनलाल हलवाई दुकान बंद करके अपने घर चले गए । मौका मिलते ही बंद दुकान के भीतर मिठाइयों ने एक सम्मेलन का आयोजन किया । अध्यक्ष लड्डू दादा के साथ इमरतीदेवी और हलवाराम को बिठाया गया । श्रोताओं में पेड़ा, बरफी बहन, रसगुल्ला, जलेबी देवी, रबड़ी रानी, गुलाबजामुन, मैसूरपाक, रसमलाई, सोनपापड़ी, बालूशाही, कलाकंद भाई, गुझिया, काजूकतली और शक्करपारा आदि बैठे ।

कलाकंद भाई – आजकल डॉक्टरों द्‌वारा कुछ लोगों को हमारा सेवन करने से रोका जा रहा है ।

सोनपापड़ी – क्या आप जानते हैं कि डॉक्टर लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं ?

बरफी बहन – कलाकंद भाई क्या बताएँगे ?

जलेबी देवी – बरफी बहन तुम ही बता दो न !

बरफी बहन – आप इस तरह मेरा मजाक मत उड़ाइए ।

मैसूर पाक – बरफी बहन और जलेबी देवी आप दोनों यह न भूलें –

❑ विद्‌यार्थियों से एकांकी का वाचन कराएँ । पाठ में आए स्त्री-पुरुष और एक-अनेक बोध कराने वाले शब्दों की सूची बनवाएँ । मिठाइयों के मानवीकरण को समझाएँ । पसंदीदा मिठाइयों के नाम पूछें । मिठाई के अतिसेवन से होने वाली हानियों पर चर्चा करें ।

मीठा अपना स्वाद है, मीठे-मीठे बोल ।
बस मिठास फैलाइए, मन दरवाजे खोल ।।

रसगुल्ला – आप यह नहीं जानते कि हमारी अति मिठास ही हमारी उपेक्षा का कारण है ।

गुलाबजामुन – रसगुल्ला भाई बिलकुल सही कह रहे हैं पर-

जीभ चटोरी ना सुने, माँगे मीठा मोर ।
मीठा-मीठा खाय के, लोग न होवें बोर ।।

गुझिया – कुछ लोगों के शरीर में शक्कर का अनुपात बढ़ रहा है ।

रबड़ी रानी – आप सभी ने सुना होगा कि जहाँ अति होती है, वहाँ क्षति होती है । हमारा सेवन करते समय लोग अति कर देते हैं, बाद में भुगतते हैं ।

लड्डू दादा – इसके लिए हमें अपने में शक्कर की मात्रा कम करनी चाहिए ।

गुलाबजामुन – फिर हमें मिठाई कौन कहेगा ?

लड्डू दादा – ध्यान रखो, शक्कर कम होने से ही हम लोगों के मन में मिठास बढ़ा सकते हैं ।

हलवाराम – हमारी उपयोगिता पर हमें चिंतित होने की आवश्यकता नहीं !

पेड़ा – शुभ कार्यों में मिठाई बाँटने की प्रथा को कौन बंद कर सकता है ?

लड्डू दादा – लोगों को भी चाहिए कि वे अपनी जीभ पर थोड़ा काबू रखें । हमारा सेवन करें पर अति न करें । शारीरिक श्रम करते रहें ।

इस निर्णय के साथ सभी को धन्यवाद देते हुए अध्यक्ष लड्डू दादा ने सम्मेलन समाप्ति की घोषणा की ।

– प्रा. मनीष बाजपेयी

❑ एक-अनेक और स्त्री-पुरुष बोध कराने वाले शब्दों के अन्य उदाहरण देकर वचन/लिंग का दृढ़ीकरण करवाएँ । विद्‌यार्थियों से पाठ्‌यपुस्तक में आए इसी प्रकार के शब्दों को ढूँढ़ने और लिखने के लिए कहें । इन शब्दों के प्रयोग पर ध्यान आकर्षित करें ।

● **आकलन– बताओ और लिखो :**

७. मेरे अपने

चाचा जी   चाची जी   दादी जी   दादा जी   नानी जी   नाना जी   मौसा जी   मौसी जी

फूफा जी बुआ जी   पिता जी   स्वयं   माता जी   मामा जी   मामी जी

मेरा नाम .... है । मैं अपने और का/की.............

हूँ । (**पुत्र/पुत्री**) मैं अपने और का/की

.... हूँ । (**पोती/पोता**) मैं अपने और का/की ....

.............हूँ । (**नातिन/नाती**) मैं अपने और

का/की .... हूँ । (**भतीजा/भतीजी**) मैं अपने

और का/की .... हूँ । (**भांजी/भांजा**)

❑ छात्रों से अपना फोटो चिपकाने और चित्र देखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए कहें । दर्शाए गए रिश्तों को समझाकर विद्यार्थियों से पाठ्यांश का वाचन एवं चर्चा कराएँ । उन्हें अन्य रिश्ते लिखने और अपना पारिवारिक 'अलबम' बनाने के लिए कहें ।

● कार्यानुभव – पढ़ो और बताओ :

८. पतंग

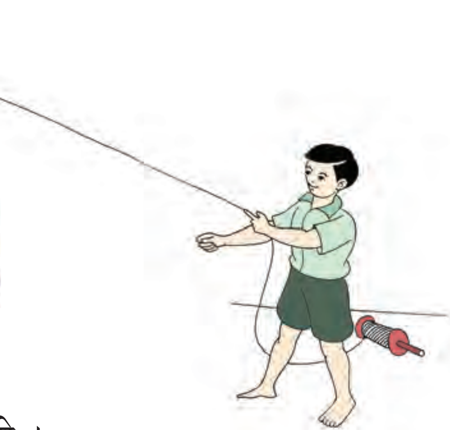

१. पतंग बनाने के लिए चौकोर कागज लो ।
२. उस कागज के ऊपर–नीचे की कोरों पर बड़ी सींक रखो ।
३. कागज के दोनों कोरों पर सींक को गोंद और कागज से चिपकाओ ।
४. अब छोटी सींक की कमान बनाते हुए बाईं–दाईं कोर पर रखो ।
५. अंत में तिकोना कागज नीचे बंधी हुई सींक पर चिपकाओ ।
६. लो, हो गई तैयार तुम्हारी पतंग ।

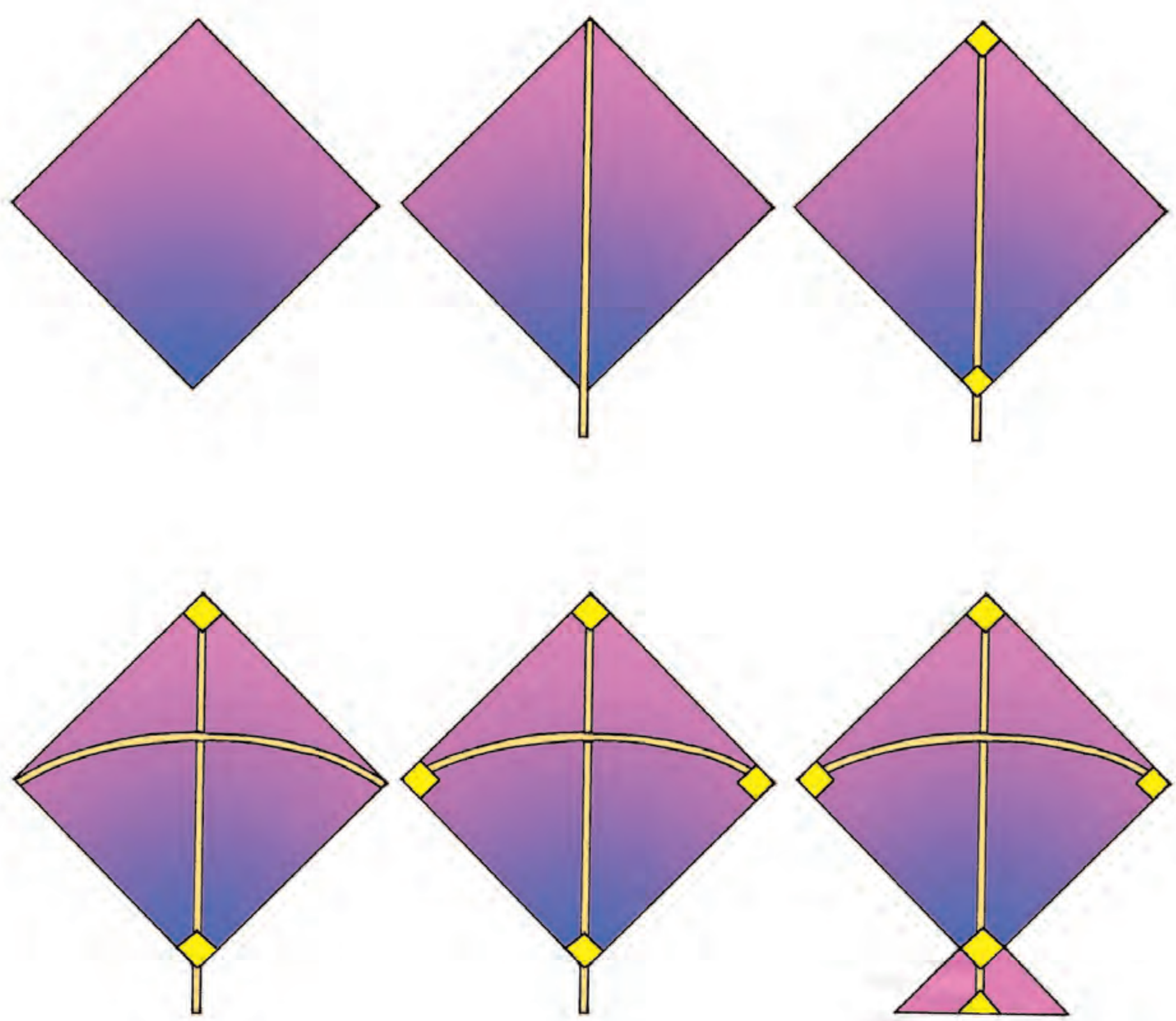

❑ विद्यार्थियों से ऊपर दिए गए चित्रों का निरीक्षण कराएँ । प्रत्येक चित्र के नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए कहें । उपरोक्त सभी कृतियाँ विद्यार्थियों से समूह, गुट एवं एकल रूप में करवाएँ । इस प्रकार उन्हें अन्य वस्तुएँ बनाने के लिए प्रेरित करें ।

● **आत्मकथा – सुनो, पढ़ो और लिखो :**

९. मैं दीपक हूँ

मैं दीपक हूँ ।

सर्वप्रथम आदिमानव ने पत्थर पर पत्थर पटककर, रगड़कर अथवा घिसकर आग पैदा की । धीरे–धीरे मानव का विकास होता गया और साथ में मेरा भी जन्म हुआ । जब से मानव मिट्टी के बरतन बनाने लगा तब से उसने मिट्टी से मुझे विभिन्न आकारों में बनाकर, नक्काशी करके, मेरा सौंदर्य और भी बढ़ाया । अब मेरे दो साथी, तेल और बाती मेरे साथ थे । मैं झोंपड़ी और घर को प्रकाशित करने लगा । बाद में उसने मुझे धातु से भी बनाना शुरू किया । मुझे अलग–अलग सुंदर आकार और नाम मिलते गए, जैसे ढिबरी, दीपक, चिराग, दीया, लालटेन आदि ।

मेरे टिमटिमाते प्रकाश में कितने ही महापुरुषों ने अध्ययन किया और ज्ञान से इस संसार को आलोकित किया । मुझपर गीत लिखे गए । कहा जाता है कि संगीतकारों ने मेरे लिए दीपक राग भी रचा, जिसे सुनकर मैं अपने–आप जल उठता था ।

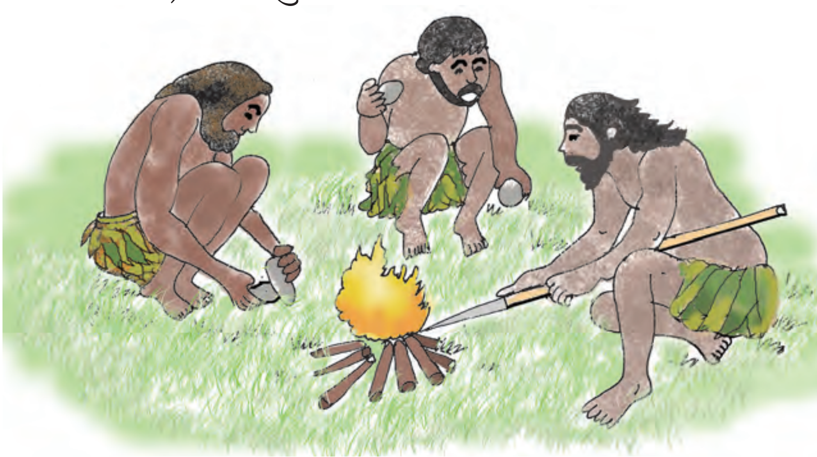

संसार के महान वैज्ञानिक 'एडिसन' ने मुझे एक नए रूप में विकसित किया । उन्होंने बिजली से जलने वाले विद्‌युतदीप का आविष्कार किया । आजकल तो मैं सौर ऊर्जा से भी जगमगाता हूँ । मनुष्य ने अपनी संस्कृति और रीति–रिवाजों के साथ मुझे हमेशा जोड़े रखा । भारत का महत्त्वपूर्ण त्योहार 'दीपावली' मेरे नाम से ही जाना जाता है । इन चार दिनों में विद्‌युतदीपों के साथ मेरा मिट्टी का प्राचीन रूप भी सम्मानित किया जाता है । पूरा परिसर मेरे नए, सुंदर आकार और प्रकारों से जगमगाता है ।

मैं "तमसो मा ज्योतिर्गमय" अर्थात– 'अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने' का प्रतीक हूँ ।

– अशोक शुक्ल

❑ कथात्मक पद्‌धति से आत्मकथा को समझाएँ । छात्रों से चर्चा करते हुए दीपक का वर्णन, उसकी आवश्यकता और महत्त्व को स्पष्ट करें । उनसे विविध प्रकार के दीपों की चर्चा करें । 'यदि प्रकाश न होता तो जीवन कैसा होता' इसपर पाँच वाक्य लिखवाएँ ।

स्वाध्याय

१. **सागर के बारे में सुनो ।**

२. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताओ :**

प्रथम, भिन्न, बढ़ाना, सुंदर, प्रकाश, ज्ञान, जलना, विकसित, पूरा, सुबह, कम, जोड़ना, सरल ।

३. **उचित विरामचिह्न लगाकर वाक्यों को पढ़ो :**

(क) करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान रसरी आवत-जात ते सिल पर परत निसान

(ख) न्हाए धोए क्या भया जो मन मैल न जाय मीन सदा जल में रहे धोए बास न जाय

४. **उत्तर लिखो :**

(च) आदिमानव ने सर्वप्रथम आग कैसे पैदा की ?

(छ) दीपक को कौन-कौन-से नाम मिलते गए ?

(ज) संगीतकारों ने क्या किया ?

(झ) मनुष्य ने दीपक को हमेशा किसके साथ जोड़े रखा है ?

(ञ) दीपक किसका प्रतीक है ?

५. **चित्र देखकर दीपों के नाम बताओ :**

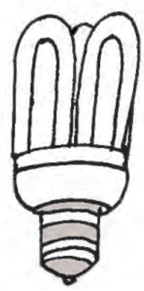
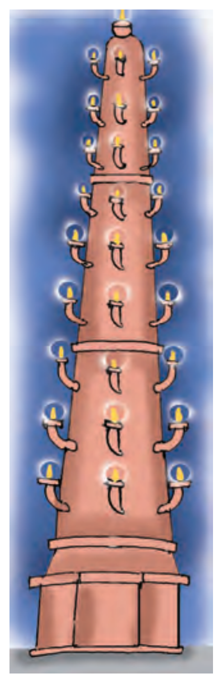

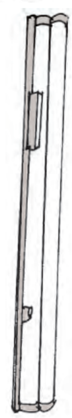

६. **तुम पशु-पक्षियों की सहायता किस प्रकार करते हो, बताओ ।**

● व्यावहारिक सृजन – पढ़ो और लिखो :

१०. नकल

प्रशांत की परीक्षा आज से शुरू होने वाली थी । वह दूरदर्शन पर विज्ञापन देख रहा था । पिता जी ने पूछा, "क्यों प्रशांत ! परीक्षा के लिए तैयार हो ?" प्रशांत बोला, " हाँ पिता जी ! पेन-पेन्सिल ले ली । जूते पॉलिश कर लिए । कपड़ों को इस्तरी हो गई । पानी की बोतल भी भर ली है ।"

पिता जी बोले, " शाबास बेटा !" माँ बोलीं, "बेटा देख, कुछ बाकी तो नहीं रह गया है ?" प्रशांत सिर खुजलाते हुए बोला, "माँ ! सब कुछ हो गया है, बस थोड़ी-सी पढ़ाई बाकी है ।" गुस्से से माँ बोलीं, "हमेशा विज्ञापन क्यों देखते रहते हो ?" प्रशांत सहमते हुए बोला, "माँ, मुझे विज्ञापन अच्छे लगते हैं ।" परीक्षा का दिन था । पिता जी स्थिति सँभालते हुए बोले, " अच्छा प्रशांत ! तुम्हें जो विज्ञापन सबसे अच्छा लगता है, उसकी वैसी ही नकल करके दिखाओ ।" प्रशांत गड़बड़ा गया । बोला, "पिता जी ! मैंने कोई भी विज्ञापन इतने ध्यान से नहीं देखा है ।" पिता जी बोले, "बेटा जो भी काम करो, ध्यान से करो । पढ़ाई भी ध्यान और एकाग्रता से ही करनी चाहिए । परिश्रम और लगन से पढ़ोगे तो परीक्षा भी खेल, विज्ञापन जैसी ही मनोरंजक लगेगी ।" प्रशांत पिता जी की बातें ध्यान से सुन रहा था । माँ बोलीं, " बेटा ! चमकने वाली हर चीज सोना नहीं होती । सभी विज्ञापन हमेशा सही नहीं होते । अतः तुम्हें सही-गलत विज्ञापन की पहचान भी होनी चाहिए ।" पिता जी बोले, "विज्ञापन भी एक कला है । तुम भी यह कला सीख सकते हो ।" प्रशांत बोला, "पिता जी ! मेरी आँखें खुल गईं हैं । अब तो आप मुझे पाठशाला पहुँचा दें ।" सुनकर सभी एक साथ हँस पड़े ।

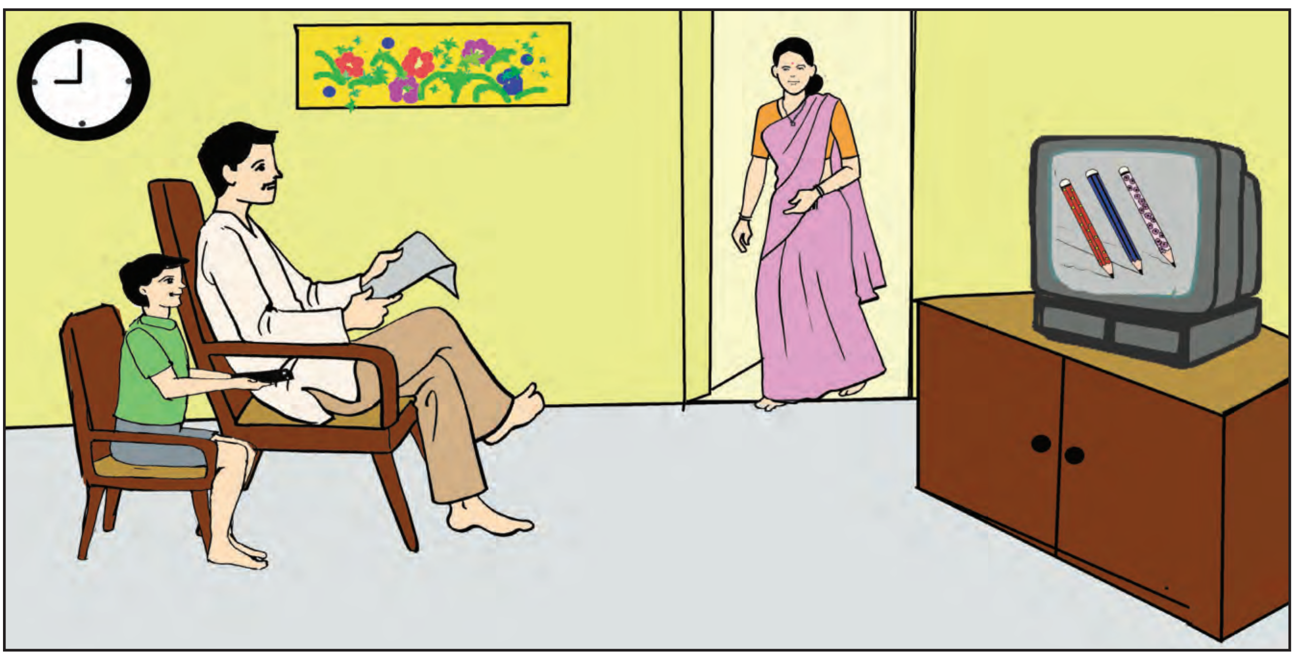

❑ पाठ का मुखर वाचन कराएँ । रेडियो और दूरदर्शन पर देखे/सुने हुए उचित विज्ञापनों पर चर्चा कराएँ । विद्‌यार्थियों से अच्छे विज्ञापनों की सामूहिक, गुट, एकल में नकल कराएँ । उनसे उनकी पसंद के चुटकुलों, देखे या सुने हुए विज्ञापनों की सूची बनवाएँ ।

स्वाध्याय

१. **महासागर के बारे में सुनो ।**

२. **रेल स्थानक के बारे में बताओ ।**

३. **स्वतंत्रता सेनानियों के नारे पढ़ो और उनका संकलन करो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) प्रशांत ने क्या-क्या तैयारी कर ली थी ?

(ख) प्रशांत का कौन-सा काम बाकी रह गया है ?

(ग) पिता जी ने पढ़ाई और परीक्षा के बारे में क्या कहा ?

(घ) माँ ने बेटे को कैसे समझाया ?

(ङ) सभी एक साथ कब हँस पड़े ?

५. **चित्र देखकर विज्ञापनों से संबंधित एक-एक वाक्य बताओ :**

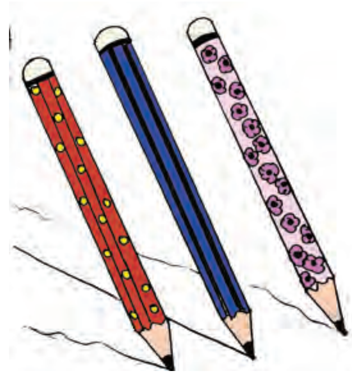

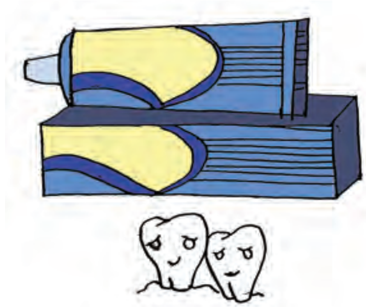

६. **संतुलित भोजन में कौन-कौन-से पदार्थ होने चाहिए, बताओ :**

रोटी, दूध, आईस्क्रीम, डबल रोटी, पिज्जा, हरी सब्जी, भात, चॉकलेट, बर्गर, बिस्किट, पोहा, दाल ।

✻ पुनरावर्तन ✻

✻ नीचे दी गई चौखट में बिखरे हुए अक्षरों से रसोईघर की वस्तुओं, पंसारी की दुकान में मिलने वाली वस्तुओं, वृक्ष और शरीर के अंगों के नाम ढूँढ़कर लिखो :

चा मि गे

क	च	मो	र	शो	री	द	श
दा	गु	कु	हा	ब	ग	इ	छा
पे	ई	म्म	आँ	ला	री	स	ट
त	पै	पी	व	सा	बे	उँ	नी
लि	चं	ल	ढ़ा	टो	ली	हूँ	प
याँ	क्क	थ	गि	ठ	ल्दी	रा	था
ह	ना	ठ	ज्वा	घु	अ	वा	ज
न	गौ	म	का	बा	ख	छु	र्च

* पुनरावर्तन *

१. हितोपदेश की सुनी हुई कोई एक कहानी सुनाओ ।
२. अपनी बस/रेल यात्रा के बारे में बताओ ।
३. महान नारियों की जीवनियाँ पढ़ो ।
४. शाक (पत्तोंवाली) और सब्जियों के पाँच-पाँच नाम लिखो ।
५. नीचे दी गई वर्ग पहेली में मात्रावाले शब्द भरो :

१		२		३	४
		५	६		
७	८		९		
१०		११			
	१२			१३	
१४			१५		

बाएँ से दाएँ

१. नया
३. कपट, धोखा
५. मस्ती, नशा
७. बाजार
९. मेघ
१०. फहराना, हवा में हिलाना
१२. शर्म
१४. स्वर्ण
१५. अभिनययुक्त कृति

ऊपर से नीचे

१. नाना का घर
२. गीला
४. ऊपर तक भरा हुआ
६. दबाव डालना
८. पैदल घुमाना
११. सत्ता
१३. कागजी मुद्रा

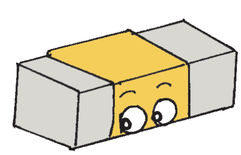

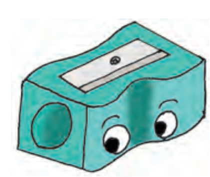

उपक्रम

माँ-पिता जी से चरित्रवान नायकों की कहानियाँ सुनो ।

ईमानदारी को क्यों अपनाना चाहिए, बताओ ।

सार्वजनिक स्थानों के सूचनापट्ट पर लिखी सूचनाएँ पढ़ो ।

तुम जो विषय पढ़ते हो, उनके नाम लिखो ।

● चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :

१. बाजार

गाँव का बाजार

❑ चित्रों का निरीक्षण कराएँ । चित्रों में क्या–क्या हो रहा है, पूछें । चित्रों का वर्णन करने हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करें । गाँव और शहर के बाजार के बारे में ८ से १० वाक्य लिखवाएँ । उन्हें गाँव और शहर में क्या पसंद है और क्यों, इसपर चर्चा कराएँ ।

तीसरी इकाई

शहर का बाजार

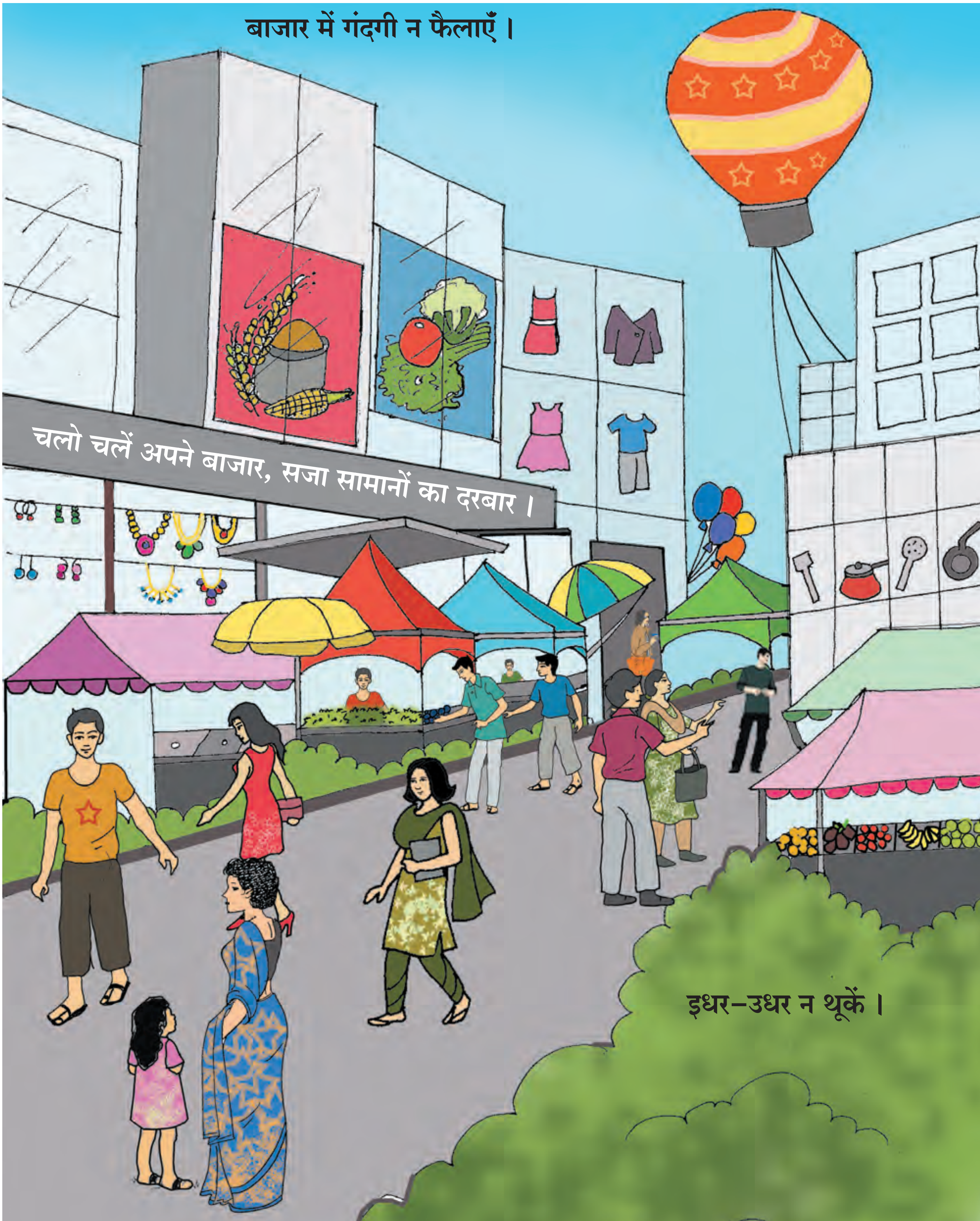

- चित्रों में आए वाक्यों का वाचन कराएँ । वाक्यों पर चर्चा करें । गाँव–शहर के बाजारों के अंतर पर प्रश्न पूछें । डाकघर, अस्पताल का वर्णन करने के लिए प्रेरित करें । गाँव और शहर के वातावरण, सामानों की 'शुद्‌धता–अशुद्‌धता' आदि पर चर्चा करें/कराएँ ।

● वाचन – पढ़ो और गाओ :

२. नींद हमें तब आती है

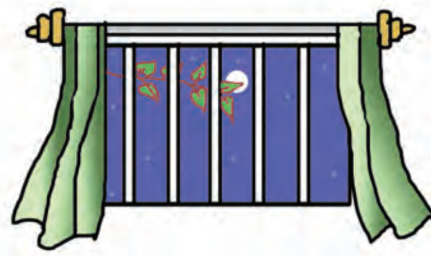

जब भी मीठी–मीठी लोरी माँ रोज सुनाती है,
नींद हमें तब आती है ।

दूर सभी डर हो जाते
हम सपनों में खो जाते
लोरी गाते–गाते हमको छाती से चिपकाती है,
नींद हमें तब आती है ।

माँ जब गाती है लोरी
चुपके से चोरी–चोरी
परियों की रानी पंखों पर हमको सैर कराती है,
नींद हमें तब आती है ।

ना सोने के पलने में
ना चाँदी के झूले में
गोदी के पलने का झूला, माँ जब हमें झुलाती है,
नींद हमें तब आती है ।

– प्रकाश पुरोहित

❑ उचित हाव–भाव, लय–ताल के साथ कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट में साभिनय पाठ करवाएँ । कविता का मौन पाठ कराएँ । विद्यार्थियों से सुनी हुई अन्य लोरियाँ गवाएँ । 'माँ' के बारे में कुछ वाक्य बुलवाएँ, लिखने हेतु प्रेरित करें ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' के प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।

स्वाध्याय

१. **त्योहार संबंधी लोकगीत सुनो और सुनाओ ।**

२. **दिए हुए शब्दों को वर्णमाला के क्रम में लगाओ :**

थाल, तवा, पपीता, बिल, मंजिल, धनिया, फूल, भीड़, याक, लोटा, वीर, नयन, दामिनी, रश्मि ।

३. **इस कविता को नीचे की पंक्ति से शुरू करके ऊपर तक पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) हमें नींद कब आती है ?

(ख) लोरी सुनकर हम किसमें खो जाते हैं ?

(ग) माँ हमको छाती से कब चिपकाती है ?

(घ) हमको कौन और किस पर सैर कराती है ?

(ङ) माँ गोदी के पलने का क्या बनाती है ?

५. **चित्र देखकर अंकुरित अनाजों के नाम बताओ :**

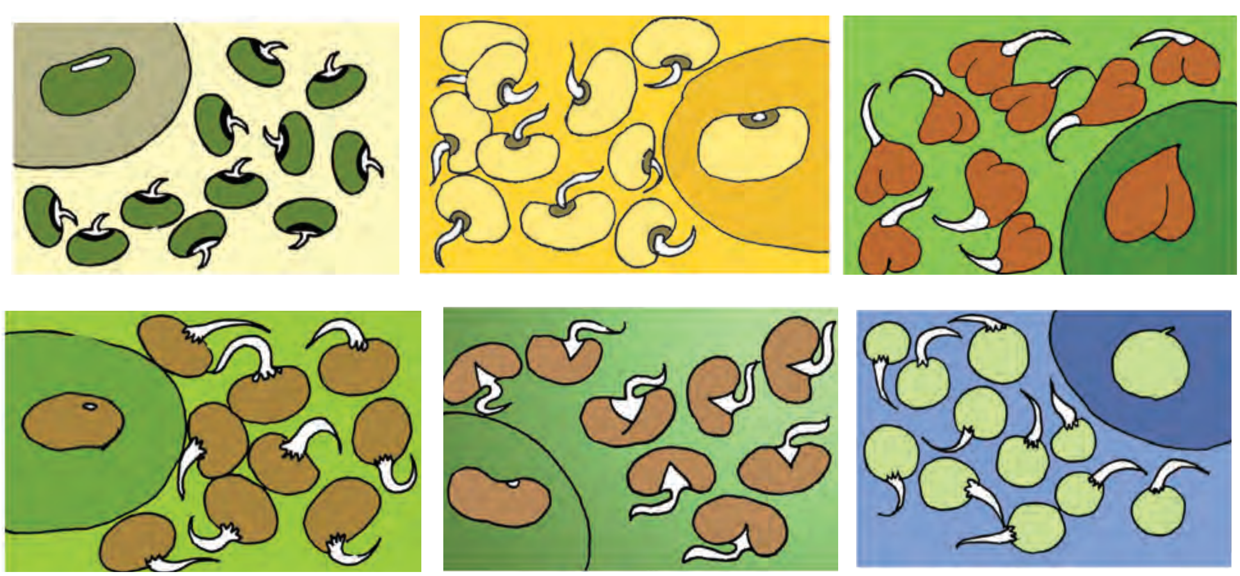

६. **तुम्हारे दूरदर्शन देखने के कारण बहन की पढ़ाई में अड़चन हो रही है, ऐसे समय तुम क्या करोगे, बताओ :**

(च) कुछ भी नहीं करोगे ।

(छ) दूरदर्शन बंद कर दोगे ।

(ज) बहन को दूसरे कमरे में जाकर पढ़ने के लिए कहोगे ।

(झ) उसपर गुस्सा करोगे ।

(ञ) बहन की पढ़ाई में मदद करोगे ।

● **वाचन – पढ़ो और दोहराओ :**

३. पुरखों की निशानी

मैं और माँ, मामा जी के यहाँ गरमी की छुट्‌टी मनाने गए हुए थे । जब लौटकर आए तो आँगन में लगा नीम का पेड़ कटा हुआ पड़ा था । 'यह क्या हुआ ?' कहकर माँ वहीं धम्म से बैठकर रोने लगीं । बुझे दिल से माँ घर के भीतर आईं । पिता जी माँ के सामने सफाई दे रहे थे, "लकड़ियों के पटिए निकल आएँगे ।" मैंने माँ से पूछा था, "माँ, तुम पेड़ के कटने से इतनी दुखी क्यों हो रही हो ?"

माँ ने कहा, "छोटी, तू जब पैदा नहीं हुई थी, उसके पहले नीम के नन्हे से पौधे को मैंने आँगन में रोपा था, उसे सींचा था ।" "तो दूसरा पौधा रोप दो माँ ।" मैंने धीरे-से कहा । "छोटी, एक पेड़ केवल पेड़ ही नहीं होता, पूरा संसार उसमें रचा-बसा होता है ।" "क्या मतलब ?" मैंने पूछा ।

"छोटी, उस पेड़ पर चिड़ियों के घोंसले थे, चींटियाँ और चींटे रहते थे । रात में बगुले आकर ठहरते थे । उस पेड़ ने हमें ऑक्सीजन दी । उस पेड़ को जो हमारे सुख-दुख का साथी था, हमने अपने स्वार्थ के लिए काट गिराया ।" कहकर माँ रोने लगी थीं । माँ के बहते आँसू मेरे सीने में जमा हो गए थे ।

कुछ साल बाद मेरा विवाह हुआ । मेरे ससुर जी मकान बनाना चाह रहे थे । हमारे आँगन में पीपल का एक विशाल पेड़ था । अगले दिन पीपल को काटने वाले आ गए । जब मुझे मालूम हुआ तो मैं बोली, "यह पेड़ नहीं कटेगा ।" "बहू, यहाँ मकान बना रहे हैं । तुम्हारे ही काम आएगा ।" मेरी सासू जी ने कहा । "अम्मा जी, मुझे ऐसा घर नहीं चाहिए जो दूसरों को उजाड़कर बनाया जाए । पीपल का पेड़ हमारे पुरखों की निशानी है । इसपर निवास करते पखेरू कहाँ जाकर बसेंगे ?" कहते-कहते मैं जोरों से रो पड़ी । ससुर जी ने कहा, "बहू सच कह रही है । किसी के घर को उजाड़कर अपना घर नहीं सजाएँगे ।" कुछ देर चुप रहकर फिर उन्होंने कहा, "बहू अब तो खुश हो ?"

– *उत्कर्षा आवटे*

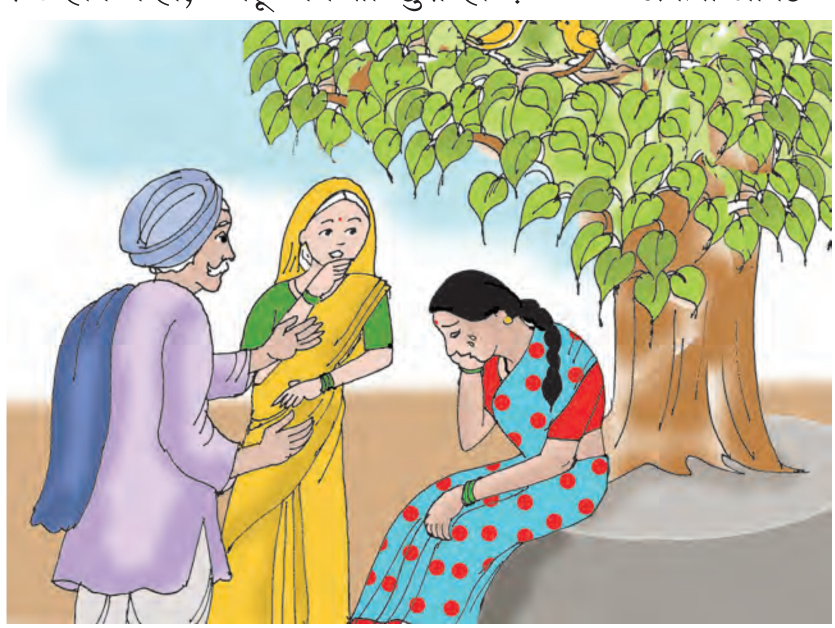

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से सामूहिक, गुट में मुखर, मौन वाचन कराएँ । उनसे कहानी उनके शब्दों में कहलवाएँ । विद्‌यार्थियों से किसी वृक्ष पर रहने वाले प्राणियों का निरीक्षण करके उनकी सूची बनाने के लिए कहें ।

स्वाध्याय

१. सूखे और गीले कूड़े के अंतर के बारे में सुनाओ ।

२. उत्तर दो :

(क) मामा जी के यहाँ से लौटकर आए तो क्या हुआ था ?

(ख) पिता जी, माँ के सामने क्या सफाई दे रहे थे ?

(ग) उस पेड़ पर कौन-कौन से प्राणी रहते थे ?

(घ) पीपल का पेड़ किसकी निशानी है ?

(ङ) ससुर जी ने क्या कहा ?

३. कोई एक नीतिपरक कविता पढ़ो ।

४. किसने-किससे कहा, लिखो :

(च) "लकड़ियों के पटिए निकल आएँगे ।"

(छ) "माँ, तुम पेड़ के कटने से इतनी दुखी क्यों हो रही हो ?"

(ज) "हमने अपने स्वार्थ के लिए काट गिराया ।"

(झ) "बहू, यहाँ मकान बना रहे हैं ।"

(ञ) "अम्मा जी, पीपल का पेड़ हमारे पुरखों की निशानी है ।"

५. चित्र देखकर प्रत्येक हिस्से के व्यावहारिक गणितीय आकारों के नाम लिखो :

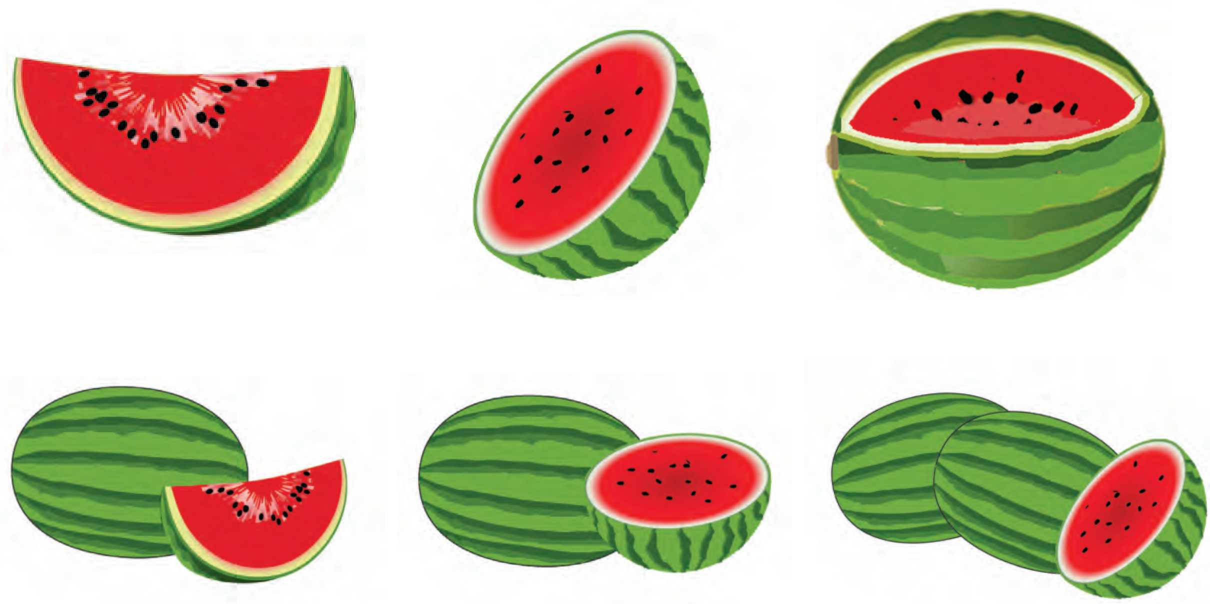

६. कोई पौधा बार-बार मुरझा रहा है तो तुम क्या करोगे, बताओ ।

● वाचन – पढ़ो और बोलो :

४. स्वस्थ तन– स्वस्थ मन

(गाँव के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में तहसील की स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जागृति आई हैं ।)

डॉ. जागृति – भाइयो और बहनो ! टीकाकरण कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए सबको धन्यवाद ।

सरपंच – डॉक्टर बहन जी ! हमारे गाँव का हर निवासी स्वास्थ्य के प्रति सजग है ।

डॉ. जागृति – बहुत अच्छा ! आप सब जानते हैं कि टीकाकरण विभिन्न गंभीर बीमारियों से सुरक्षा प्रदान करता है । टीका न लगाने से बच्चा कुपोषित या अक्षम हो सकता है । इससे बचने के लिए आजकल अधिकांश बीमारियों के टीके उपलब्ध हैं । बताइए कौन-कौन सी बीमारियों के टीकों की आपको जानकारी है ।

मालीराम – पोलियो का टीका लगाने से बच्चे के लूला-लंगड़ा होने की आशंका नहीं रहती ।

सोमवती – एम.एम.आर का टीका अर्थात खसरा, गलसुआ और शीतला से हमेशा के लिए मुक्ति ।

चंदा – हेपेटाइटिस बी के टीके से यकृत के रोगों से बचाव होता है ।

वर्षा – पीसीवी १३ का टीका रक्त, फेफड़े और मस्तिष्क को संक्रमण से बचाता है ।

आशुतोष – हिब का टीका अत्यंत संक्रामक ज्वर या निमोनिया से बचाता है ।

शुभ्रा – अतिसार, हेपेटाईटस् 'ए', छोटी चेचक और हैजा के लिए भी टीके हैं ।

जयेंद्र – डीटीएपी याने कंठरोहिणी, धनुर्वात और कुकुरखाँसी से बचने के लिए टीका ।

डॉ. जागृति – बढ़िया ! याद रखिए । हर बच्चे को सही समय पर टीका लगवाएँ, बच्चे को स्वस्थ बनाएँ । चलिए, टीकाकरण का आरंभ करते हैं ।

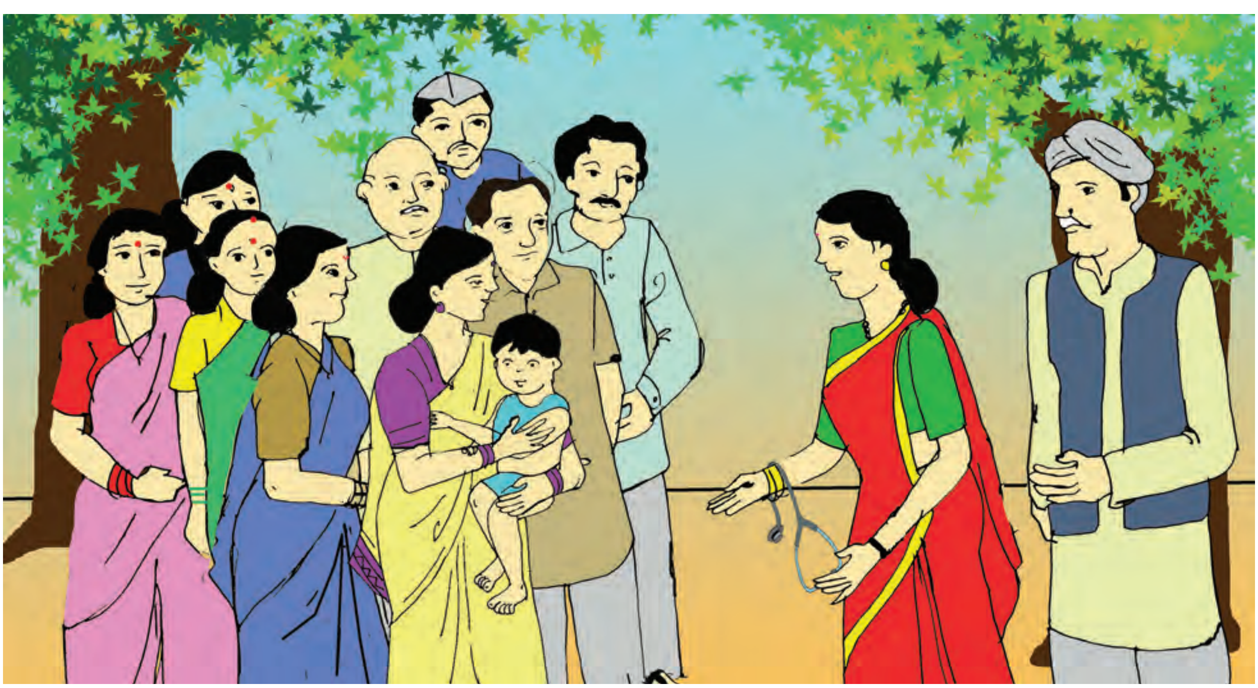

❑ उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन करवाएँ । टीकाकरण पर चर्चा करें । विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करें । समाज में फैले जादू-टोना जैसे अंधविश्वासों को नकारने हेतु प्रेरित करें ।

स्वाध्याय

१. **देखा/सुना हुआ स्वास्थ्य संबंधी विज्ञापन सुनाओ ।**

२. **पाठशाला में 'हिंदी दिवस' कैसे मनाया गया, बताओ ।**

३. **किसी महापुरुष द्‌वारा लिखा हुआ पत्र पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) स्वास्थ्य केंद्र पर कौन आई हैं ?

(ख) डॉ. जागृति ने सबको किसलिए धन्यवाद दिया ?

(ग) सरपंच ने क्या कहा ?

(घ) किनसे बचने के लिए बच्चों को टीके दिए जाते हैं ?

(ङ) अंत में डॉ. जागृति ने लोगों को क्या याद रखने के लिए कहा ?

५. **चित्र देखकर उपकरणों के नाम बताओ :**

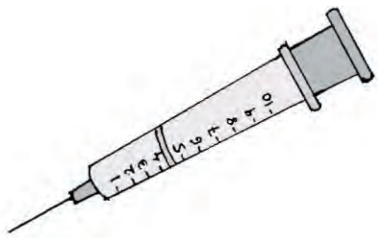

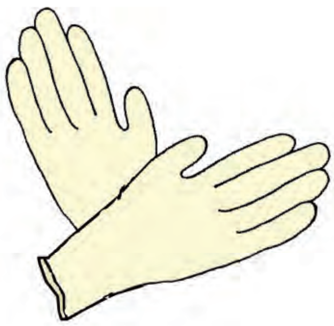

६. **वायु प्रदूषण न हो इसलिए क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए बताओ :**

(च) स्कूटर में साफ पेट्रोल डालना चाहिए ।

(छ) पीयूसी करवाना चाहिए ।

(ज) कारखाने की दूषित वायु पर प्रतिबंध नहीं लगाना चाहिए ।

(झ) रसोईघर में चिमनी नहीं लगानी चाहिए ।

(ञ) पटाखे नहीं फोड़ने चाहिए ।

● **भाषा प्रयोग – श्रुतलेखन करो :**

५. मिलकर बनें

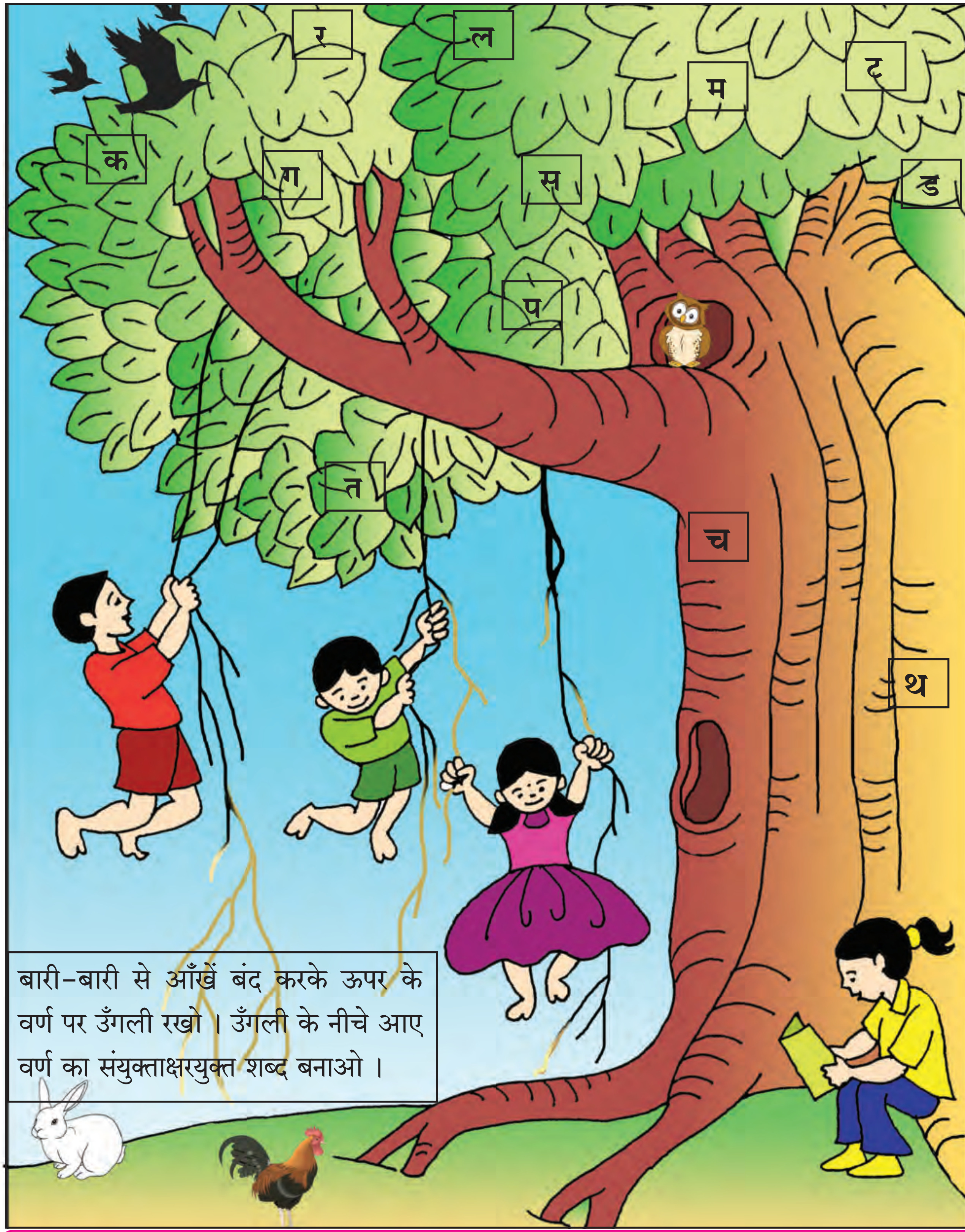

❑ चित्र का निरीक्षण कराएँ । चित्रों के वर्णों का वाचन कराएँ । ऊपर दी गई सूचना के आधार पर विद्यार्थियों से इन वर्णों के संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द बनवाएँ । इनका वाक्यों में प्रयोग करने के लिए कहें । इन शब्दों और वाक्यों का श्रुतलेखन कराएँ ।

जैसे– यदि ‘त’ पर उँगली पड़ी तो ‘त’ का संयुक्ताक्षर शब्द बनेगा– पत्थर । इसी तरह ऊपर आए वर्णों के संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द बनाओ । वर्णमाला के अन्य वर्णों के भी संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द बनाओ ।

❑ हल् लगाकर, पाई हटाकर, आधे होकर जुड़ने वाले प्रत्येक वर्ण के संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द बनाकर लिखने के लिए कहें । ‘र’ के प्रकारों पर चर्चा करके शब्द बनवाएँ । इन शब्दों का श्रुतलेखन कराएँ । प्रत्येक पाठ के संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों का संकलन कराएँ ।

● **व्याकरण – समझो और लिखो :**

६. नई अंत्याक्षरी

(आज शिक्षक दिवस है । चौथी का कक्षानायक सौरभ आज कक्षा को पढ़ा रहा है । शुरू की बेंचों पर पाठशाला के सभी बच्चे बैठे हैं । उनके पीछे सभी शिक्षक/शिक्षिकाएँ बैठी हुई हैं ।)

सौरभ – आज ५ सितंबर है । ५ सितंबर भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्मदिन है । उनके सम्मान में इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

मंजीत बहन जी – सौरभ गुरु जी ! आज पढ़ाने की बजाय कुछ नया कराइए न !

तनिष्का – आज हम सब अंत्याक्षरी खेलेंगे ।

बच्चे – वाह-वाह !

सौरभ – यह अंत्याक्षरी गीतों की नहीं, मुहावरों और कहावतों की होगी । एक गुट में लड़के और शिक्षिकाएँ होंगी । दूसरे गुट में लड़कियाँ और शिक्षक होंगे । पहला मुहावरा हमारी कक्षाध्यापिका बोलेंगी । मुहावरे के अंतिम वर्ण से शुरू होने वाला अगला मुहावरा शिक्षकों का गुट बताएगा ।

मंजीत बहन जी – अधजल गगरी छलकत जाए ।

हमीद गुरु जी – एक हाथ से ताली नहीं बजती ।

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ पाठ का मुखर और मौन वाचन कराएँ । पाठ में आए मुहावरों-कहावतों पर चर्चा करें । इनके अर्थ वाक्य प्रयोग द्वारा स्पष्ट करें/कराएँ । वाचन-लेखन में इनका प्रयोग करने हेतु प्रेरित करें । कक्षा में इस तरह का उपक्रम कराएँ ।

पृथा बहन जी – तिल का ताड़ बनाना ।
ब्रजेश गुरु जी – न घर का न घाट का ।
कांता बहन जी – कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती ।
अर्जुन – तू-तू, मैं-मैं करना ।
भूमिका बहन जी– नौ नगद, न तेरह उधार ।
भारत गुरु जी – राई का पहाड़ बनाना ।
पृथा बहन जी – नया नौ दिन, पुराना सौ दिन ।
तनिष्का – नेकी कर कुएँ में डाल ।
कांता बहन जी – लातों के भूत बातों से नहीं मानते ।
ब्रजेश गुरु जी – तेल देखो, तेल की धार देखो ।
भूमिका बहन जी– खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है ।
भारत गुरु जी – हाथ कंगन को आरसी क्या ।
मंजीत बहन जी – यथा राजा तथा प्रजा ।
हमीद गुरु जी – जाको राखे साइयाँ, मार सके ना कोय ।
(घंटी बजती है ।)
सौरभ – अभिनंदन ! दोनों गुटों का ज्ञान अच्छा है । घंटी बज चुकी है । इसलिए न कोई जीता न कोई हारा !
(सब ताली बजाते हैं ।)

❑ उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ पाठ का वाचन कराएँ । मुहावरों-कहावतोंयुक्त परिच्छेद, कहानी, निबंध वाचन हेतु प्रेरित करें । पाठ्यपुस्तक में मुहावरों-कहावतों का संग्रह कराएँ । कक्षा में मुहावरों-कहावतों के आधार पर कृति/अभिनय कराएँ ।

● **आकलन – पढ़ो, समझो और लिखो :**

७. क्या तुम जानते हो ?

१. मनुष्य का दायाँ पैर, बाएँ पैर की अपेक्षा लंबा होता है ।

२. दोनों हाथों को फैलाने पर मिलने वाली लंबाई लगभग अपने शरीर की लंबाई के बराबर होती है ।

३. छींकते समय अपनी आँखें खुली रखना लगभग असंभव होता है ।

४. रोने के लिए ४३ स्नायुओं की जबकि हँसने के लिए १७ स्नायुओं की आवश्यकता होती है ।

५. प्रत्येक मनुष्य की उँगलियों के निशान अलग होते हैं ।

६. स्वस्थ व्यक्ति २४ घंटे में लगभग २३ हजार बार साँस लेता है ।

७. दस बजकर दस मिनट के समय पर घड़ी की तीनों सुइयाँ और सभी अंक दिखाई देते हैं ।

८. चूहा लगभग ५० फीट ऊँचाई से कूद सकता है ।

९. एक स्वस्थ मनुष्य की नाड़ी एक मिनट में ७२ बार चलती है ।

१०. गिलहरी बीज मिट्टी में दबाकर भूल जाती है । कालांतर में यही बीज पेड़ बनते हैं ।

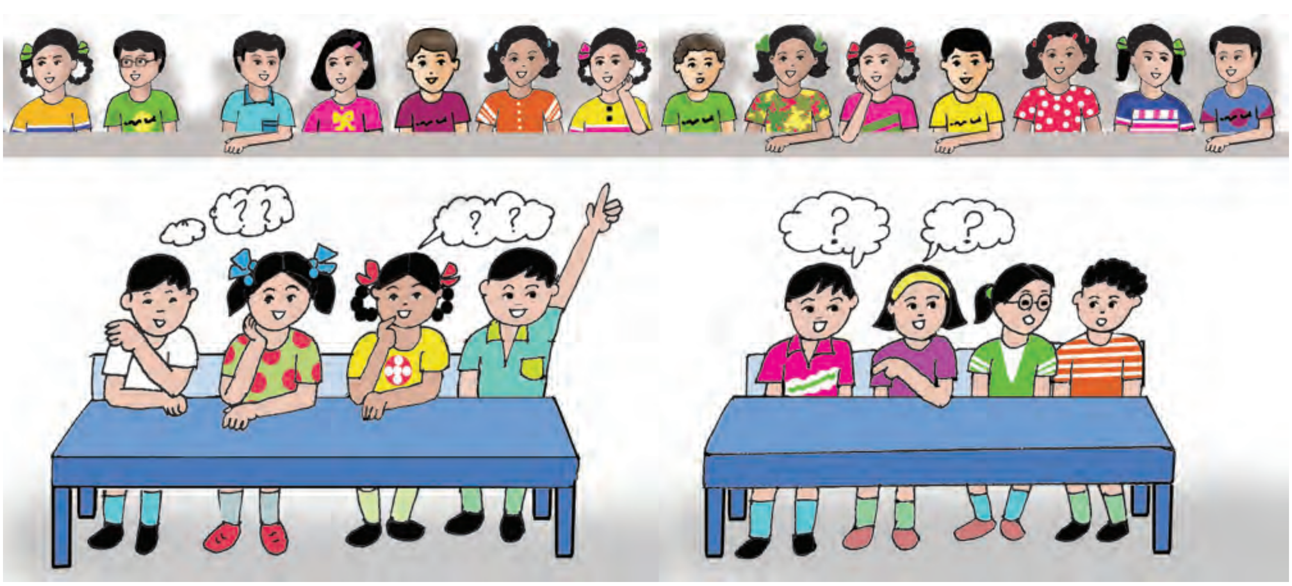

❑ पाठ का मुखर, मौन वाचन कराएँ । पाठ में आए मुद्दों पर विद्यार्थियों से चर्चा करें । ऐसी ही अन्य जानकारियों का संग्रह कराएँ ।

● **कला – पढ़ो, समझो और लिखो :**

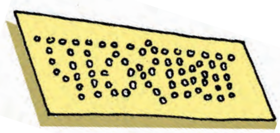

८. नन्हीं जादूगरनी

कक्षा के सभी विद्‌यार्थी बड़े खुश थे । आज कक्षा में पूर्वा उन्हें जादू दिखाने वाली थी । वे तरह-तरह के अनुमान लगाते हुए आपस में धीरे-धीरे फुसफुसा ही रहे थे कि पूर्वा आ गई । उसके हाथ में कुछ कागज, रंग और ब्रश थे । बच्चे कुछ कहें; उसके पहले ही पूर्वा बोल उठी, “जादू का खेल तैयार है ।” सभी और नजदीक आ गए । पूर्वा ने टेबल पर एक कोरा कागज रख दिया फिर उसके ऊपर ६”x३” साईजवाले कार्ड पर पेपर का दूसरा टुकड़ा रखा । सभी बच्चे बड़े ध्यान से देख रहे थे । पूर्वा ने ब्रश रंग में डुबोया और कार्ड पेपर पर घुमाने लगी । कुछ बच्चे हँस पड़े । बोले, “इसमें क्या जादू है ?” तभी पूर्वा ने ऊपर का कार्ड पेपर उठा लिया । यह क्या ? नीचे वाले कागज पर सुंदर अक्षरों में ‘ 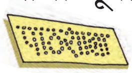 ’ लिखा था । ‘पाठशाला’ लिखा देखकर सभी बच्चे दंग रह गए । पूर्वा बोली, “देखा, नीचेवाले कागज को बिना छुए ही ‘पाठशाला’ लिख दिया ।”

सभी एक साथ बोल उठे, “पूर्वा ! मुझे भी जादू सिखाओ, मुझे भी जादू सिखाओ ।” पूर्वा बोली, “इसमें कोई जादू-वादू नहीं है । तुम सब भी इसे आसानी से कर सकते हो ।” सभी एक साथ उछल पड़े, “सिखाओ पूर्वा, सिखाओ पूर्वा ।” पूर्वा बोली, “सुनो, मैंने क्या-क्या किया ? मैंने ६”x३” का एक कार्ड पेपर लिया । उसपर पाठशाला लिखा । उसकी रेखाओं पर समान दूरी पर आर-पार थोड़े चौड़े छेद किए । अब यह स्टेन्सिल बन गई । इस स्टेन्सिल को सादे कागज पर रखकर उसपर रंग में डुबोया हुआ ब्रश घुमाया । स्टेन्सिल के छिद्रों से रंग नीचे उतरकर कागज पर बन गया ‘पाठशाला’ शब्द । इसी तरह तुम सब वर्णों, शब्दों की स्टेन्सिल बनाकर सुंदर कलाकृति बना सकते हो ।”

❑ उचित उच्चारण, आरोह- अवरोह के साथ पाठ का मुखर वाचन कराएँ । पाठ में आए संदर्भानुसार वर्णों, शब्दों की स्टेन्सिल बनवाकर उनकी छाप विद्‌यार्थियों से उनकी कॉपी में बनवाएँ । विद्‌यार्थियों से वर्णकार्ड, शब्दकार्ड और वाक्यपट्‌टी आदि अध्ययन सामग्री बनवाएँ ।

● **निबंध – पढ़ो, समझो और लिखो :**

९. सच्चा साथी नीम

नीम मूलतः भारत की धरती का पेड़ है । नीम के पेड़ सदाबहार होते हैं । बैसाख-जेठ की झुलसा देने वाली गरमी में यह लोगों को अपनी छाया की शीतल फुहार से नहला देता है । भारत में तो यह सभी भागों और क्षेत्रों में पाया जाता है । हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में इसे 'नीम' कहते हैं ।

वृक्षों में नीम वैद्य है । नीम का प्रत्येक अंग, रोग का नाशक है । इससे बनी सारी वस्तुओं से बीमारी दूर होती है । नीम की छाल घिसकर फोड़े-फुंसियों पर लगा दी जाती है । नीम के फलों को निबौली कहते हैं । निबौली का तेल और नीम की पत्तियों का चूर्ण घावों को ठीक करता है । नीम की दातौन दाँतों के स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ होती है । नीम की पत्तियों को कोठार में रखकर अनाज भर देते हैं । इससे अनाज में इल्लियाँ या कीड़े-कीट नहीं पड़ते ।

लोक संस्कृति ने नीम को बहुत प्रेम के साथ अपनाया है । इसपर अनेक पखेरू अपना रैनबसेरा करते हैं । चहचहाती चिड़ियों का यह घर बन जाता है । ये जीव पर्यावरण में संतुलन बनाए हुए हैं ताकि मनुष्य की साँस चलती रहे और वह जीवन का छंद गाता रहे ।

नीम ने सड़कों को छाया दी है । राहगीरों को आराम के क्षणों में घर सरीखा सुख दिया है । पुराने जमाने में गाँव की चौपाल नीम के पेड़ के नीचे जमती थी । नीम आदमी का सच्चा साथी है । नीम की छाया, माँ के आँचल की छाया के समान होती है । घर के आस-पास नीम का पेड़ हो तो वातावरण प्रदूषणरहित रहता है । नीम किसी की देखरेख का मोहताज नहीं । यह भारतीय किसान और गाँव के भोले मन का प्रतीक है ।

– डॉ. श्रीराम परिहार

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ निबंध का वाचन कराएँ । नीम के बारे में विद्यार्थियों से ५ से ८ वाक्य बोलने के लिए कहें । नीम की उपयोगिता पर चर्चा करें । अन्य उपयोगी वृक्षों की जानकारी दें । इस तरह के अन्य निबंध पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।

स्वाध्याय

१. अंतरिक्ष के बारे में सुनो ।

२. शब्दों के लिंग बदलकर लिखो :

बनी, सारी, अपनाया, गाता रहे, मोर, हिरन, चुहिया, बंजारिन, मछुआरा, बरछी, देखी, बंदर, मुर्गा, बिल्ली ।

३. उचित विरामचिह्न लगाकर वाक्यों को पढ़ो : (“ ”), (‘ ’)

(क) काल करे सो आज कर आज करे सो अब पल में परलै होयगी बहुरि करोगे कब

(ख) रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाइ टूटे से फिरि ना जुरै-जुरै गाँठ परि जाइ

४. उत्तर लिखो :

(च) नीम लोगों को कब और कैसे नहला देता है ?

(छ) लोक संस्कृति ने नीम को कैसे अपनाया है ?

(ज) नीम किन-किन रोगों को ठीक करता है ?

(झ) क्या करने से अनाज में कीड़े-कीट नहीं पड़ते ?

(ञ) नीम ने लोगों को क्या-क्या दिया है ?

५. चित्र पहचानकर नाम बताओ और चौखट में लिखो :

६. अपने पुराने लेकिन अच्छे कपड़ों, खिलौनों का तुम क्या करते हो, बताओ ।

सचिन रमेश तेंडुलकर

जन्म दिनांक : २४ अप्रैल १९७३

प्रथम टेस्ट मैच : १५ नवंबर १९८९ वि. पाकिस्तान

प्रथम अंतरराष्ट्रीय एक दिवसीय मैच : १८ दिसंबर १९८९ वि. पाकिस्तान

एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों में शतक ४९

एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों में अर्धशतक ९६

टेस्ट शतक ५१

एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों में रन संख्या १८,४२६

टेस्ट रन १५,९२१

अंतिम टेस्ट मैच :

१४ नवंबर २०१३ वि. वेस्ट इंडीज

अंतिम एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच :

१८ मार्च २०१२ वि. पाकिस्तान

सचिन तेंडुलकर को मिला 'भारत रत्न' ।
सबसे युवा 'भारत रत्न' पुरस्कार प्राप्तकर्ता

विश्व कीर्तिमान

- एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों में दोहरा शतक बनाने वाले प्रथम खिलाड़ी
- सबसे अधिक टेस्ट मैच एवं एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने वाले खिलाड़ी
- अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सौ शतक बनाने वाले एकमात्र क्रिकेट खिलाड़ी
- टेस्ट क्रिकेट में ५० शतक बनाने वाले एकमात्र खिलाड़ी
- टेस्ट मैच में १५,००० रन बनाने वाले प्रथम बल्लेबाज
- अब तक सबसे अधिक विश्व कीर्तिमान बनाने का विश्व कीर्तिमान

सम्मान

- अर्जुन पुरस्कार
- राजीव गांधी खेल रत्न
- पद्‌मश्री
- महाराष्ट्र भूषण
- पद्‌मविभूषण
- भारतरत्न

समाचारपत्र के कट आउट्स, चित्र, फोटो, लेख आदि की कलात्मक प्रस्तुति को समुच्चित चित्रकला (कोलाज) कहते हैं । तुम किसी एक विषय या विषयों एवं संकल्पनाओं को भी लेकर एक कोलाज बना सकते हो ।

मेरा प्रिय क्रिकेट खिलाड़ी

मर्मस्पर्शी विदाई भाषण

सचिन ने उनके जीवन में योगदान देने वाले सभी व्यक्तियों, अपने माता-पिता, पारिवारिक सदस्यों, रिश्तेदारों, मित्रों, अपने शिक्षक, डॉक्टर्स, प्रशिक्षकों, प्रबंधकों, संचार माध्यमों और अन्य व्यक्तियों जिन्होंने किसी भी रूप में सहायता की है, सभी के प्रति आभार प्रकट किया ।

सचिन ! हमें आप पर गर्व है ।

सचिन के पिता, प्रा. रमेश तेंडुलकर का देहावसान उस समय हुआ जब १९९९ का विश्व कप मैच चल रहा था । सचिन केवल कुछ समय के लिए ही भारत आए और तुरंत लौट गए । केनिया के खिलाफ अगले ही मैच में उन्होंने शतक (१०१ गेंदों में अविजित १४०) बनाया । यह शतक उन्होंने अपने पिता को समर्पित किया ।

अपने विदाई भाषण में सचिन ने अपने 'सर' - श्री रमाकांत आचरेकर - के बारे में कहा ....

"सर ने विगत २९ वर्षों में कभी भी नहीं कहा कि, 'शाबास, अच्छा खेले । शायद यह सोचकर उन्होंने कभी प्रशंसा नहीं की कि ऐसा कहने से मुझे संतुष्टि मिल जाएगी और मैं कठिन परिश्रम करना बंद कर दूँगा । अब वो अपनी शुभकामनाओं को बढ़ाते हुए आशीर्वचन के रूप में मेरे खेल जीवन के बारे में कह सकते हैं कि 'शाबास, बहुत अच्छे !' क्योंकि, सर अब मैं अपने जीवन में और मैच नहीं खेलने वाला हूँ । मैं हमेशा क्रिकेट का दर्शक बना रहूँगा और क्रिकेट हमेशा मेरे हृदय में रहेगा । मेरे क्रिकेट जीवन में आपका योगदान अतुलनीय है । आपको बहुत-बहुत धन्यवाद !"

सचिन की एक प्रशंसिका ने अपने 'प्रिय क्रिकेटर' के जीवन और कार्य पर यह कोलाज बनाया है । तुम भी अपने किसी प्रिय खिलाड़ी या व्यक्तित्व के बारे में 'कोलाज' बना सकते हो ।

● व्यावहारिक सृजन – देखो, समझो और लिखो :

११. मीठे बोल

बलराम जी उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे । इन दिनों हरियाणा से उनकी बहन मैनादेवी आई हुई थीं । बलराम जी के पोता-पोती गोपाल और वैदेही की पाठशाला में आज वार्षिक उत्सव था । वे दोनों जल्दी पाठशाला चले गए थे। इतने में दूसरी पाठशाला में पढ़ने वाले उनके मित्र नवजोत और रुक्मिणी आ गए । नवजोत पंजाब का और रुक्मिणी गुजरात की रहनेवाली थी ।

नवजोत ने दादा जी से पूछा, " आज साड्डे मित्तर छत्ती किंद चले गए ?" (आज हमारे मित्र जल्दी कैसे चले गए ?) मैना देवी बोली, "उंका सकूल में आज बारशिक उत्सव थो, सो वा जलदी चल्या गया ।" (उनकी पाठशाला में आज वार्षिक उत्सव था इसलिए वे जल्दी चले गए ।) रुक्मिणी बुदबुदाई, "वैदेही काले मलि पण कई बोलि नई ।"(वैदेही कल मिली थी पर कुछ बोली नहीं ।)

दोनों बच्चे बुजुर्गों को नमस्कार करके अपनी पाठशाला की ओर चले तो बलराम जी आशीर्वाद देते हुए बोले, "खूब पढ़ा, खूब बड़ा हो । रास्ता मा सम्हारि के जाया दोनउ जन ।" (खूब पढ़ो, बहुत बड़े बनो । रास्ते में दोनों सँभलकर जाना ।) रुक्मिणी और नवजोत सोच रहे थे कि भारत की अलग-अलग बोलियों और भाषाओं में कितनी समानता और मिठास है । हम सबने अलग-अलग बोली भाषा का प्रयोग किया फिर भी आसानी से एक-दूसरे की बात समझ गए । सचमुच भाषा संवाद के लिए होती है, विवाद के लिए नहीं ।

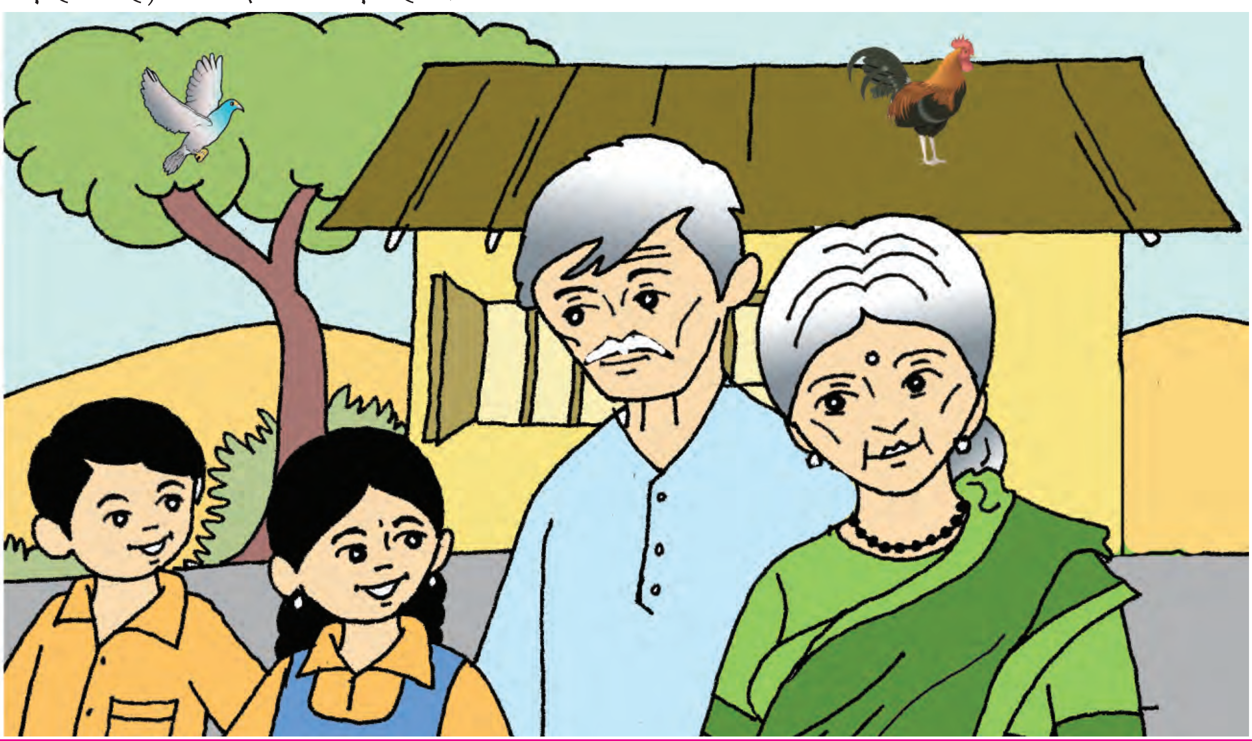

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ वाचन करें । प्रत्येक विद्यार्थी से उनकी बोली के एक-एक वाक्य बुलवाकर उन वाक्यों का हिंदी मानकरूप में रूपांतरण कराएँ । शरीर के अवयव एवं बोलियों के दैनिक व्यवहार के शब्दों एवं उनके मानक रूपों पर चर्चा करें । छोटे परिवार और बड़े परिवार पर तुलनात्मक सोदाहरण चर्चा करें/ कराएँ । तुम्हारे परिसर में बोली जाने वाली बोली-भाषा के नाम लिखो ।

स्वाध्याय

१. पृथ्वी के बारे में सुनो ।

२. किसी बंदरगाह के बारे में पढ़ी हुई जानकारी बताओ ।

३. घोषवाक्यों को पढ़ो और संकलन करो ।

४. उत्तर लिखो :

(क) बलराम जी कहाँ के रहने वाले थे ?

(ख) किनकी पाठशाला में वार्षिक उत्सव था ?

(ग) नवजोत ने दादा जी से क्या पूछा ?

(घ) समानता और मिठास किसमें है ?

(ङ) भाषा किसके लिए होती है ?

५. चित्र देखकर इनसे संबंधित एक-एक वाक्य बताओ :

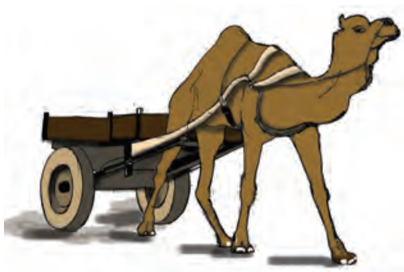

६. तुम्हारे पड़ोस की छोटी बच्ची पाठशाला नहीं जाती, उसे पाठशाला ले जाने के लिए तुम क्या करोगे, बताओ :

(च) उसे प्यार से समझाओगे ।

(छ) उसे डराओगे ।

(ज) उसे चॉकलेट देकर फुसलाओगे ।

(झ) पाठशाला का महत्व बताओगे ।

(ञ) साथ में लेकर पाठशाला जाओगे ।

✻ पुनरावर्तन ✻

✻ इस पहेली में मुहावरे दिए गए हैं । आड़े–खड़े–तिरछे बक्से बनाकर उचित मुहावरे ढूँढ़ो :
(उदाहरण के रूप में मुहावरे का एक बक्सा दिया गया है ।)

जी	य	धु	चौ	रा	र	व	प्रा	ल	गि
आँ	चु	भ	न	य	ह	णों	स	ड़	रं
खें	च	रा	क	का	की	दे	गि	ती	गो
म	छ	झ	ना	आ	प	ड़ा	ख	क	में
ट	ज	र	हु	ल	क	क्का	ह	ना	रं
का	स	ति	व	र	ना	र	हो	ज़	ग
ना	दे	ड़	क	खा	ढा	ओ	प	ना	जा
ना	आ	ह	दि	ना	अ	फ	ब	भ	ना
ई	ना	खें	मुँ	ह	में	पा	नी	आ	ना
प	आँ	ह	ल	मा	न	ठ	म	स	दाँ
आँ	क्ष	दू	त	गे	हा	औ	ब	ए	त
ह	खें	खा	ठ	का	र	क	ष	ऐ	दि
ती	ना	खो	ल	ट	ले	ह	श	क	खा
ण	ड	गा	ल	ना	द	बा	ना	री	ना
ली	ना	र	भा	ना	हो	श	में	आ	ना

✻ पुनरावर्तन ✻

१. सिंदबाद की सुनी हुई कोई एक कहानी सुनाओ ।
२. देखी हुई विज्ञान प्रदर्शनी के बारे में बताओ ।
३. साहसी बच्चों को दिए जाने वाले शौर्य पुरस्कार की जानकारी पढ़ो ।
४. मैदानी और अंतर्गृही खेलों के दस-दस नाम लिखो ।
५. निम्नलिखित वर्ग पहेली में संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द ढूँढ़कर उनपर गोल बनाओ :

श	अ	ज्जू	प्प	ट्टू	अ
स	क्ति	च्छा	ट	वि	ग्नि
ग	ख्त	स	त्य	द्या	घ्न
ड्ढा	कु	र्ता	ग	स	भ्य
ब	न्ना	ध्या	थ्य	फ्फा	ब्बा
ग	प्पा	क्क	न	अ	र

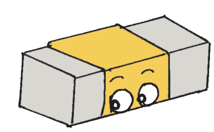

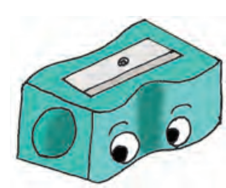

उपक्रम

माँ-पिता जी से पारिवारिक संस्कारों के बारे में सुनो ।

बड़ों से सीखकर तुमने किन गुणों को अपनाया है, बताओ ।

समाचारपत्र में खेल समाचारों का पृष्ठ पढ़ो ।

अपने घर का पता पिनकोडसहित (रास्ता, गाँव का नाम आदि) लिखो ।

● **चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :**

१. संचार के साधन

संचार साधनों का देखो जोर । संदेश पहुँचाते चारों ओर ।।

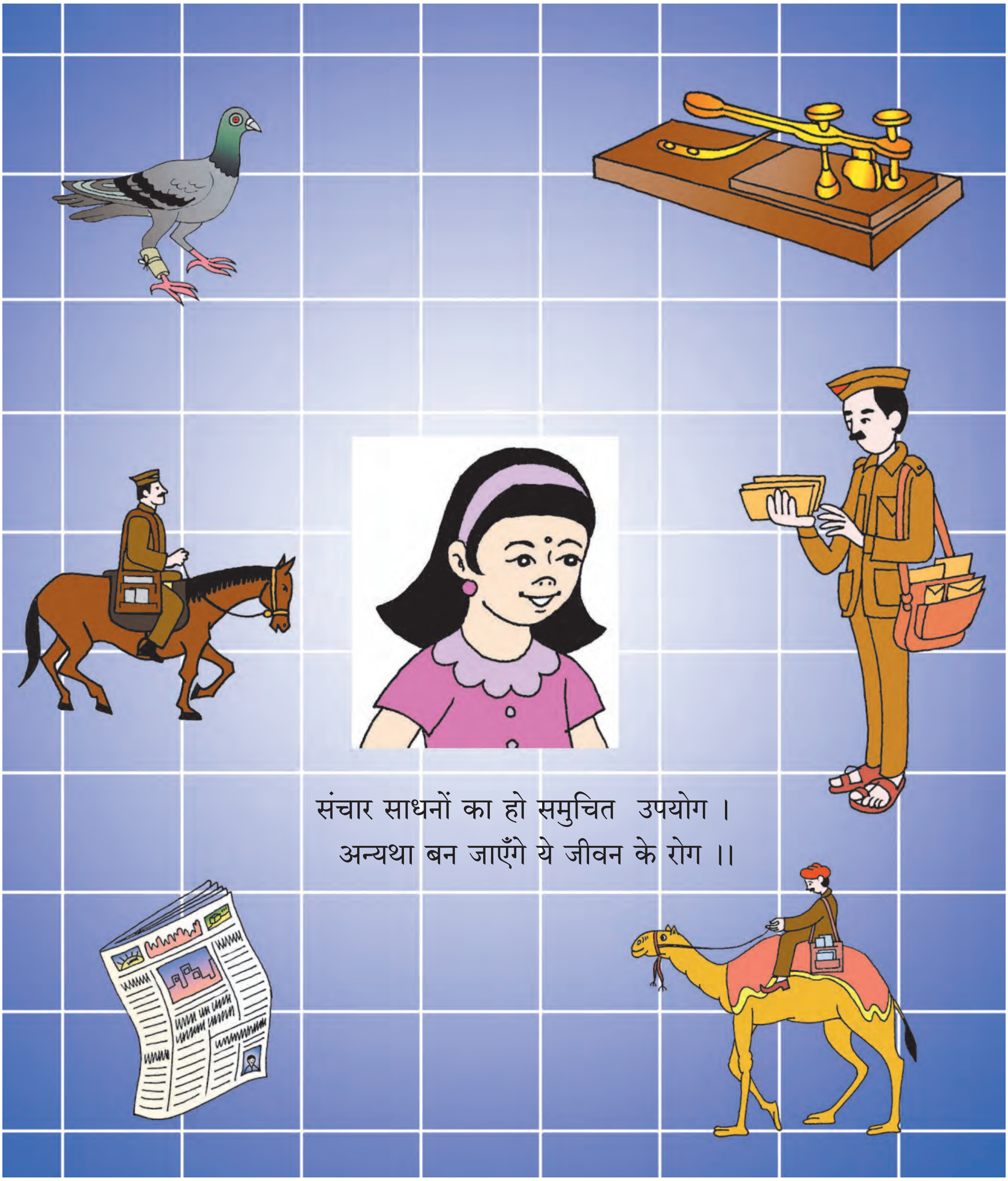

❑ विद्‌यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण करवाकर चर्चा कराएँ एवं उनको प्रश्न पूछने के लिए कहें । संचार के प्राचीन साधनों एवं उनके उपयोग पर चर्चा करें/कराएँ । संचार के अन्य साधनों की जानकारी दें । परिचित डाकिये से उनके कार्य के बारे में बातचीत कराएँ ।

चौथी इकाई

रेडियो, मोबाइल, टीवी चहुँ ओर । झटपट जोड़ें दुनिया के छोर ।।

❑ चित्रों में दिए गए वाक्यों पर चर्चा करवाएँ । इसी प्रकार के अन्य वाक्य सुनाएँ और कहलवाएँ । विद्‌यार्थियों को कौन-कौन से संचार के माध्यम पसंद हैं और क्यों, पूछें । दूरदर्शन, मोबाइल, इंटरनेट के अधिक उपयोग से होने वाले नुकसान पर चर्चा करें ।

● श्रवण – सुनो और गाओ :

२. प्यारा भारत देश हमारा

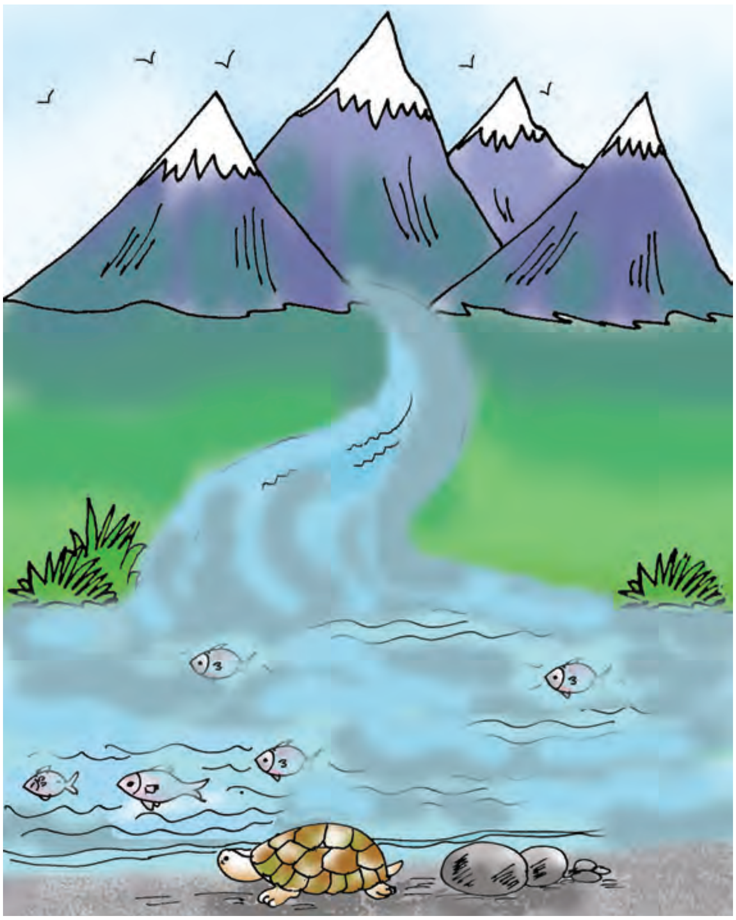

भारत देश हमारा,
प्यारा भारत देश हमारा ।

खेल रही हैं गोद में इसकी,
ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी,
गोदावरी, नर्मदा, सतलज,
ताप्ती, सिंधु लगाती फेरी ।

हिमगिरि चीर अनवरत बहती,
गंगा की पावन धारा ।

हैं अनेक जातियाँ, अनेकों,
धर्म मानते लोग यहाँ,
भाषा भिन्न और पहनावे,
विविध दीखते जहाँ-तहाँ

हम अनेक पर सदा गूँजता
यहाँ एकता का नारा ।

– सभाजीत मिश्र

❑ उचित हाव-भाव से कविता का पाठ करें और विद्यार्थियों से कई बार सस्वर पाठ करवाएँ । उचित लय-ताल में सामूहिक गुट, एकल में पाठ करवाएँ । उनसे छोटे-छोटे प्रश्न पूछें और उत्तर प्राप्त करें । देशभक्ति की अन्य कविताएँ पढ़ने के लिए कहें ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' के प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।

स्वाध्याय

१. **देशभक्ति के गीत सुनो और सुनाओ ।**

२. **निम्नलिखित शब्दों को वर्णमाला के क्रम में लगाओ :**

मचान, यति, पथिक, बालक, फाटक, भोर, हलधर, शोध, षडयंत्र, समीर, वरदान, लघु ।

३. **किसी साहित्यकार की जीवनी पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) हमारा भारत देश कैसा है ?

(ख) भारत की गोदी में कौन-कौन-सी नदियाँ हैं ?

(ग) अनवरत कौन बहती है ?

(घ) भारत में क्या-क्या भिन्नताएँ दीखती हैं ?

(ङ) एकता का नारा कहाँ गूँजता है ?

५. **चित्र देखकर त्योहारों एवं उत्सवों के नाम बताओ :**

६. **मेले में किसी को जेब काटते हुए देखकर तुम क्या करोगे ?**

● **वाचन – पढ़ो और बोलो :**

३. तीन मूर्तियाँ

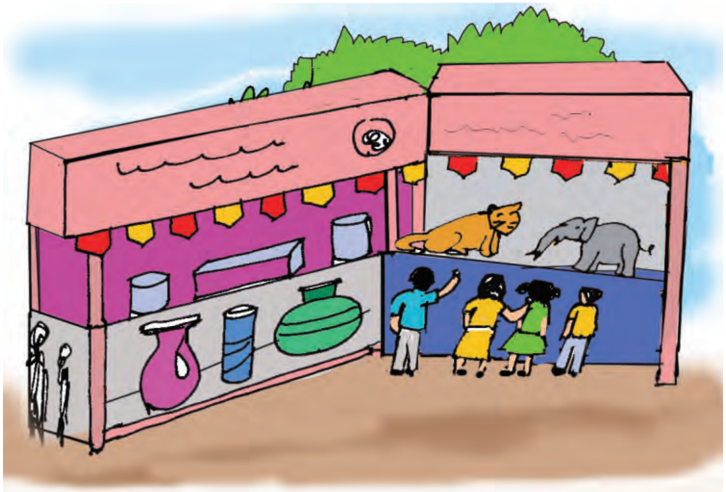

शहर में विशाल मेला लगा था । मेला देखने के लिए बच्चों की भीड़ उमड़ पड़ी थी । मेले में अलग-अलग मंडप और झाँकियाँ थीं । एक मंडप में विभिन्न कलाकारों द्‌वारा बनाई मूर्तियाँ थीं। एक-से-एक खूबसूरत मूर्तियों को देखकर बच्चे खुश हो रहे थे । मंडप की तीन मूर्तियों पर सब की आँखें गड़ी हुईं थीं । ये तीन मूर्तियाँ एक जैसी थीं पर हर एक के गले में लटके कागज पर कीमत अलग-अलग लिखी हुई थी ।

बच्चों ने मूर्तिकार से पूछा, "मूर्तियाँ जब एक जैसी हैं तो कीमत में अंतर क्यों ?" कलाकार ने बच्चों के सवाल का जवाब देने के लिए बाँस की पतली और बड़ी-सी सलाई ली और पहली मूर्ति के कान में डाली । यह सलाई मूर्ति के दूसरे कान से बाहर निकल गई । दूसरी मूर्ति के कान में भी सलाई डाली, वह उसके मुँह से निकल गई । तीसरी के कान में सलाई डाली, वह अंदर ही रह गई ।

कलाकार ने अब बताया कि तीनों मूर्तियाँ भले ही एक जैसी दीखती हैं, लेकिन सलाई डालते ही तीनों के अंतर का पता चल जाता है । जिस मूर्ति के कान में डाली गई सलाई दूसरे कान से निकल गई उसकी कीमत पचास रुपये इसलिए है क्योंकि यह कुछ भी ग्रहण नहीं करती है । दूसरी की कीमत पाँच सौ रुपये इसलिए है कि यह सुनकर कुछ ग्रहण करती है । तीसरी की कीमत पाँच हजार रुपये इसलिए है क्योंकि यह सुना हुआ पूरा ग्रहण करती है ।

कलाकार ने फिर कहा, "इसी तरह आदमी भी तीन तरह के होते हैं । जो एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता है; वह कभी समझदार नहीं हो सकता । जो एक कान से सुनकर मुँह से निकाल देता है; वह थोड़ा समझदार होता है । जो एक कान से सुनकर मन में धारण कर लेता है; वह पूरा समझदार होता है ।"

❑ कहानी का मुखर वाचन कराएँ । विद्‌यार्थियों से उनके शब्दों में कहानी कहलवाएँ । उन्हें प्रत्येक कार्य समझदारी से करने के लिए प्रेरित करें । छात्रों को अच्छी आदतों की जानकारी दें । इस तरह की अन्य नीतिपरक कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।

स्वाध्याय

१. देशभक्तिपरक कोई एक कहानी सुनाओ ।

२. उत्तर दो :

(क) बच्चों की भीड़ क्यों उमड़ पड़ी थी?

(ख) मंडप में क्या सजी थीं ?

(ग) तीनों मूर्तियों के अंतर का पता कैसे चला ?

(घ) तीसरी मूर्ति की कीमत पाँच हजार रुपये क्यों थी ?

(ङ) पूरा समझदार कौन होता है ?

३. 'नदी की आत्मकथा' पढ़ो ।

४. रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(च) शहर में .... था ।

(छ) मंडप की तीन .... गड़ी हुईं थीं ।

(ज) कलाकार ने बच्चों के सवाल का जवाब देने के लिए बाँस की .... ली ।

(झ) वह कभी .... नहीं हो सकता ।

(ञ) जो एक कान से सुनकर .... थोड़ा समझदार होता है ।

५. चित्र देखकर खेल का नाम बताओ :

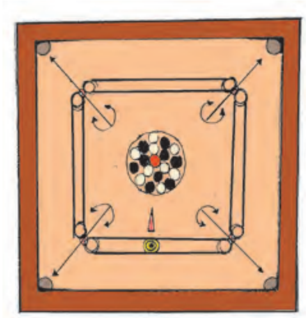

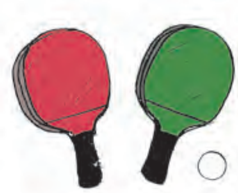

६. तुम कुछ खा रहे हो और कोई बच्चा ललचाई दृष्टि से तुम्हारी ओर देख रहा है तो तुम्हारे मन में कौन-से भाव उत्पन्न होंगे, बताओ ।

● वाचन – पढ़ो, समझो और लिखो :

४. बचत

(लक्ष्मण पढ़ रहा है । मुखौटा लगाए पात्र एक-एक कर मंच पर प्रवेश करते हैं ।)

बिजली – मैं बिजली हूँ; बिजली ! तुम लोग मेरा बहुत दुरुपयोग करते हो ।

पानी – और मैं हूँ पानी, सबसे अधिक व्यर्थ मुझे ही समझा जाता है । घर हो या बाहर, जहाँ देखो वहीं; तुम नल खुला छोड़ देते हो । इसलिए हम हड़ताल पर जा रहे हैं ।

लक्ष्मण – तुम हड़ताल पर मत जाओ वरना हम असहाय हो जाएँगे ।

पानी – अब बूँद-बूँद पानी के लिए तरसो ।

गैस – मैं रसोई गैस हूँ । बिजली-पानी की तरह लोग मेरा भी बहुत दुरुपयोग करते हैं ।

लक्ष्मण – तो क्या तुमने भी हड़ताल कर रखी है ?

गैस – हाँ ! अब तुम अपने-आप को कोसते रहो ।

पेट्रोल – और मैं पेट्रोल हूँ; पेट्रोल ! तुम लोग जिस तरह से मेरा अपव्यय कर रहे हो, उससे तो मैं हमेशा के लिए समाप्त हो जाऊँगा ।

लक्ष्मण – हमको तुम सबकी आवश्यकता है ।

पेट्रोल – बिजली, पानी, गैस और मेरी, हम सभी की बस एक ही शर्त है कि लोगों को हमारा अपव्यय रोकना होगा । अच्छे भविष्य के लिए हमारी बचत अनिवार्य है ।

लक्ष्मण – मनुष्य को यह शर्त स्वीकार है ।

बिजली, पानी, गैस – तो समझो कि हमारी हड़ताल भी खत्म !

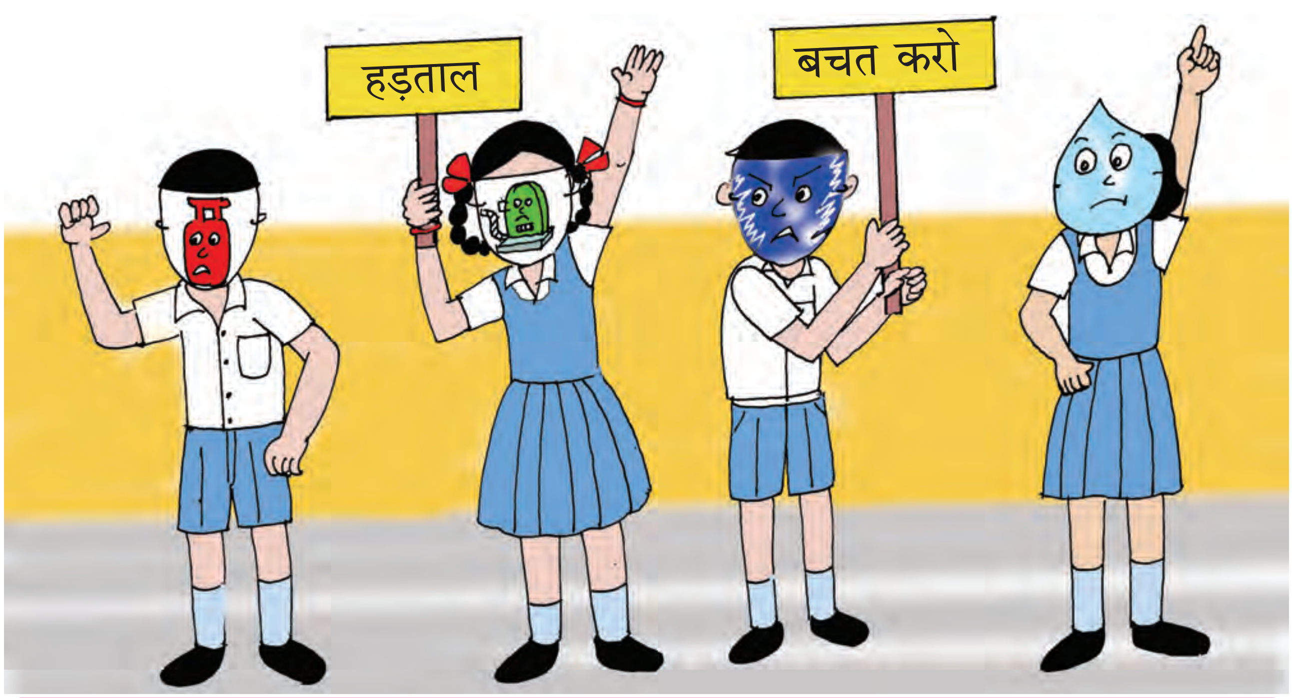

❑ उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ पाठ का वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । मौन वाचन हेतु प्रेरित करें । उपरोक्त संवाद का विद्यार्थियों से नाट्यीकरण कराएँ । जीवनावश्यक वस्तुओं पर चर्चा करते हुए उनका महत्त्व समझाएँ ।

स्वाध्याय

१. **किसी देखे/सुने हुए बाल नाटक का अंश सुनाओ ।**

२. **बरसात के पहले दिन का अनुभव बताओ ।**

३. **किसी वैज्ञानिक का संस्मरण पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) मुखौटा लगाकर कौन प्रवेश करते हैं ?

(ख) सबसे अधिक व्यर्थ किसको समझा जाता है ?

(ग) लोग किस–किसका दुरुपयोग करते हैं ?

(घ) पेट्रोल ने पहली बार क्या कहा ?

(ङ) सभी ने कौन–सी शर्त रखी ?

५. **चित्र देखकर तिलहनों के नाम बताओ :**

६. **तुम्हारी जानकारी में मिलावट किन–किन वस्तुओं में होती है, इससे बचने के लिए तुम कौन–कौन–सी सावधानी रखोगे, बताओ ।**

● पंचमाक्षर – सुलेखन करो :

५. कठपुतली

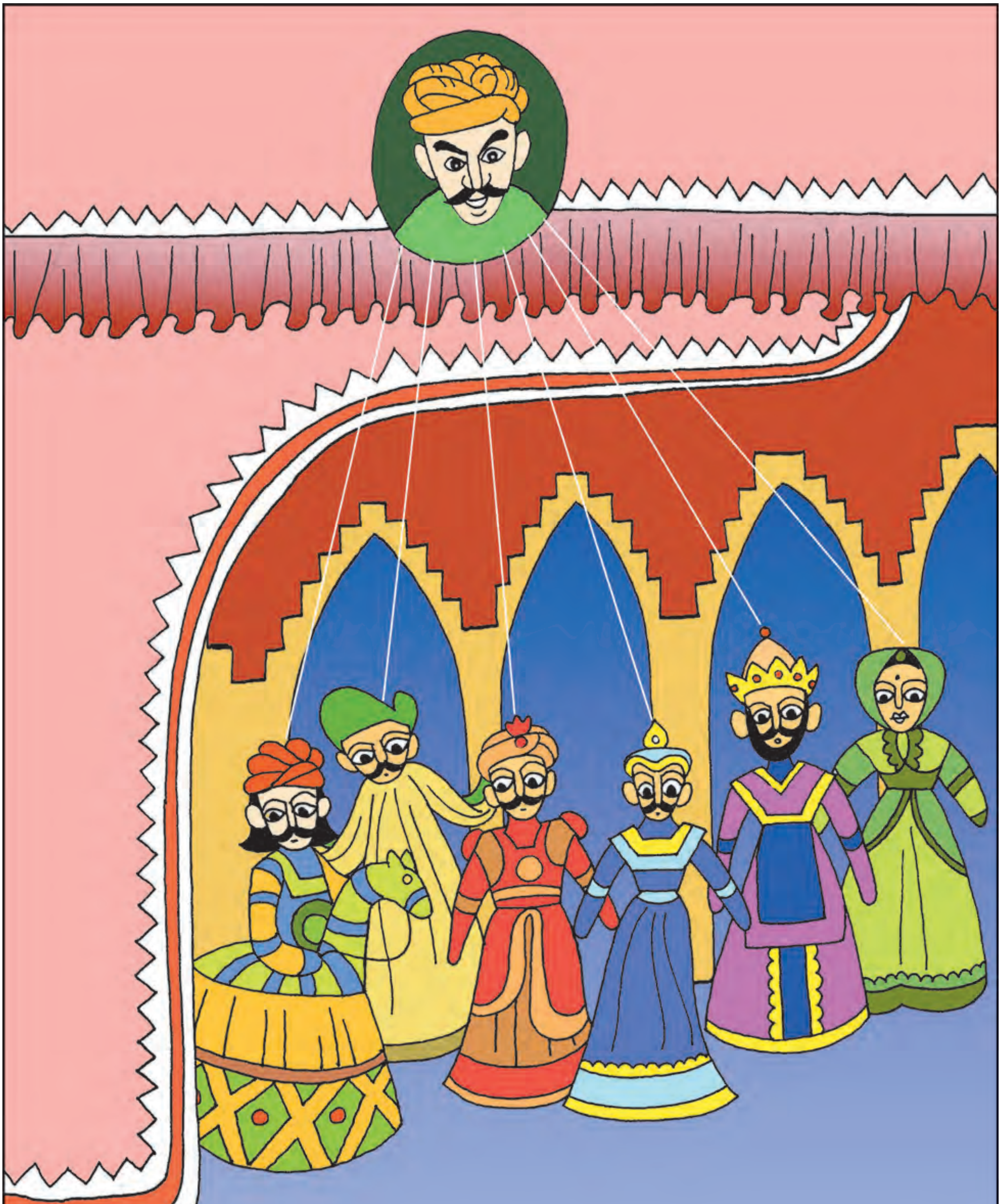

पंचमाक्षरों के मेल से बनने वाले शब्दों से सभी कठपुतलियों के नाम लिखो ।

❑ विद्यार्थियों से चित्रवाचन कराएँ । 'क' वर्ग और 'च' वर्ग आदि प्रत्येक वर्ग के अंत में आने वाले पंचमाक्षर और उनके अन्य चार वर्णों पर चर्चा कराएँ । ङ, ञ, ण, न, म से बनने वाले पंचमाक्षरयुक्त शब्द बताने के लिए कहें । उनका सुलेखन/श्रुतलेखन कराएँ ।

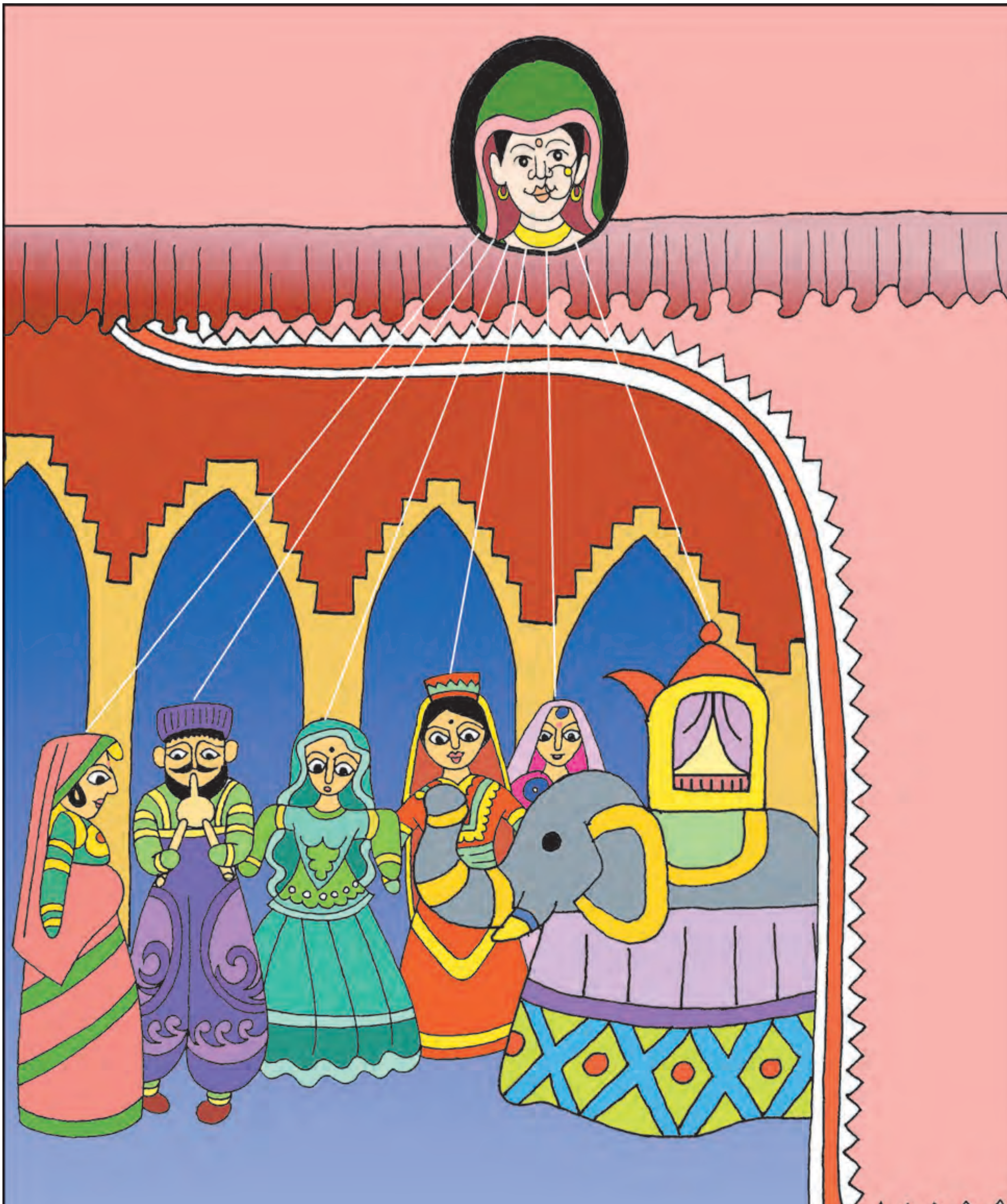

जैसे- अंगद, चंचल, पंढरी, नंदन, चंपा । (पंचमाक्षर - ङ,ञ,ण,न,म ।)

❑ क,च,ट,त,प, वर्ग के पंचमाक्षर ङ,ञ,ण,न,म हैं । ये अपने ही वर्ग के शेष चार वर्णों में से किसी भी वर्ण से मिले तो अनुस्वार उसके पहले वाले वर्ण पर लगता है । उदा.- शंख (शङ्ख), 'क' वर्ग का पंचमाक्षर 'ङ' वर्ण 'ख' से मिला है । अतः अनुस्वार पहले वर्ण 'श' पर लगा है । पंचमाक्षरयुक्त शब्दों का सामूहिक अनुकरण एवं मुखर वाचन करवाएँ । प्रत्येक विद्यार्थी को मौन वाचन करने का अवसर दें । उनसे पंचमाक्षर के प्रयोग पर चर्चा करें एवं समझाएँ । पाठ्यपुस्तक में आए हुए पंचमाक्षरयुक्त शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें और उनका लेखन करवाएँ ।

● **भाषा प्रयोग – पढ़ो, समझो और लिखो :**

६. आदमी और मशीन

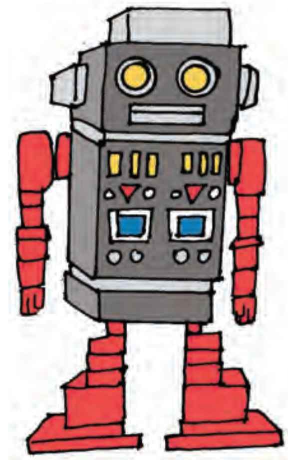

डॉ. स्वराली ने बाहर जाते समय अपनी बेटी शैली को सावधान किया कि वह रोबोट के साथ किसी तरह की छेड़छाड़ नहीं करेगी । बेटी तो ऐसे मौके की ताक में ही थी । उसके पास कई तरह के खिलौने थे । चाभीवाली कार, दूरबीन, कंप्यूटर गेम, साँप-सीढ़ी जैसे विभिन्न खिलौनों से खेल-खेलकर वह ऊब चुकी थी । उसने सोचा कि वह कोई नया खेल खेलेगी । माँ के सावधान करने के बावजूद उसने रिमोट हाथ में लेकर रोबोट को आदेश देना शुरू कर दिया । शैली की आज्ञा के अनुसार रोबोट ने बैठक की तिपाई को उठाकर बगीचे में रख दिया । दूसरी बार आज्ञा देने पर रोबोट

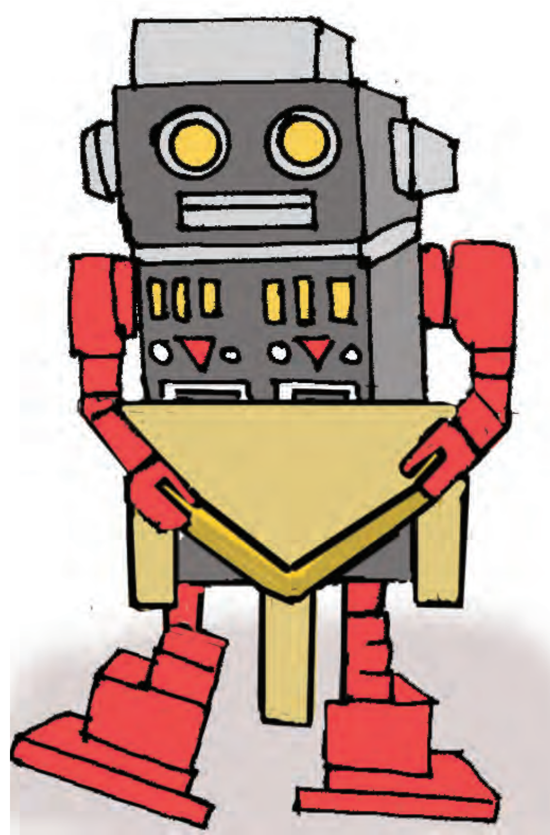

❑ पाठ का मुखर, मौन वाचन कराएँ । विद्‌यार्थियों से उनके प्रिय खिलौनों के बारे में पूछें । तीन प्रमुख 'काल' पर चर्चा करें । पाठ में आए भूत, वर्तमान, भविष्य काल के वाक्यों को लिखवाएँ । पाठ्‌यपुस्तक में से तीनों काल के दस-दस वाक्यों का संकलन कराएँ ।

ने फलों की डलिया रसोईघर से उठाकर बैठक में रख दी । शैली फूलकर कुप्पा हो गई । उसे लगा; जादू की छड़ी उसके हाथ आ गई है । वह रोबोट से मनचाहा काम करवा सकती है। अब उसने सोचा कि आदेश देकर रोबोट से अपना बस्ता मँगवा लेगी और फल खाते हुए अपना गृहकार्य करेगी । आदेश के अनुसार रोबोट बस्ता ले आया ।

अब वह जोश में आकर कुछ अद्भुत करतब करवाने की सोचने लगी । रिमोट उसके हाथ में था । वह रिमोट को उलट-पलटकर देखने लगी । अचानक रोबोट उठा और शैली की तरफ बढ़ा । इससे पहले कि वह कुछ समझ पाती रोबोट शैली को उठाकर घर के बाहर बगीचे में रख आया । शैली भौचक रह गई । उसे याद आया कि उसने रिमोट अपनी ओर घुमाया था तभी गलती से कोई बटन दब गया होगा । उसी का नतीजा उसे भुगतना पड़ रहा है ।

अब उसकी समझ में आ गया कि हर काम सोच-विचार कर करना चाहिए । आदमी और मशीन में यही अंतर है । मनुष्य किए जाने वाले काम के हर चरण पर विचार कर सकता है । मशीन के पास विचार की शक्ति नहीं होती, इसलिए वह दिया गया आदेश भर पूरा करती है ।

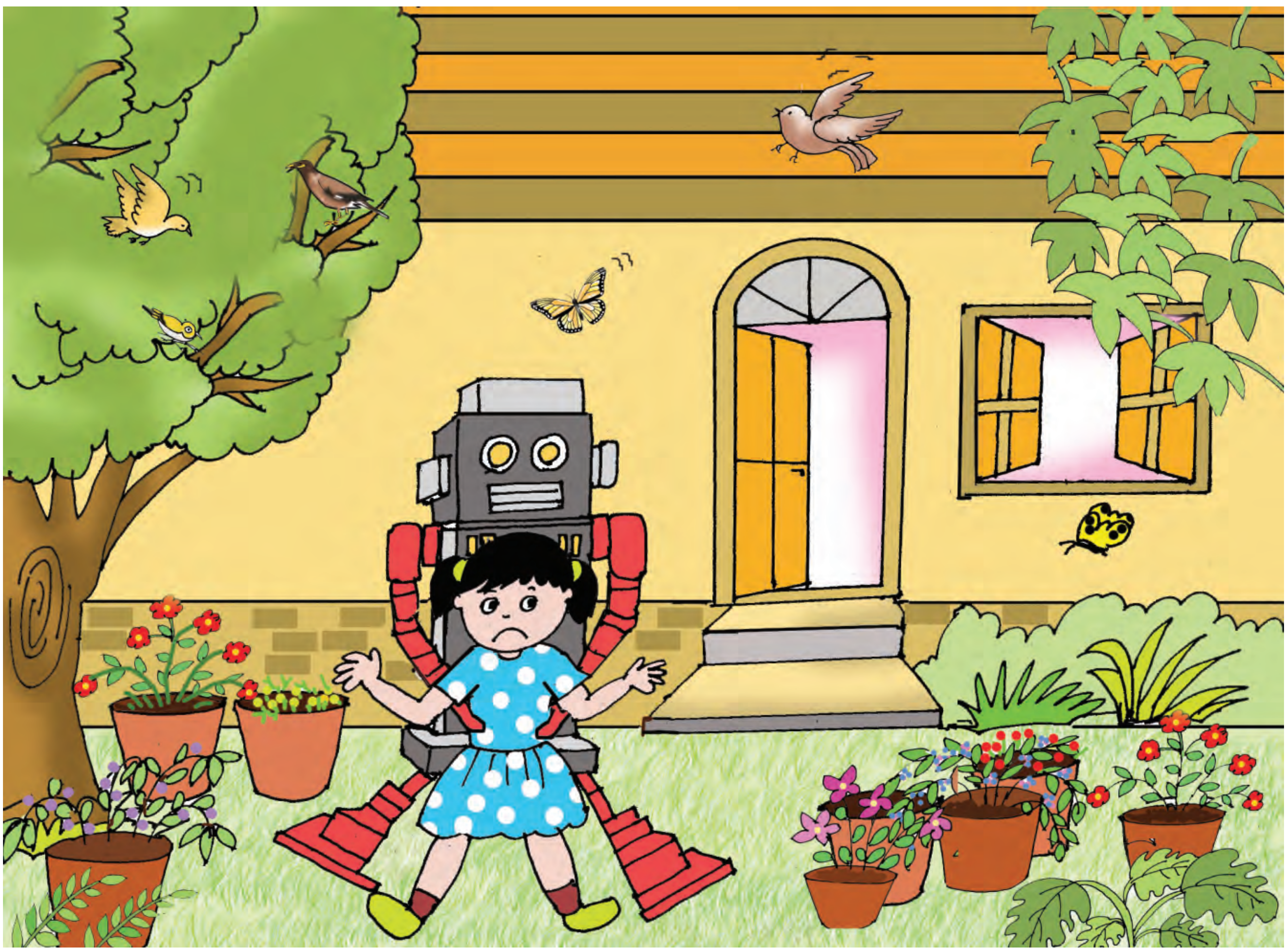

❑ विद्‌यार्थियों से प्रमुख तीन कालों के दो-दो वाक्य बोलने और लिखने के लिए कहें । कुछ वाक्यों का काल परिवर्तन कराके लिखने हेतु सूचना दें । विद्‌यार्थियों को विभिन्न 'स्वयंचलित यंत्रों' के उचित उपयोग करने हेतु आवश्यक सूचना दें ।

● आकलन – समझो और बताओ :

७. बूझो तो जानें !

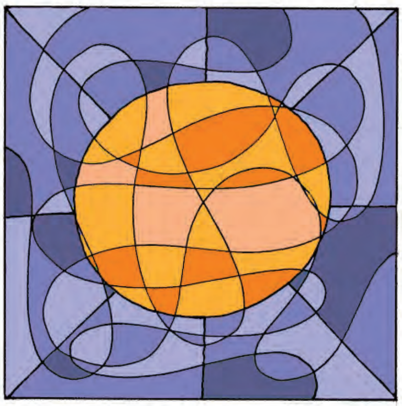

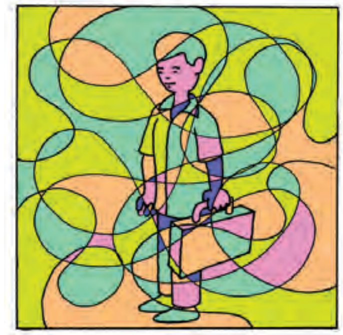

अंत कटे कौआ बन जाए,
प्रथम कटे दूरी का माप ।
मध्य कटे तो कार्य बने,
तीन अक्षर का उसका नाम ।

तीन अक्षर का उसका नाम,
आता है खाने के काम ।
अंत कटे हल बन जाए,
मध्य कटे तो हवा कहलाए ।

अपनों के ही घर यह जाए,
तीन अक्षर का नाम बताए ।
शुरू के दो अति हो जाए,
अंतिम दो से तिथि बताए ।

आपस में ये मित्र बड़े,
चार पड़े हैं चार खड़े ।
इच्छा हो तो उसपर बैठो,
या हैं मजे से सोए पड़े ।

बिना तेल के जलता है,
पैर बिना वह चलता है ।
उजियाला बिखेरता रहता,
अँधियारे को दूर करता है ।

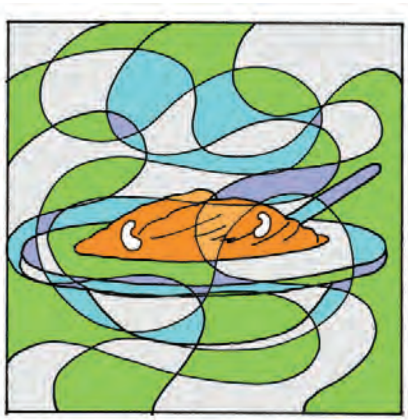

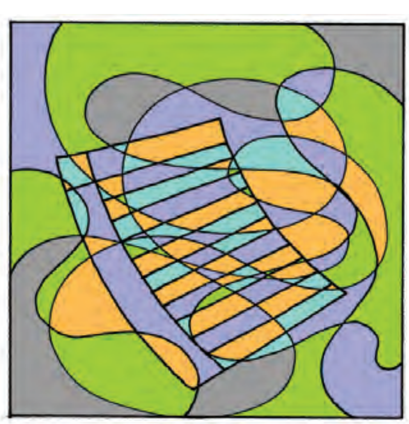

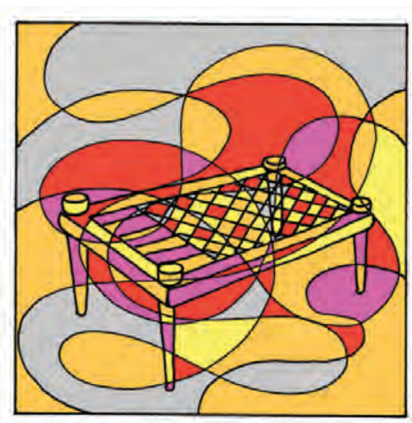

❑ पहेलियों का मुखर और मौन वाचन कराएँ । पाठ की पहेलियाँ बूझने के लिए कहें । प्रत्येक पहेली बूझकर उसका हल चौखट में लिखने के लिए कहें । कक्षा में अन्य पहेलियाँ सुनाएँ और उन्हें बूझने के लिए कहें । विद्यार्थियों से पहेलियों का संग्रह कराएँ ।

● परिसर अभ्यास – पढ़ो, समझो और कृति करो :

८. ज्ञान–विज्ञान

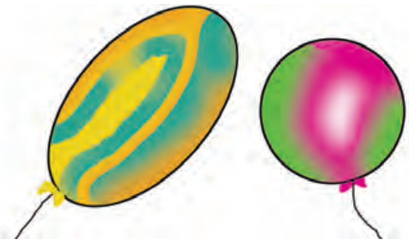

क्या तुम्हें हवा दिखाई देती है ? नहीं न ! सत्य तो यह है कि हवा भूमंडल के हर स्थान पर उपलब्ध है । वह दिखाई नहीं देती पर वायुमंडल की अधिकांश जगह वही घेरती है । विश्वास नहीं होता न ! आओ, एक प्रयोग द्‌वारा इसे समझने का प्रयास करें ।

एक गुब्बारा लो । इसे मुँह से फुलाओ । तुम देखोगे कि गुब्बारे का आकार बढ़ गया है ।

विचार करो– गुब्बारा क्यों फूला, उसका आकार क्यों बढ़ा ? गुब्बारे के फूलने से स्पष्ट होता है कि हवा उसमें भर गई है । इसका अर्थ है कि हवा जगह घेरती है ।

अब गुब्बारे का मुँह खोल दो या गाँठ लगाई है तो उसमें आलपिन चुभाओ । इससे हवा बाहर निकल जाएगी और गुब्बारा फिर से पिचक जाएगा । इसी प्रकार साइकिल की ट्यूब में हवा भरने पर वह फूल जाती है । स्कूटर, मोटरसाइकिल, कार, ट्रक, बस आदि के पहिए भी हवा के दम पर ही चलते हैं । याद रखो; विज्ञान उसी बात को मान्य करता है जिसे प्रयोग द्‌वारा सिद्‌ध किया जा सके ।

❑ पाठ का मुखर और मौन वाचन कराएँ । हवा कहाँ–कहाँ है, प्रश्न पूछें, चर्चा करें । दिए गए चित्रों का वाचन कराएँ । उनपर प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें । उदाहरण देते हुए चर्चा करें और विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करें ।

● पत्र – पढ़ो, समझो और बताओ :

९. पृथ्वी

'धरती', वसुंधरा नगर,
पो. अवनि, जि. ग्रहांचल,
सौरमंडल राज्य १११ १११
दि. २२ अप्रैल २०१४

प्रिय बेटे मानव,

आशीर्वाद । तुम्हारी कुशलता की कामना करती हूँ ।

मेरा जन्म कब और किन परिस्थितियों में हुआ होगा; यह जानने की इच्छा सभी को है । वैज्ञानिकों ने विभिन्न अनुसंधानों द्‍वारा यह पता लगाया कि मेरा जन्म आज से लगभग पाँच खरब वर्ष पूर्व हुआ होगा । वैज्ञानिकों की संकल्पना के अनुसार मेरा प्रारंभ एक दहकते हुए अग्निपिंड के रूप में रहा होगा । मेरा आकार कुछ लंबोतरा है । मैं ध्रुवों पर चपटी और विषुवतरेखा पर उभरी हुई हूँ । मैं बहुत तेज गति से सूर्य के चारों ओर घूमती हूँ । इस गति को 'परिक्रमण' कहते हैं । परिक्रमण के फलस्वरूप विभिन्न ऋतुएँ होती हैं । मेरी एक गति और भी है । उसे 'परिभ्रमण' कहा जाता है । इसमें मैं अपनी धुरी पर घूमती हूँ । परिभ्रमण के कारण ही दिन और रात होते हैं ।

वस्तुतः मैं एक ऐसा अनोखा ग्रह हूँ जिसके अधिकाधिक भाग में जल-ही-जल है । मेरे चारों ओर वायुमंडल है । मेरा तापमान मानव जीवन के लिए अनुकूल एवं पोषक है । मैं हरे-भरे मैदान, विशाल सागर, निरंतर कल-कल करती हुई बहने वाली नदियाँ, बर्फीले पहाड़ और जैव विविधता से भरी हुई हूँ । तुम मेरे सबसे अच्छे बुद्‍धिमान पुत्र हो । लेकिन आज तुम्हारे बढ़ते उपभोक्तावाद, विकास की अंधाधुंध दौड़, अनियंत्रित होते कूड़े-कचरे के अलावा बढ़ते प्रदूषण आदि कारणों से मेरे लिए साँस लेना भी मुश्किल हो रहा है । इसलिए तुम्हें प्रयत्नशील रहना चाहिए कि मैं जीवन के हजारों रंगों के लिए सदा हँसती और खिलखिलाती रहूँ । आखिर मैं रहूँगी तभी तो तुम्हारी साँस चलती रहेगी न !

तुम्हारी माँ

पृथ्वी

– आर. डी. ओझा

❑ विद्‍यार्थियों से पत्र का मुखर वाचन कराएँ । पत्र का प्रारूप समझाएँ । पृथ्वी की उपयोगिता, दिन-रात, ऋतुओं पर चर्चा करें । अपने मित्रों/ सहेलियों, आदरणीयों को पत्रलेखन हेतु विद्‍यार्थियों को प्रोत्साहित करें । अन्य किसी पत्र का वाचन करवाएँ ।

स्वाध्याय

१. **रेगिस्तान के बारे में सुनो ।**

२. **निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर बताओ :**

परिस्थितियों, वैज्ञानिकों, पिंड, नारंगी, गोला, ध्रुवों, रेखा, विविधता, नदी, कूड़े-कचरे, आँखें, बेटे ।

३. **उचित विरामचिह्न लगाकर वाक्यों को पढ़ो :**

इकाई बोली दहाई से सैकड़ा से लड़ोगे सैकड़ा ने पूछा बिन मौत मरोगे हजार को देख सामने सैकड़ा का दम फूल गया लाख से सामना होते ही हजार को साँप सूँघ गया करोड़ आता दीखा तो लाख भाग खड़ा हुआ अरब के सामने करोड़ चारों खाने चित हुआ खरब के आने से हाहाकार मच गया और अरब बर्फ-सा जम गया

४. **उत्तर लिखो :**

(क) पृथ्वी के जन्म के बारे में किसने और कैसे पता लगाया ?
(ख) पृथ्वी का प्रारंभ किस तरह का रहा होगा ?
(ग) परिक्रमण और परिभ्रमण किसे कहते हैं ?
(घ) पत्र में ऊपर दाहिनी तरफ, बाईं तरफ और सबसे नीचे दाईं ओर क्या-क्या लिखा जाता है ?
(ङ) पृथ्वी को साँस लेना क्यों मुश्किल हो रहा है ?

५. **चित्र देखकर नाम बताओ :**

६. **तुम अक्षम/वृद्ध व्यक्तियों की सहायता निम्न में से किस प्रकार कर सकते हो, बताओ :**

(च) बस और रेल में बैठने की जगह देकर ।
(छ) रास्ता पार करने में ।
(ज) सामान लाने/उठाने में ।
(झ) हाथ पकड़कर उठने-बैठने में ।
(ञ) समयानुसार भोजन/पानी पूछकर ।

● चित्रवाचन - देखो, समझो और पढ़ो :

१०. छोटा परिवार

पहली पीढ़ी

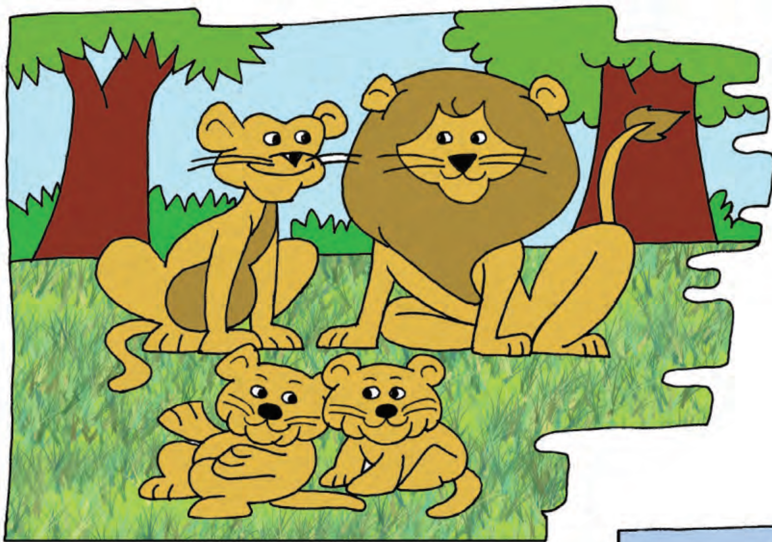

१. एक सुनसान जंगल था । उसमें सिंह और सिंहनी रहते थे । उनके परिवार में दो नन्हे-मुन्ने शावक खेल रहे थे । वे बहुत खुश थे । घर में खुशहाली छाई थी ।

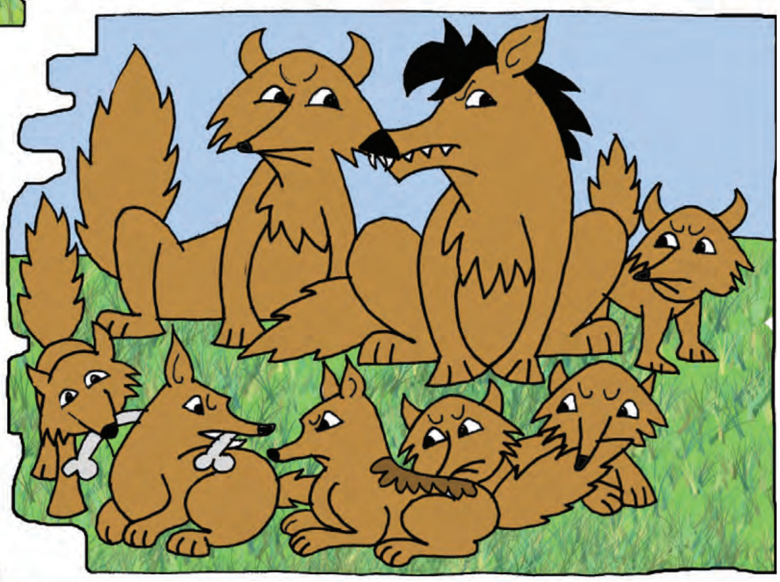

२. इसी जंगल में सियार का जोड़ा भी रहता था । उसके पाँच-छह बच्चे हमेशा आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे । घर पर दुख की परछाई थी ।

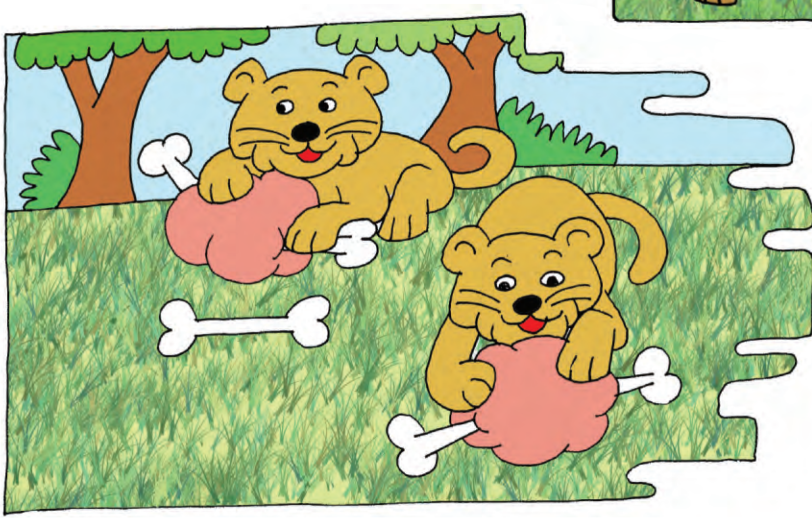

३. सिंह और सिंहनी द्‌वारा लाए हुए भोजन को शावक बड़े प्रेम से खा रहे थे । बहुत प्रसन्न थे ।

❑ विद्‌यार्थियों से पाठ का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । चित्रों का निरीक्षण कराएँ और उनसे पाठ में आए चित्रों पर चर्चा कराएँ ।

४. सियार और सियारिन अपने परिवार के लिए भोजन ले आए किंतु अधिक बच्चे होने के कारण वह उनके लिए पर्याप्त नहीं था । उनमें छीना-झपटी चल रही थी । छोटे कमजोर बच्चे रोते-बिलखते ही रह गए ।

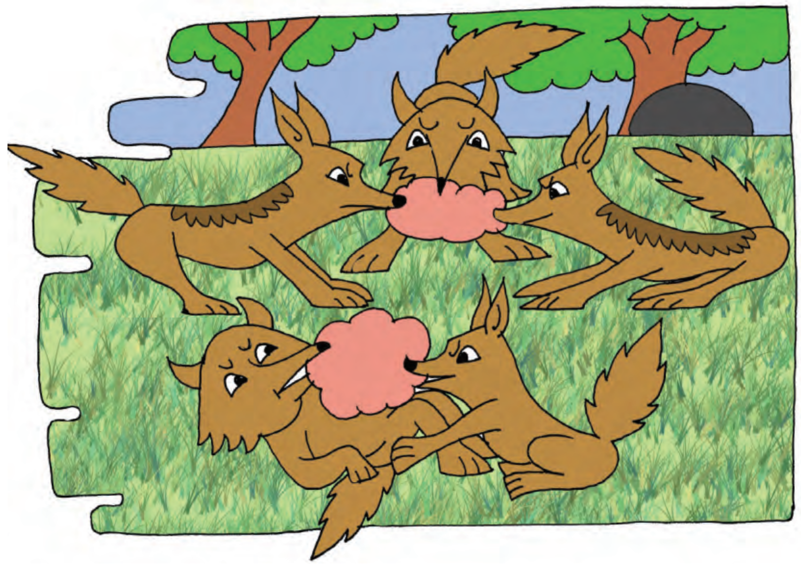

दूसरी पीढ़ी

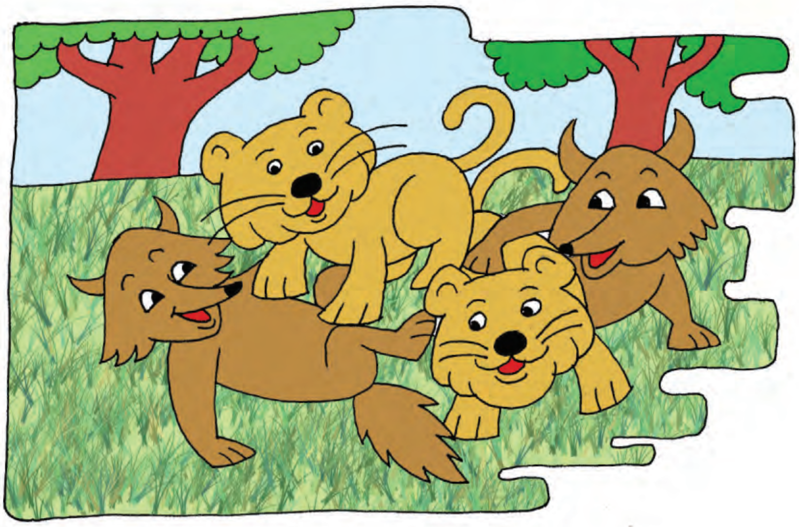

५. सिंहनी : देखो, मेरे परिवार में हम दो ही थे ।

सिंह : हमने भी दो ही छौनों को जन्म दिया है । देखो, सियार के बच्चों के साथ कैसे मजे से खेल रहे हैं ।

६. सियारिन : पहली पीढ़ी का परिवार बड़ा होने के कारण हमारे पूर्वजों को बहुत कष्ट उठाना पड़ा । हम तो अपने दो बच्चों का पालन-पोषण अच्छे ढंग से कर सकेंगे ।

सियार : सचमुच छोटे परिवार में हम बहुत खुश हैं । सिंह के परिवार से अब हमारा मेल-जोल बढ़ गया है ।

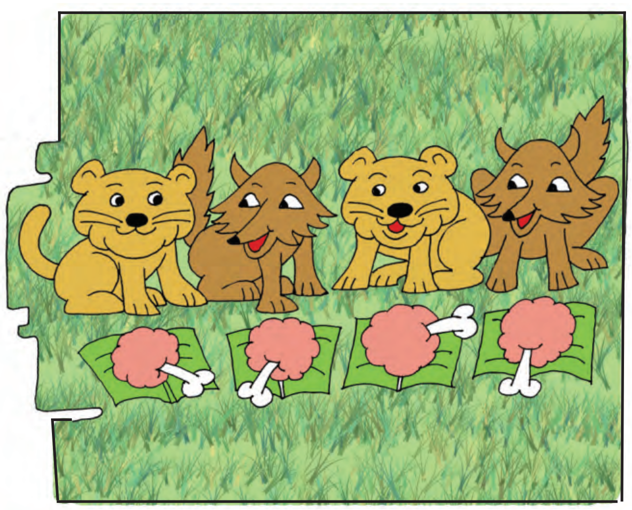

❑ दूसरी पीढ़ी में 'सियार-सियारिन के बच्चे क्यों सुखी थे ।' विद्‌यार्थियों से चर्चा करें । छोटे परिवार की आवश्यकता/महत्त्व समझाएँ ।

● व्यावहारिक सृजन – सांकेतिक चिह्न पढ़ो और समझो :

११. मार्ग

❑ विद्‌यार्थियों से चित्रवाचन करवाएँ । सांकेतिक चिह्नों की पहचान कराके उनके अर्थ, महत्त्व और आवश्यकता पर चर्चा करें । विद्‌यार्थियों को इसी प्रकार के अन्य चिह्नों के चित्र बनाकर उनके बारे में जानकारी बताने के लिए कहें ।

स्वाध्याय

१. **द्‌वीपों के बारे में सुनो ।**

२. **किसी हवाई अड्डे की पढ़ी हुई जानकारी बताओ ।**

३. **सुवचन पढ़ो, समझो और संकलन करो :**

(क) 'निगाहें रखो लक्ष्य पर, कठिन नहीं कोई सफर ।'

(ख) 'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले ।'

(ग) 'संत न छाँड़ई संतई, जे कोटिक मिले असंत ।'

(घ) 'राष्ट्र हमारी गौरव-गरिमा, राष्ट्र हमारी शान ।'

(ङ) 'कथनी-करनी एक समान, तभी मिले सभी से सम्मान ।'

४. **उत्तर लिखो :**

(च) चित्र में कौन-कौन-से धार्मिक स्थलों के सांकेतिक चिह्न आए हैं ?

(छ) सांकेतिक चिह्न में कितने प्रकार के मार्ग आए हैं ?

(ज) चित्र में यातायात के कौन-से सांकेतिक चिह्न आए हैं ?

(झ) हेलीकॉप्टर के उतरने के स्थान को क्या कहते हैं ?

(ञ) भालू और बंदर को पक्की सड़क से पेंग्विन के घर जाना है । बीच रास्ते में क्या-क्या पड़ेगा ?

५. **चित्र पहचानो और उनसे संबंधित एक-एक वाक्य बताओ :**

६. **किसी दर्शनीय स्थल पर पर्यटकों ने अपने नाम लिखे हैं, तुम क्या करोगे, बताओ ।**

* पुनरावर्तन *

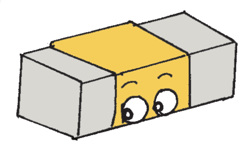

१. सुनी हुई कोई एक जातक कथा सुनाओ ।
२. देखे हुए ऐतिहासिक स्थान के बारे में बताओ ।
३. खेती में हो रहे नए परीक्षणों की जानकारी पढ़ो ।
४. गणितीय आकारों और दिशाओं के दस-दस नाम लिखो ।
५. निम्नलिखित वर्ग पहेली में आड़े, खड़े, तिरछे पंचमाक्षरयुक्त बीस शब्द ढूँढ़कर उन्हें रेखांकित करो ।

कं	धा	डं	ष	चं	टी
ठ	घा	तो	का	अं	दा
रं	सं	च	य	थ	बा
भा	खा	ज	पं	ढ	री
पं	गा	मं	य	छी	नं
प	झं	झा	गुं	फ	न

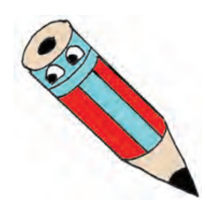

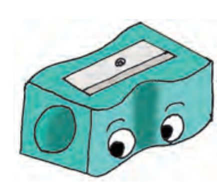

उपक्रम

माँ-पिता जी से सामाजिक प्रेरक-प्रसंगों के बारे में सुनो ।

सामाजिक प्रेरक-प्रसंगों से तुमने क्या-क्या सीखा, बताओ ।

अपने आस-पास लगे विज्ञापनों के शीर्षक पढ़ो ।

अब तक तुम कौन-कौन-से गाँव देख चुके हो; उनके नाम लिखो ।

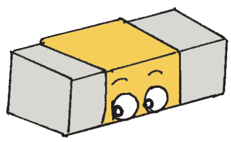

✻ शब्दार्थ ✻

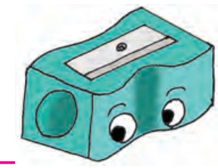

पहली इकाई

४. **जायकवाड़ी बाँध :** परियोजना= प्रकल्प, लंबे समय तक चलने वाली योजना ।

६. **चाँद और धरती :** तात= बेटा; गात= शरीर; मात= माता ।

दूसरी इकाई

२. **सीख :** निसदिन= रातदिन; आफत= संकट; पय= दूध ।

३. **घंटाकरण :** घसियारा= घास काटने वाला; चरवाहा= पशु चराने वाला ।

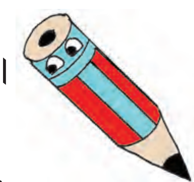

५. **पेटूराम :** थुलथुल= मोटा, स्थूल; मन मसोसकर= इच्छा दबाकर ।

६. **मिठाइयों का सम्मेलन :** चटोरी= जिसे व्यंजन खाने का अत्यधिक चाव हो; अनुपात= प्रमाण; क्षति= हानि; प्रथा= परंपरा, रीति-रिवाज ।

९. **मैं दीपक हूँ :** नक्काशी= पत्थर आदि पर खोदकर बेल-बूटे बनाने की कला; आलोकित= प्रकाशित; आविष्कार= खोज; सौर ऊर्जा= सूर्य की शक्ति ।

तीसरी इकाई

४. **स्वस्थ तन-स्वस्थ मन :** कुपोषित= जिसका पोषण ठीक न हुआ हो ।

६. **नई अंत्याक्षरी :**

अधजल गगरी छलकत जाए= थोड़ा-सा धन/ज्ञान/गुण होने पर बहुत इतराना ।

एक हाथ से ताली नहीं बजती= सफलता के लिए दोनों पक्षों को प्रयास करना पड़ता है ।

तिल का ताड़ बनाना= छोटी-सी बात को बढ़ा चढ़ाकर बताना ।

न घर का न घाट का= न इधर का न उधर का ।

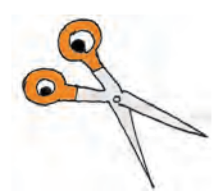

नौ नगद न तेरह उधार= नगद दाम पर बेचना, उधार बेचने से अच्छा है ।

राई का पहाड़ बनाना= छोटी-सी बात को बढ़ा चढ़ाकर कहना ।

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन= पुराना हमेशा उपयोगी होता है ।

नेकी कर कुएँ में डाल= फल की अपेक्षा न करते हुए दूसरे की सहायता करना ।

लातों के भूत बातों से नहीं मानते= दुष्ट को सज्जनता से नहीं समझाया जा सकता ।

तेल देखो, तेल की धार देखो= परिस्थिति अनुरूप व्यवहार करना ।

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है= व्यक्ति अपने साथियों को देखकर पुराना मार्ग छोड़कर नया मार्ग अपनाता है ।

हाथ कंगन को आरसी क्या= प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं ।

यथा राजा तथा प्रजा= जैसा नेता होता है वैसी जनता होती है ।

जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय= जिसकी रक्षा ईश्वर करता है उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।

८. **नन्हीं जादूगरनी :** स्टेन्सिल= अक्षरों का एक तरह का साँचा ।

९. **सच्चा साथी नीम :** रैनबसेरा= रात में विश्राम करने का स्थान; राहगीर= यात्री; चौपाल= चारों ओर से खुली हुई बैठक, बैठने का छायादार स्थान ।

१०. **समुच्चित चित्रकला (कोलाज) :** कीर्तिमान= प्रतियोगिता में स्थापित सर्वोच्च मानदंड; देहावसान= मृत्यु; विगत= पिछला ।

चौथी इकाई

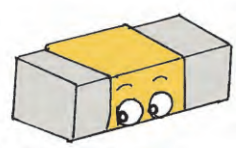

४. **बचत :** अपव्यय= अनावश्यक खर्च, फिजूलखर्च ।

९. **पृथ्वी :** अवनि= धरती; सौरमंडल= सूर्य और उसके चारों ओर घूमने वाले ग्रह; अनुसंधान= शोध; संकल्पना= ठोस विचार; जैव विविधता= विभिन्न प्रकार के जीव ।

१०. **छोटा परिवार :** शावक= प्राणी का बच्चा ।

✻ स्वाध्याय के उत्तर ✻

पहली इकाई

पाठ २, स्वाध्याय-५, पृष्ठ क्र.५ : पोशाकों के नाम ।

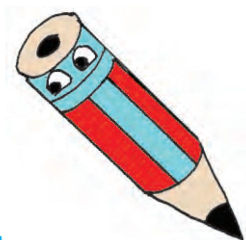

शेरवानी, चूड़ीदार, कुरता-पैजामा, सूट, साड़ी, पैंट-शर्ट ।

पाठ ३, स्वाध्याय-५, पृष्ठ क्र.७ : पक्षियों के नाम ।

बया, हंस, नीलकंठ, काकातुआ, पेंग्विन, सोहनचिड़िया ।

पाठ ४, स्वाध्याय-५, पृष्ठ क्र.९ : पुलों के सुझाए गए नाम ।

रस्सी पुल, लकड़ी पुल, समुद्री पुल, (सी-लिंक), उड़ान पुल, खंभारहित पुल (हावड़ा ब्रिज), झील पुल।

पाठ ९, स्वाध्याय-५, पृष्ठ क्र.१७ : प्राणियों के नाम ।

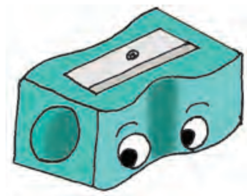

घोड़ा, भैंस, भेड़, एमू, गधा, खरगोश ।

पाठ १०, स्वाध्याय-५, पृष्ठ क्र.१९ : वाद्यों के नाम ।

डफली, डमरू, गिटार, ढोलक, वायलिन, वीणा ।

दूसरी इकाई

पाठ २, स्वाध्याय-५, पृष्ठ क्र.२५ : चित्रों के नाम ।

पुलिस वैन, कचरा गाड़ी, फिरता पुस्तकालय, हेलिकॉप्टर, पानी टैंकर, फिरता अस्पताल ।

पाठ ३, स्वाध्याय-५, पृष्ठ क्र.२७ : अंधविश्वास ।

बिल्ली का रास्ता काटना, साँप काटने पर ओझा बुलाना, बाहर जाते समय किसी का छींकना, पीछे से टोकना, तीन तिगाड़ा, नींबू-मिरची लगाना ।

पाठ ४, स्वाध्याय-५, पृष्ठ क्र.२९ : जलशुद्धीकरण प्रक्रिया ।

फिटकरी घुमाना, छानना, पानी उबालना, औषधी डालना, शुद्धीकरण मशीन, निथारना ।

पाठ ९, स्वाध्याय-५, पृष्ठ क्र.३७ : दीपों के नाम ।

ढिबरी, लालटेन, सीएफएल बल्ब, मोमबत्ती, बल्ब, ट्यूब लाईट, दीपस्तंभ ।

पाठ १०, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.३९ : विज्ञापन से संबंधित ।

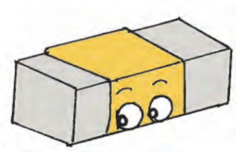

दूध, पेन्सिल, टूथपेस्ट, कंपास, केशतेल, साबुन ।

तीसरी इकाई

पाठ २, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.४५ : अंकुरित दलहनों के नाम ।

मूँग, लोबिया, चना, कुलथी, राजमा, मटर ।

पाठ ३, स्वाध्याय– ५, पृष्ठ क्र.४७ : व्यावहारिक गणितीय आकार ।

एक चौथाई, आधा, पौन, सव्वा, डेढ़, ढाई ।

पाठ ४, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.४९ : उपकरणों के नाम ।

चिपकपट्टी, सिरिंज, थर्मामीटर, आला (स्टेथोस्कोप), दस्ताने, प्रथमोपचार बक्सा ।

पाठ ९, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.५७ : चित्रों के नाम ।

हरी चाय, बेल, पुदीना, अजवाइन, ग्वारपाठा, तुलसी ।

पाठ ११, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.६१ : वाक्य ।

ऊँटगाड़ी, बैलगाड़ी, हाथी की सवारी, घोड़ागाड़ी, स्लेज, घोड़े की सवारी ।

चौथी इकाई

पाठ २, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.६७ : त्योहारों उत्सवों के नाम ।

दहीहंडी, दशहरा, गणेशोत्सव, ईद, गुढ़ीपाडवा, क्रिसमस ।

पाठ ३, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.६९ : खेलों के नाम ।

शतरंज, बैडमिंटन, कैरम, हॉकी, टेबलटेनिस, फुटबॉल ।

पाठ ४, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.७१ : तिलहनों के नाम ।

एरंडी, नारियल, मूँगफली, सरसों, सूरजमुखी, तिल ।

पाठ ९, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र.७९ : चित्रों के नाम ।

एअर मेल (हवाई डाक), अंतर्देशीयपत्र, पोस्टकार्ड, रजिस्ट्री, स्पीडपोस्ट (द्रुतगति डाक), पार्सल ।

पाठ ११, स्वाध्याय–५, पृष्ठ क्र. ८३ : सांकेतिक चिह्न के नाम ।

ट्रैफिक सिग्नल, पाठशाला, रुको, शांतिक्षेत्र, साइकिल मार्ग, पैदल चलने के लिए प्रतिबंध ।

पहली इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. २० का उत्तर :

फल – सेब, केला, अमरूद, अनार, अंगूर, आम, लीची, तरबूज, नारियल ।
फूल – सेवंती, गुलाब, चंपक, चमेली, गेंदा, हरसिंगार, जूही, बेला, जवाकुसुम, कमल ।
रंग – केसरिया, सफेद, नीला, काला, पीला, लाल, बैंगनी, जामुनी, कत्थई, हरा ।
साग–सब्जियाँ – सोआ, घमोया, मेथी, पालक, चौलाई, फूलगोभी, आलू, प्याज, टमाटर, बैंगन ।

दूसरी इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. ४० का उत्तर :

रसोई घर की वस्तुएँ – करछा, कढ़ाई, चम्मच, गिलास, थाली, कटोरी, चकला, बेलन, तवा, छुरी, तसला ।
पंसारी दुकान की वस्तुएँ – गेहूँ, ज्वार, बाजरा, चावल, चनादाल, अरहर, हल्दी, लाल मिर्च, शक्कर, मकई ।
वृक्षों के नाम – नीम, पीपल, बरगद, गुलमोहर, सागौन, पलाश, इमली, बादाम, चंदन, अशोक ।
शरीर के अंगों के नाम – आँख, नाक, कान, हाथ, पैर, उँगलियाँ, घुटना, कुहनी, पीठ, पेट ।

पहली इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. २१ का उत्तर

१ क	म	ल		२ ध	३ न
म			४ प	व	न
५ र	६ क	७ म		८ ल	द
	९ स	न	न		
१० च	र	न		११ न	१२ त
१३ ल	त		१४ ज	ल	ज

दूसरी इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. ४१ का उत्तर

१ न	वी	२ न		३ छ	४ ल
नि		५ म	६ द		बा
७ हा	८ ट		९ बा	द	ल
१० ल	ह	११ रा	ना		ब
	१२ ला	ज		१३ नो	
१४ सो	ना		१५ ना	ट	क

तीसरी इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. ६२ का उत्तर :

मुहावरे – जी चुराना, गिड़गिड़ाना, मुँह में पानी आना, प्राणों की आहुति देना, जुटे रहना, राह देखना, ठहाका लगाना, दाँत दिखाना, आँखें दिखाना, आँखें मटकाना, रंग में रँग जाना, कहर ढाना, होश में आना, मात खाना, आँखें खोलना ।

तीसरी इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. ६३ का उत्तर

१. शक्ति
२. सख्त
३. अग्नि
४. विघ्न
५. अच्छा
६. अज्जू
७. टट्टू
८. गड्ढा
९. सत्य
१०. तथ्य
११. विद्या
१२. अध्याय
१३. गन्ना
१४. बप्पा
१५. गुफ्फार
१६. अब्बा
१७. सभ्य
१८. कुर्ता
१९. ध्यान

चौथी इकाई : पुनरावर्तन – पृष्ठ क्र. ८४ का उत्तर

१. डंका
२. पंखा
३. पंगा
४. कंघा
५. संचय
६. पंछी
७. संजय
८. मंझा
९. अंटी
१०. कंठ
११. पंडा
१२. पंढरी
१३. संतोष
१४. पंथ
१५. चंदा
१६. कंधा
१७. पंप
१८. गुंफन
१९. अंबा
२०. रंभा
२१. झंझा

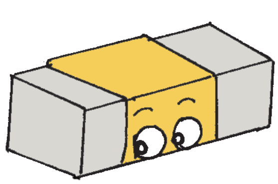
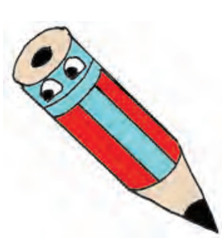
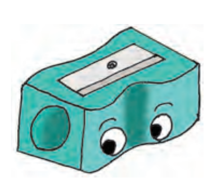

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

बालभारती इयत्ता ४ थी (हिंदी माध्यम)

₹ ३९.००